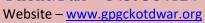


DR. P.D.B.H. GOVERNMENT POST GRADUATE COLLEGE, KOTDWAR, UTTARAKHAND (INDIA), 246149

Near Lisa Depot, Upper kalabarh Phone/Fax – 8439384124



 ${\sf Email-iqackotdwar@gmail.com}$

principal.gpgckotdwar@gmail.com





3.3.2 Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/international conference proceeding per teacher during last five years

Scan copy of Book Chapter, Chapter volume, proceeding paper

2017-18

Ruper in Proceed (2017-18)



संस्कृत वाङ्मय में वर्णित भारतीय संस्कृति एवं कला /269

संस्कृति शाश्वत एवं सनातन है। आत्मतत्व संस्कृति का बीज है। वह बीज समयानुसार पल्लवित और पुष्पित होती है। लौकिक, पारलौकिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, अभ्युदय के अनुकूल आचार विचार, मानव—जीवन शक्ति, साधनाओं की विमल विभूति से विभूषित, राष्ट्रीय आदर्श की गौरवमयी मर्यादा और स्वतन्त्रता की वास्तविक प्रतिष्ठा ही संस्कृति है। संस्कृति भारतभूमि के कण—कण में विद्यमान है। संस्कृति सर्वकाल में सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की निधि है। संस्कृति रूपी भूमि में कला रूपी वृक्ष सुशोभित होते हैं। हमारी संस्कृति सर्वकल्याण कारिणी है—

रामायण कालीन संस्कृति की विशेषता उसकी वर्णव्यवस्था थी। रामायण में चातुर्वर्ण्य का स्पष्ट उल्लेख कर ब्राह्ममण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र को गणित किया है। ब्राह्ममण ने अपने भौतिक उत्कर्ष की लालसा को त्याग कर समाज को सुव्यवस्थित बनाये रखने के उद्देश्य से अध्ययन, अध्यापन, यजन—याजन दान और प्रतिग्रह को ही अपना पुनीत कर्तव्य समझा है। शिक्षण, पौरोहित्य और दानग्रहण ब्राह्ममणों के विशेषाधिकार थे। रामायण के अनुसार—

मुखतो ब्राह्मणा जाता उरसः क्षत्रियारतथाः। उक्तम्यां जिल्लरे वैश्याः पदम्यां शूद्रा इति श्रुतिः।।

गृहस्थ आश्रम जीवन का मेरूदण्ड था क्योंकि अन्य तीनों आश्रम इसी में समाहित थे। गृहस्थ जीवन में पति—पत्नी मिलकर जीवन के महान दायित्व का वहन करते थे।

> आत्मा हि दाराः सर्वेषां दार संग्रह वर्तिनाम्। आत्मेयमिति रामास्य पालयिष्यति नोदिनीम्।।

गृहस्थजीवन का दायित्व पूर्ण कर लेने के पश्चात् वानप्रस्थ आश्रम कुटुम्ब का भार पुत्र को देना चाहिए।

आत्मानं.... नियमैस्तैस्तैः कर्षयित्वा प्रयत्नतः। प्राप्त्यै निपुणैद्यमीं न सुखाल्लमते सुखम्।।

सन्यास आश्रम चतुर्थे आश्रम था। रामायण में भिक्षु और परिव्राजक शब्दों का प्रयोग से सन्यासी का पता चलता है। सीता के सम्मुख रावण जिस रूप में आया है वह सन्यासी का वेश ही है।

> श्लक्ष्णकाषायसंवीत शिखी छत्री उपानही। वामे चांसे वासज्याथ शुमे यष्टिकमण्डलू।।

रूपधारी सन्यासी रावण के कंधे पर डण्डा और कमण्डलु था।

संस्कृति एवं कलाः रामायण के परिप्रेक्ष्य में डॉ. अरुणिमा मिश्रा

वात्मीकि रामायण आदि कवि महार्षि वात्मीकि द्वारा रचित ग्रंथ का नाम सम्पूर्ण संसार में श्रद्धा—सद्भाव के साथ लिया जाता है। वात्मीकि रामायण भारतीय वाङ्मय का सर्वस्व है। यह संस्कृति एवं कला का महनीय और अगाध भण्डारगृह है। इसमें विद्यमान आदर्श मानव मात्र के लिए प्रकाश स्तम है।

चिरकाल से अनुवर्तमान भिन्न-भिन्न जीवन पद्धतियों में जो आदर्शमयी और प्रेरणा प्रवायिनी धारा अक्षुण्ण होती हुई किसी भी देश जाति या वर्ग-विशेष की सामूहिक धरोहर हो वह उस देश, जाति व वर्ग विशेष की संस्कृति है। संस्कृति बीजमूता जो मंत्र दृष्टा ऋषियों की प्रज्ञा है उसका विकास कर्म कौशल कर्षणक्षेत्र में विपत, अंकुरित, पल्लवित और पोषित होता हुआ कल्पतरू तुल्य है संस्कृति का मूल अर्थ प्रज्ञा का सिक्किया में आरोपण है।

सम्यक् प्रकार से सुशोभित कृति अर्थात भूषित कृतियों का क्षेत्र संस्कृति है। सदाचार, सदबुद्धि, सदिवेक आदि मूल तत्व ही संस्कृति को संस्कृत करते हैं।

संस्कृति आत्मिक अभ्युत्थान की प्रदर्शिका है। संस्कृति शब्द संस्कारों की पूर्णता एवं परिपक्वता का वाचक है संस्कृति एक प्रवाहमान धारा है। जिसका हमारे असंख्य ऋषियों मुनियों एवं आचार्यों की हजारों वर्षों की सतत् साधना से समुदभूत तत्वोंकं का सम्यक् मिश्रण है अतः संस्कृति अपने आप से शाश्वत सत्य है। जिसको राष्ट्र की आत्मा के रूप में स्वीकार किया गया है।

संस्कृति संस्कृताश्रिता और संस्कृतं संस्कृतेमूर्लं ज्ञानविज्ञानवारिधिः। वैदतत्वार्थसंजुष्टं लोका-लोककरं शिवम् आदि से स्पष्ट है कि संस्कृति का आधार संस्कृत ही है। किसी भी जाति अथवा राष्ट्रं के शिष्ट पुरुषों में विचार वाणी एक क्रिया का जो रूप मिलता है वही संस्कृति है। International Terromon, Toursmound becommen Helds of the World (ISPN 6"8 N1 199066-8-5)

17-18 (Ant. Journal)

Impact of Terrorism on Hospitality and Tourism Opportunities

Mr. Kamlesh Kumar*, Dr. Richa lain**

Abstract

The very famous dictionary has provided the real meaning for the person who intimidates and does unlawful violence against the civilian as the political arm.

This paper attempts to prove the scope of tourism in India, which can help in shaping of our society and import of terrorism on it. Tourism is considered as one sector that shall propel growth, contribute foreign exchange, enhance employability and resultin community development. The most important dimension of tourism is the cultural exchange among various nationalities that visit the country and the cross cultural interface that shall pave way for universal peace and harmony. As on one hand tourism is seen as an economic option and on the other side the greater social and human effect there is vast scope tourism in India. The government should encourage private enterprives to promote rourism in various less popular areas.

Article 51 of our constitution states that Promotion of International Peace and Security,

The state shall endeavour to -

- Promote international peace and security
- b. Maintain just and honourable relations between nations
- Foster respect for International Law and Treaty obligations in the dealings of organized people with one another, and
- d) Encourage settlement of International dispute by arbitration.

ladia is a best example for this concept of unity in diversity. We can see very clearly here that people of different religions, creeds, castes, languages, cultures, lifestyle, dressing sense, faith in God, rituals of worship, etc live together with harmony under one roof means on one land of India. People living in India are the children of one mother whom we call Mother India. India is a vast and most populated country of the world where people of different religions Hinduism, Buddhism, Islam, Sikhism, Jamistm, Christianity and Parsees live together but everyone believes in one theory of Dharma and Karma. People here are god fearing in nature and believe in purification of soul, rebirth and salvation, luxury of heaven and punishments of hell. People here celebrate their festivals (Hedi. Diwali, Id, Christmas, Good Friday, Mahavir Jayanti, Buddhis Jayanti, etc) very peacefully without harming other religious people.

Keywords: Tourism in India, International Peace and Security, Impact of terrotism.

In India, for instance, the tourism sector contributes about 6.6% to the nation's GDP, and by creating nearly 40 million jobs, it supports 7.7% of the total employment in the country.

India's travel and tourism sector ranks 7th in the world in terms of its total contribution to the country's GDP, according to a new report of the World Travel and Tourism Council (WTTC).

According to data, the travel and tourism sector generated Rs 14.1 trillion (USD208.9 billion) in 2016, which is world's 7th largest in terms of absolute size; the sum is equivalent to 9.6% of India's GDP.

Additionally, the sector created 40.3 million jobs in 2016, which ranks India 2nd in the world in terms of total employment generated. The sector accounts for 9.3% of the country's total jobs.

Tourist Arrivals in India increased to 876000 in October from 723000 in September of 2017. Tourist Arrivals in India averaged 447399.46 from 2000 until 2017, reaching an all time high of 1037000 in December of 2016 and a record low of 129286 in May of 2001.

MEDICAL TOURISM

It is one of the fastest growing segments in India. India has been able to leverage on certain advantages it has over other countries like highly skilled doctors, cost effective treatment, improved quality of private healthcare etc. Some of the common treatments for, which overseas patients to come to India are heart surgery, knee transplant, cosmetic surgery and denial care.

ECO TOURISM

It is relatively new segment in India. It involves visiting natural areas without disturbing the fragile ecosystem. Eco tourism generates wealth for the local people, who in turn take measures to conserve and protect the environment and natural resources. India with its natural diversity is one of the pristine places in the world for eco tourism.

Heritage Tourism

Heritage tourism is a very lucrative segment in India. It is widely believed it would emerge as the most important segment within tourism in terms of revenue generation by 2010. India has a rich cultural history and reflection of its glorious past is still visible in its numerous forts, monuments, palaces, places of worship etc. Heritage tourism itself can be further classified as colonial heritage, urban renewal, religious tourism, industrial heritage and ethnicity.

Causes of Terrorism

There are many causes, or we can say reasons behind terrorism, but the most important are an injustice, mental illness, poverty, illiteracy, and rise in population. Most of the people believe that religion is also the cause of terrorism, but I don't agree with that because there is not any single religion in the world which promotes terrorism. Every single religion laid importance on peace and the safety

Introduction

^{**} Assistant Professor, Department of Commerce, Mohammad Ali Jauhar University, Rampur (U.P.)

** Assistant Professor, Department of Commerce, Govt. PG. College, Kotelyara (Utrarakhand)

(2017-18) Rotager Chapt. In Ed. Book

19

नई मीडिया और महिला

डॉ0 सुरेखा घिल्डियाल

भारत में महिलाओं की स्थिति ने पिछली कुछ सिदयों में कई बड़े बदलावों का सामना किया है। समाज में लैंगिक समानता का सवाल हो या उनके विभिन्न जगह पर प्रतिनिधित्व का मुद्दा हमेशा से उठता रहा है। मीडिया के जिए भी यह मुद्दा प्रमुखता से उठाया जाता रहा है। लेकिन खुद मीडिया में लैंगिक समानता किस हद तक है इसे समझने की जरूरत है। लैंगिक समानता या मीडिया में मिहिला प्रतिनिधित्व का सवाल इसलिए भी अहम हैं क्योंकि हम महिलाओं के मुद्दे को मीडिया के जिए आधे—अधूरे ही समझ पाते हैं। मीडिया भी महिला मुद्दों को ठीक से समझने और समझाने में नाकाम रहती है और इस कारण आधी आवादी की आवाज दब कर रह जाती है।

यूनेस्कों ने मीडिया में महिला की हैसियत पर एक रिपोर्ट जारी किया है। जिसके अनुसार निर्णय लेने वाले पदों में महिलाओं की भागीदारी केवल 24 प्रतिशत है। मीडिया में महिला भागीदारी का सवाल आंकड़ों से ज्यादा उनको किस रूप में पेश किया जाता है उससे है। पुरूष प्रधान समाज की महिलाओं के प्रति संकीर्ण सोच के कारण महिलाओं को कभी कमजोर नारी या कभी ऑब्जेक्ट के रूप में पेश करती है। तमाम दूर संचार माध्यमों में महिलाओं को इस कदर दिखाया गया जिससे उनकी छिव इंससान के तौर पर कम एक वस्तु के रूप में ज्यादा आकर्षित दिखती है, जिसे पहले से ही 'पितृसत्तात्मक भारतीय समाज' महिलाओं के लिए विषम बनाता है। महिलाओं के संवेदनशील मुद्दे और उनकी आवाज को कमजोर करके दिखाया जाता है।

यहरहाल, मीडिया आधी आव दिखा सके। महिल सवाल अहम है जा

मीडिया ने
मानवीयता, तो कई
उसकी भूमिका सर
आम तौर पर सभ
खबर ही क्यों न न
सवाल खड़े किए
अधिकारों की लड़ा
मीडिया लड़ाई के
कविता हत्याकांड,
जा रहे अत्याचारो
ज्यादातर को तूल
व्यक्तियों या विवार
उसका कोई भी र
ओरिएंटेड ही रहा

महिलाओं स्तर पर चिंता व्य चढाए गए हैं। दे मीडिया, रेडियों, टे में सुधार लाने की रखा और महिलाउ नहीं दिखें। आज है कि यह एक संभावना काफी हव

नई मीडि की आजादी को र ऐसा संचार है जिस (Mont in sd. Book (2012-18)

Inn transienal Terrorism, Tourism and Leonomic Helift of the World (ISBN 928-81-91065-

Impact of Terrorism on Travel and Tourism Industry

Neha Chauhan Gaur*, Dr. Amit Kumar**

ABSTRACT

Mattudevo bhaya, pitrudevo bhaya, acharyadevo bhaya, atithidevo bhaya,

It literally means, 'Be one for whom the mother is god, be one for whom the father is god, be one for whom the teacher is god, be one for whom the guest is god. The guest is equivalent to god is taken from an ancient hindu scripture which became part of the "code of conduct" for hindu society. Atithi devo bhava prescribes a dynamic of the host guest relationship. Recently it has also become the tag line of India's ministry of tourism campaign to improve the treatment of tourists in India. Tourism is a critical source of revenue generation and therefore a major component of economic development, a relationship that rewards states when positive conditions such as a strong global economy exist. But what happens when negative conditions exist, such as terrorisms. The impact of terrorism on a state's economy may be enormous, leading to unemployment, homelessness, deflation, crime and other economic and social ills. "The contribution of tourism and travel to both industrialized and developing countries is now so great that any downturns in the level of activity in the industry are a cause of concern. The repercussions extend beyond activities directly associated with tourism, notably airlines, hotels and catering, to sectors that supply intermediate or final goods that are purchased by firms and employees in the industry, so that all sectors of the economy are affected to a greater or lesser extent.

Keywords: Tourism, terrorism, deflation, social ills, violence.

TRODUCTION

sone of the popular tourist destinations in Asia. India attracts millions of tourists each year, that brought about a revolution in every sphere of life. It has given business (whether big or an equal opportunity to expand by reaching out to a wide range of customers throughout the By increasing this world wide exposure, it has raised the competitive in providing new and better to the customers. Extourism describes a new way of doing business. It communicates faster aces global markets with minimum costs for new businesses. Tourism as an industry, has a wide our economy. Travel and tourism is one of the world's largest and fastest growing industries. It considering the size of the industry. Tourism is a major engine of economic growth and an maint source of foreign exchange earnings in many countries including India. It has great capacity take large scale employment of diverse kind-from the most specialized to the unskilled and hence any a major role in creation of additional employment opportunities. It can also play an important

^{. 3-}h scholar, Govt. (PG) College Kotdwar, Uttarakhand - Prof Govt. (PG) College Kotdwar, Uttarakhand

2 chapt inted (2017-11)

Board of Studies

Prof. R.K.Pandey

Head ,Department of Geography

DSB Campus, Nainital

Dr. D.S.Rawat

Senior Scientist, GB Pant Institute of

Himalayan Environment and Development

Kosi-Katarmal, Almora

Dr. H.C.Joshi

Department of Environmental Science

School of Sciences

Uttarakhand Open University, Haldwani

Haldwani

Dr. B.R.Pant

Head, Department of Geography

MBPG College, Haldwani

Prof. Anita Pande

Department of Geography

DSB Campus, Nainital

Dr. Ranju J. Pandey Department of Geography

School of Sciences

Uttarakhand Open University,

Programme Coordinators

Dr. Ranju J.Pandey

Department of Geography

School of Science

Uttarakhand Open University

Haldwani, Nainital

University

Mr. Mohd. Akram

Assistant Professor

Department of Geography

School of Science

Uttarakhand Open

Haldwani, Nainital

Unit No.

Unit Written By: 1. Dr. S.C.Bansal

Retd.Professor

Meera Villa, D.S.O.Compound

Court Road, Saharanpur

Saharanpur-247001

2. Dr.Lata Kaira

Astt. Professor

Department Of Geography

PDB Gov. Degree College

Kotdwar

3. Dr. M.L.Meena

Astt.Professor

Deptt. of Geography

Faculty of Sciences

BHU Varanasi-221005

4. Dr. Suman Singh

Deptt. Of Geography

Faculty of Sciences

BHU Varanasi-221005

5&7

1, 2, 3&4

8&9

Self Attestion

Page - 4 -of 433

Geography of India

4 chapt. 148d Book. (2017-18 Ultarakhand Open University

Delhi Auchandi Road, Bawana, Delhi-110039

4.Dr.LataKaira

Assistant Professor

Department Of Geography

PDB Gov. Degree College, Kotdwar

5.Dr. Geeta Rawat

Assistant Professor

SGRRPG College

Dehradun

6. Dr. Anil Pal

AssociateProfessor

Deptt. of Geography

D.B.S. (P.G.) College

Dehradun

7. Dr. Krishna Kumar

Assistant Professor

Department of Geography

Shaheed Bhagat Singh (Eve.) College

University of Delhi

New Delhi-110017

5, 6, 9&10

7828

11, 12, 13& 14

16

Course Editors:

Dr. Ranju J.Pandey

Department of Geography

School of Sciences

Uttarakhand Open University

Haldwani, Nainital

Mr. Mohd.Akram

Assistant Professor

Department of Geography

Uttarakhand Open University

Haldwani, Nainital

Title

Fundamentals of Physical Geography

ISBN No.

978-93-857-40-61-9

Copyright

Uttarakhand Open University

Edition

First (2017)

Published By: Uttarakhand Open University, Haldwani, Nainital-263139

Printed By: UttarayanPrakashan, Haldwani

CONTENTS

Physical Geography

Self Attuded

Page 5 of Page 336

Board of Studies and Programme Coordinator

Board of Studies

Prof. B.D. Joshi

Retd.Prof. Department of Zoology Gurukul Kangri University Haridwar

Dr.N.N.Pandey

Principal Scientist. Directorate of Coldwater Fisheries Research (ICAR) Bhimtal (Nainital).

Dr. Shyam S.Kunjwal

Department of Zoology School of Sciences, Uttarakhand Open University

Programme Coordinator

Dr. Shyam S.Kunjwal Department of Zoology School of Sciences, Uttarakhand Open University Haldwani, Nainital

Prof. H.C.S.Bisht

Department of Zoology DSB Campus, Kumaun University. Nainital

Prof. H.C.Tiwari

Retd. Prof. & Principal Department of Zoology. MB Govt.PG College Haldwani Nainital.

Unit writing and Editing

Editor

Dr. Mahesh Kumar

Department of Zoology MB Govt.PG College Haldwani (Kumaun University Nainital) Uttarakhand (India).

Writer

Dr. Suneeta Negi Associate Professor Department of Zoology

Govt.PG College Kotdwar (HNB Garhwal)University

Dr.Shyam S.Kunjwal

Department of Zoology School of Sciences Uttarakhand Open University Haldwani (Nainital)

Dr.Poonam Tripathi **Assistant Professor**

Department of Zoology MB Govt.PG College Haldwani (Kumaun University Nainital) Uttarakhand (India).

2017-2018 (M)

एनीमिया (रक्त अल्पता) के प्रति महिलाओं की जागरुकता का अध्ययन

(भोटिया जनजाति की महिलाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन)

डा० सरिता चौहान, असि०प्रोफेसर,

गृह विज्ञान विभाग,

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय.

गोपेश्वर (चमोली)

"किसी राष्ट्र की महिलाओं की हालत देखकर उस राष्ट्र की स्थिति बतायी जा सकती "

– जवाहर लाल नेहरू

एक स्वस्थ महिला ही अपने परिवार की देखमाल व पोषण संबंधी विविध आवश्यकताओं को सुचारू रूप से परिपूर्ण करती हुई परिवार के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। स्वस्थ महिला ही स्वस्थ व हस्ट—पुष्ट संतान को जन्म देकर उसके ऋण—पोषण की समुचित व्यवस्था करते हुए स्वस्थ भावी युवा पीढ़ी का निर्माण करती है जो समाज व देश के भावी 'कर्णधार' होते हैं। एक स्वस्थ महिला ही इन सब दायित्वों को निर्वहन सफलतापूर्वक करते हुए परिवार समाज व देश के विकास की राह को सरल व सुगम बनाती हैं। एक स्वस्थ, सभ्य व सुसंस्कृत राष्ट्र के निर्माण में महिलााओं के स्वास्थ्य की अहम भूमिका होती है।

अतः भोजन एवं आहार ऐता होना चाहिए जिनमें स्वस्थ रहने के लिए सभी पौष्टिक पदार्थ विद्यमान हो। पौष्टिक भोजन शरीर की वृद्धि करने एनीमिन (रक्त अल्पता) के प्रति महि जनकी क्षतिपूर्ति करने एव आवश्यकताओं की पूर्ति जन शिशु से लेकर वृद्ध व्यक्ति व होता है।

विकासशील एवं अल्प ह जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हा पर्यावरण, आर्थिक विकास, प्रभावित होता है एवं निरः स्वास्थ्य महिलाओं में रक्त है

रक्तहीनता अत्यन्त ही है। विकासशील देशों में तो, हुई है। गर्भवती और स्तनपान से इस रोग के शिकार हो ज कमी, अपच जैसे लक्षणों को हो जाती है। लोहे की व 'हाइपोक्रोमिक' एनीमिया क आकार का होना है। यह एसे होती हैं। विटामिन 'बी' एका एनीमिया हो जाता है।

रक्तहीनता से ग्रस्त व्य यह अत्यन्त आवश्यक है वि सम्बन्ध है। पर्याप्त मात्रा में को बनाये रखे।

अध्ययन के उद्देश्य -

प्रस्तुत अध्ययन का प्र रक्त अल्पता के प्रति जागर स्रोतों एवं सामान्य अवलोक में बाधक तथ्यों की पहचान 2617.12 Referen

SELF CONFIDENCE: A PREREQUISITE FOR ATTAINING ACADEMIC ACHIEVEMENT AMONG STUDENTS

Swati Negi R.S. Chauhan

ABSTRACT

The personality pattern is a unified multidimensional structure in which the concept of self is the core of centre of gravity. Into this structure are integrated many patterns of response tendencies, known as traits which are closely related to and influenced by the concept of self. Self. confidence is one such personality trait. The self is a composite of a person's thoughts and feelings, strivings and hopes, fears and fantasies. his view of what he is, what he has been, what he might become, and his attitude, pertaining of his worth. Self-Confidence is a positive attitude of one self towards one's self-concept. It is an attribute of perceived self.

Academic achievement is held in high esteem in all cultures and is universal. Academic achievement of students is also influenced by a number of personal and situation variables. In most educational institutions academic achievement continues to be one of the most important attributes. The present paper explores the influence of selfconfidence of male and female students on their academic achievement in this region of Garhwal Himalayas. The paper also compares the above two parameters of male and female students studying in various schools of secondary education. Particularly, this paper reviews the impact of gender of students in different institutions on their self confidence and academic achievement if any.

Key Words: Self confidence, Academic Achievement, Government school, Aided school, etc.

INTRODUCTION:-

Educationists strive developing the intellectual potential of the students make efforts to see their potentials whether they are fully utilized

Title to box (2013-18) 12 els 1/2 to the box

SELF CONFIDENCE: A PREREQUISITE FOR ATTAINING ACADEMIC ACHIEVEMENT AMONG STUDENTS

Swati Negi R.S. Chauhan

ABSTRACT

The personality pattern is a unified multidimensional structure in which the concept of self is the core of centre of gravity. Into this structure are integrated many patterns of response tendencies, known as trains which are closely related to and influenced by the concept of self. Selfconfidence is one such personality trait. The self is a composite of a person's thoughts and feelings, strivings and hopes, fears and fantasies. his view of what he is, what he has been, what he might become, and his attitude, pertaining of his worth. Self-Confidence is a positive attitude of one self towards one's self-concept. It is an attribute of perceived self.

Academic achievement is held in high esteem in all cultures and is universal. Academic achievement of students is also influenced by 2 number of personal and situation variables. In most educational institutions academic achievement continues to be one of the most important attributes. The present paper explores the influence of selfconfidence of male and female students on their academic achievement in this region of Garhwal Himalayas. The paper also compares the above two parameters of male and female students studying in various schools of secondary education. Particularly, this paper reviews the impact of secondary education. gender of students in different institutions on their self confidence and academic achievement if any.

Key Words: Self confidence, Academic Achievement, Government school, Aided school, etc.

INTRODUCTION:-

Educationists strive developing the intellectual potential of the dents make efforts to an all potential of the students make efforts to see their potentials whether they are fully utilized

Scanned with CamScanner

Chapt in Ed Book (2012-18)

ISBN - 978-81-933387-7-3

आर्थिक विकास पर आय असमानता के प्रभाव का आकलनः भारतीय राज्यों के विभिन्न वर्गों के लिए

डॉ. प्रेम नारायण यादव एसोसिएट प्रोफेसर – अर्थशास्त्र, रा.स्ना. महाविद्यालय कोटद्वार, गढवाल

सार – वेतन पक्षपात के बीच संबंध का तरीका इसके अलावा, वित्तीय विकास, साइमन कुज़नेट्स द्वारा औपचारिक रूप से शुरू करने के लिए 1950 पर, आम तौर पर नागरिक तर्क के एक बड़े हिस्से के तहत गिरने की जरूरत है। वर्तमान में, इस एसोसिएशन की व्यक्ति समझ वह है जिसे ओडेड गैलोर ने श्आधुनिक परिप्रेक्ष्यश के रूप में जाना जाता है, जो बजटीय विकास के साथ धन पक्षपात से कार्य-कारण का दावा करने से असर की ओर इशारा करता है, यह दावा करता है कि पिछला आखिरी पर पूरी तरह से नकारात्मक प्रभाव डालता है। . भारत पर दावा करने के संबंध में उन्हीं का पता लगाना चाहिए, बाद में, यह चिंतन उन औसत क्रॉस-कंट्री कार्यप्रणाली को अपनाता है, जो इस क्षेत्र में अन्य जांचों की ओर ले जाती हैं, भारतीय राज्यों के एक क्रॉस-सेगमेंट पर पहले बताए गए जुड़ाव के तरीके का अनुमान लगाती हैं। परिणाम, हालांकि, श्आधुनिक परिप्रेक्ष्यश के निराशाजनक रूप से विपरीत, भारतीय राज्यों की विकास दर पर पूर्वाग्रह का दावा करने से उपस्थिति के एक ठोस उल्लेखनीय निश्चित प्रभाव का संकेत देते हैं, जो कि, किसी भी चीज पर, सांख्यिकीय रूप से उन उपस्थिति को बीच में एक्सचेंज-ऑफ का दावा करने का दावा करता है। दोनों के।

कीवर्ड— आर्थिक विकास, आय असमानता, आधुनिक विकास सिद्धांत, पुनर्वितरण नीतियां, क्रॉस—सेक्शन ग्रोथ रिग्रेशन।

Chapter Book





ALGEBRA

As per UGC Curriculum / Choice Based Credit System (CBCS)

Dr. U. S. Rana Dr. Ashok Kuma Dr. Yogʻta

40817

2016-17

8606

FL anand

AIGERA

As per UGC Curriculum
Choice Based Credit System (CBCS)

Dr. U. S. Rana
Dr. Ashok Kumar
Dr. Pradeep Kothiyal
Dr. Yogita

http://www.htmail/morik-cd720c2adx+v 1 sump Year 2016 1 365 Tiler : Akok Bariyar, D.S. Negi & Abhishek Goel Kk Details 248 Rs. 275 I . NOW 18 B.SC. CHEMISTRY III otle: 1032 .'F utilishing Year: 2017 1 ige: 356 Viriler: Alok Bariyar, D.S. Negi & Abhishek Goel Lick Details 13.176 Rs. 195 Hly LIJY NOW **IBBSC. CHEMISTRY-I** 1.xle: 866 Lubishing Year: 2017 1 age: 328 Inler: Alok Bariyar, D.S. Negi & Abhishek Goel Hook Details 11s.243 Rs. 270 HITY **HUY NOW** CHEMICAL ENERGETICS, EQUILIBRIA & FUNCTIONAL GROUP ORGANIC CHEMISTRY I GARHWAL

· TBCS (H)

(ade: 1016 l'ublishing Year : 2016

! aye: 400

riler Sudha Goel, D.S. Negi & Abhishek Goel

Back Details

15 248 Rs. 275 City

אסא זיניוו

B B SC. CHEMISTRY III (GARHWAL CBCS)

.o:le: 1033 lishing Year : 2017 برادالاد

livriler: Sudha Gyal, D.S. Negi & Abhishek Goel

About Us Return Policy Terms and Conditions FAQ's Contact Us Copyright 2010-2019 Krishna Prakashan. All About Us Return Policy Terms and Conditions Pvt. Ltd. About Us Reserved. Service Provider Dextrous Infosolutions Pvt. Ltd.,

Abhi shek Abhishek Goel Asst. Prof. (Chem.) G.P.G.C., Kotdwar.

CamCcanner

Richa Jain विष्णिति के लिए

PRINCIPLES OF MARKETING



साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा

बी.ए. (प्रोग्राम) हिंदी सेमेस्टर - 5

डॉ. शोभा रावत

(डी.फिल., नेट, यू. सेट)

असिस्टेन्ट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

Book

अंकित प्रकाणन

चन्द्रावती कालांनी

पीलीकोठी, इस्द्वानी-263139

द्राभाष : 05946-262899 मोबाइल : 09412085962

फैक्म : 05946-284292

Email: ankitprakashan@gmail.com

> **ं** लखक सर्वात्र १९६३ ८०

लोक माहित्य (SBN 978.81 Tele-

1 1 string Year 12018

1 (11:308

1 dies : Akok Bariyar, D.S. Negi & Abhishek Goel

Lock Details

1 s.248 Rs. 275

· . . . y

I.II. NOM

15 B.SC. CHEMISTRY III

1 mle: 1032

.'F ablishing Year: 2017

1 ige: 356

Utiler: Alok Bariyar, D.S. Negi & Abhishek Goel

I ick Details

1 s. 176 Rs. 195

Hly

MON ,(fill

13 B SC. CHEMISTRY-I

1.xle: 866

Luluishing Year: 2017

1 age: 328

Inler: Alok Bariyar, D.S. Negi & Abhishek Goel

Hook Details

11s.243 Rs. 270

Hry

MON JUIL

HEMICAL ENERGETICS, EQUILIBRIA & FUNCTIONAL GROUP ORGANIC CHEMISTRY I GARHWAL

· (BCS (H)

(ade: 1016

Lublishing Year: 2016

riler: Sudha Goel, D.S. Negi & Abhishek Goel

Book Details

13 248 Rs. 275

1.115

MON L'LII

E I3 SC. CHEMISTRY III (GARHWAL CBCS)

o:le: 1033

Hullishing Year: 2017

age: 400

hiller: Sudha Gyal, D.S. Negi & Abhishek Goel

About Us Return Policy Terms and Conditions FAQ's Contact Us Copyright 2010-2019 Krishna Prakashan, All Rights Reserved Service Provider Dextrous Infosolutions Pvt. Ltd..

Abhishek Goel Asst. Prof. (Chem.) G.P.G.C., Kotdwar.

THE PART OF THE PRINCE OF THE PRINCE OF THE PARTY OF THE

NUT BY ON रिट्टार (उत्तराखण्ड)

121

कालिदास और उनके ग्रन्थ संस्कृत के कार्य विकास त्रव्यकाच्य तथा नाटक आबाल वृद्धों को झाल है। और यह व प्रवचन की परिसमाधित भी उन्हीं के ग्रन्थों को तीक क्षेत्र के ग्राम के ग्राम के ग्राम के ग्राम के ग्राम के ग्राम को हटा दिका जाये तो उसमे अन्य अनेक महत्वपूर्णग्रन्था व राज्य का वा वा वा वा जावेगी। कातिदास ने अपने पन्थों में नारी को भिन्न किन के विकास के किन के अधिकित है कही वह प्रकृति के रूप में पतिगृह जाता शाहर है है है है है है है है क्रातिदास के ग्रन्थों में वर्णित नारी के विभिन्न क्रियों का वा त्पुर्वश

पृथ्वी अमूत्य रत्नो से मरी पृथ्वी को समुद्र वार्थ और नार का है। एक ए वमुना समुद की पत्नी कही जाती है गगा जी के तटी पर करने किया है। है (त्यु0 1.31; 1.49; 1.53; 4:25)। सन्द्रमा की पुनि : हा कि सार कार कार कार

स्मारसंभव

कालिदास के आराध्य देव शिव जगत के स्वामी है। जाक ज़िर पर एक का ताल दें हैं है 12.10) उनकी पहली पत्नी सती अग्निकुड में भरम हो गयी थी के महरा (53) तत्पश्चात मानः सते । हा नाम हिमालय के घर में जन्म लिया (कुमार 1,21य 25) पार्वनी द्वार के हैं। हो पति स्टां म पत्ने क रहता (कुमार समव पचम सन) आखिरकार उनके तप से शिवजी दराव मानामा १ १६० जी सामाना माना हुआ। पार्वती जिन्हें अम्बिका भी कहा जाता है. विवाह के प्राप्त के निर्मा के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्थ के शाप के कारण अन्ति का रूप बिगंड गया और वो पवित्र कि ने संस्थानमूह मध्य लगा है है है है हिमालय से निकलती है. समुद्र में जाकर मिलती हैं (कुमार 8. ६ - बहु रहें से आकर देउ एक का उन्ह करती है (कुमार0 7,42) वे शकर जी की ही जलमंत्री मुलि है ... 10 10 26, 28 11 11 16 17 50 ... सप्त ऋषियों का भी कुमार सभव में वर्णन है (कुमार0 6.4

अभिज्ञान शाकुन्तलम

इन्द्र ऋषि मरीचि और देवी अदिति के पुत्र है अभिक हाथों में पड़कर बड़े वड़े वैरागी ऋषि भी नहीं छूट पात ह तपस्याओं से भयभीत होकर तप में बाधा डालने के लिय भेज हैं जिल्ह प्रदान अकर उन पर उ होने के साथ-साथ अन्य और शक्तिया भी होती हैं (अभि० छन्। विकास का वितास का विकास का वि

Scan copy of Book Chapter, Chapter volume, proceeding paper

2018-19

ISBN: 978-81-942288-0-6

HOLISTIC APPROACH TOWARDS OUALITY EN HANCEMENT IN HIGHER EDUCATION

Editor - Dr. Sumita Srivastava



Pt. L.M.S. Government Post Graduate College

Rishikesh (Autonomous College) Dehradun, Uttarakhand -249201

उत्तराखण्ड का सामाजिक एव सांस्कृतिक स्वरूप : एक ऐतिहासिक अवलोकन

Trocketing reger (2010 17)

इकि संबंध सम्बद्ध

स्वत प्रध्यापम इतिहास वेद्याः राज्यस्थातिम विभागानीयोगः प्रणानायोगः

भागा वाचन ने नाता निकासना क्रम निवासना का निवासना का स्थान क्षेत्र निवासना का स्थान क्षेत्र निवासना का स्थान क्षेत्र का नाता का स्थान क्षेत्र का स्थान क्षेत्र का स्थान क्षेत्र का स्थान का स्थ

पुराणों में उनस्परकार के पहला मानाम को केसारकार एवं कुमाई के मानमाणा के पाम में कामा जाता है। जिसामार को सक्की किसीमा एवं समूद है। माममीर को एट भारती का स्वर्ग का जात है जो अनुसरकार विभानक को महन्त भी कुछ कम नहां है आरोगमान के इसे एक भूमि के नाम में आना काम है। वस्तुन में मंग एवं विभागक को बाल की प्राचन है। है।

कीमानी, मुन्न-पूर्ण पूर्णांपणी विनय जनात को तभी मन्दी मुसंबर नगरी नेपोल्सन कीमानी, मुन्न-पूर्ण पूर्णांपणी विनय जनात जनातीन तेमकुणा पालान मुननाव्य भर्मनगरी स्थितिक अभिवाद स्थान पाल जनातीन के बार धाम यम्त्राची संगादी कार्यास्त्राख एक बसीनाव्य स्थान की विनय जनात जनात के वित्र पाल धामिक नगर है पाली देव भूमि प्राचीन मन्तापणी की गार्थिक के वर्णांन समान में सार्थ मुसंबर्ध के बसेनान समान में सार्थ मे

Chapt. in Ed Box 2018-19)

ISBN No- 978-93-87739-29-1

भारतीय अर्थव्यवस्था में शिक्षा और स्वास्थ्य देखमाल पर सार्वजनिक खर्च का प्रभाव

 डॉ. प्रेम नारायण यादव एसोसिएट प्रोफेसर – अर्थशास्त्र, रा. रना. महाविद्यालय कोटद्वार, गढवाल

सार - वे प्रदर्शन हाल के तीन दशकों में भारत के बारे में उन भयानक डाउन होम आइटम (जीडीपी) को आगे बढ़ाने के संबंध में प्रशिक्षण और स्वास्थ्य भागों का उपयोग करके प्रशासन के उन हिस्सों का विश्लेषण करने के प्रयासों पर विचार करते हैं। जोहानसन के सह जॉइनिंग टेस्ट ने उन लोगों की उपस्थिति की पृष्टि की, जिन्होंने समन्वयक कनेक्शन का दावा किया था। एक बार जीडीपी का उपयोग करने वाले मानव सेवाओं के . निर्देश के बारे में कारण प्रभाव का चिंतन में और निरीक्षण किया जा सकता है। मूल्यांकन किए गए वेक्टर ऑटो रिलैप्स (वीएआर) मॉडल के परिणाम ने संकेत दिया कि सरकार द्वारा वित्त पोषित निवेश निर्देश को देखते हुए इसके अलावा मानव सेवाओं के संबंध में निवेश करने वाली सामान्य आबादी जीडीपी के लिए किसी भी प्रभाव को धक्का देने में सक्षम नहीं है। इसके विपरीत, यह पता चलेगा कि दो-अवधि के अंतराल वाले जीडीपी ग्रेंजर ने स्वास्थ्य जागरूकता को आगे बढ़ाते हुए विधायिका का निर्माण किया। उन अंतर क्षय परीक्षा से पता चलता है कि भारत में, मानव सेवा निवेश का उपयोग करके प्रशिक्षण व्यावहारिक रूप से 3 प्रतिशत 15 प्रतिशत अलग से मदद कर सकता है, जो आगे बढ़ने वाले भविष्य में जीडीपी ग्रोथ प्रोफाइल का गठन करता है। इसलिए, यह पाया जा सकता है कि भारत के वित्तीय ढांचे को आम तौर पर मजदूरी का दावा करने से लेकर चित्रण पर लंबे समय तक चित्रण के संबंध में प्रशिक्षण के आसपास खुले निवेश के संबंध में कम

भारत की भाग्य रेखा : गंगा संपादक : प्रो० सविता मोहन

सर्वाधिकार सुरक्षित प्रथम, 2018

₹ 395.00 ISBN

978 - 93-82830-31-3 Title

Hinduism II. Research 294.507

dc 22

विनसर पब्लिशिंग कम्पनी

 प्रथम तल, कं०सी० सिटी सेंटर 4. डिस्पेन्सरी रोड, देहरादून-248 001

उत्तराखण्ड, (भारत) web.: www.winsar.org e-mail: winsarbooks@gmail.com e-mail: winsar.nawani@gmail.com

शब्द संयोजन

नवानी बदर्स देहरादन, उत्तराखण्ड शिवम नवानी

लता शबला रेखांकन

PRINTED IN INDIA

Published by Kirti Nawani for Winsar® Publishing Co., Dehradun, D & P Manglamm Arts, Dehradun (Uttarakhand)

संपादक

पो० सविता मोहन

विनसर[®] पब्लिशिंग कं०

देहरादून-उत्तराखण्ड

Chapt. Med mount

27 मनुस्मृति में वर्णित विवाह संस्कार

डॉ. अरुणिमा मिश्रा

भारतीय संस्कृति में मानव जीवन का एक लक्ष्य निर्धारत कर दिया गया है वह मोध हैं। धर्म, अर्थ, काम मोक्ष ये चार पुरुषार्थ हैं इनमें परम पुरुषार्थ मोछ है और जीवन का लक्ष्य इसी को प्राप्त करना है इस लक्ष्य की ओर मनुष्य को ले जाने के लिए मनुष्य के हृदय में कुछ प्रेरणाओं की आवश्यकता होती है इन्हीं प्रेरणाओं एवं भावनाओं को पैदा करने का कार्य संस्कार करते हैं अतः संस्कार परमपुरुषार्थ एवं निर्धारित लक्ष्य मोक्ष की और ले जाने के लिए हृदय में उत्पन्न करने वाली प्रेरणाओं एवं भावनाओं तथा विचारों के बोत हैं।

प्राचीन समय में यह सिद्धान्त प्रचलित था कि "जन्मना जायते शुद्धः संस्काराद् डिज उच्चते" अतः पूर्ण विकसित होने के लिए मानव का संस्कार व परिमार्जन आवश्यक है। मानव जीवन को परिष्कृत, अनुशासित, सुखी तथा सम्पन्न बनाने के लिए संस्कारों का महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कार वास्तव में पवित्र अनुष्ठान है, जो व्यक्ति का बौद्धिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और शारीरिक शुद्धि में सहायक होता है।

मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन संस्कारमय है, संस्कार के द्वारा ही मनुष्य भौतिक, आध्यात्मिक, तथा जीवन उन्नित के कार्यों को पूर्ण करते हैं। संस्कार एक प्रकार से आध्यात्मिक शिक्षा के लिए क्रिमिक सोपान का कार्य करते हैं।

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का अद्वितीय स्थान है। संस्कार मनुष्य के व्यक्तित्व विकास के निमित्त आवश्यक हैं। शुद्धता, आस्तिकता व पवित्रता संस्कार की जीवन ज्योत्सना है, मनुष्यों का आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जीवन संस्कारों की निरुपन्नता से प्रभावित होता रहा है। संस्कार जीवन की

आत्मवादी और भौतिक धारणाओं के बीच मध्य मार्ग का कार्य करते हैं। संस्कार में भौतिक व धार्मिक तत्वों का समन्वय है।

वस्तुतः व्यक्ति के पूर्व जन्म एवं वंशानक्रम से प्राप्त दुर्गुणों को निकाल कर उसमें सद्गुणों के स्थापन की प्रक्रिया को बौद्धिक विचारधारा में संस्कार कहा गया है। मानव जीवन के जन्म के पूर्व में लेकर मृत्यु पर्यन्त होने वाले कुछ विशेष विधि विधान ही संस्कार है अतः मनुष्य जीवन को सुन्दर और उच्च बनाने के लिए हमारे ऋषि-मुनियों ने जो रीति बनाई वही संस्कार हैं। वास्तव में संस्कार जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त जीवित रहने, विषयभोग तथा सुख प्राप्त करने, चिन्तन करने तथा अन्त में इस संसार से प्रस्थान करने के कामनामय मध्य बिन्दु के चारों ओर भ्रमण करने वाली घटित घटनाओं की निरन्तर श्रृंखला है। जीवन का केन्द्र बिन्दु ही संस्कार की जननी है। जीवन के समान संस्कार भी जन्म और मृत्य के बीच गतिशील रहते हैं। इस प्रकार संस्कारों के माध्यम से ही मनुष्य अपने जीवन को संस्कारित कर उसे समाज में सामाजिक जीवन व्यतीत करने योग्य बनाता है। मनुस्मृति में वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैभिषेकादि द्विजन्मनाम्। कार्यःशरीर संस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च एवं जैमिनि सूत्र में संस्कारो नाम स भावति यस्मिन् जाते पदार्थी भवति योग्य2: तन्त्र वार्तिक में 'योग्यता चादधानाः, संस्काराः इत्युच्यन्ते शंकराचार्य ने 'संस्कारो नाम गुणाधानेन वा स्याद दोषापनयनेन वा⁴ इस रूप में संस्कार शब्द को स्पष्ट कर दिया है। अतः संस्कारों से नवीन गुणों की प्राप्ति होती है। संस्कार एक विलक्षण योग्यता है जिसकी प्राप्ति हेतु शास्त्र विहित क्रियाओं का आश्रय लेना पडता है।

विवाह संस्कार एक सामाजिक, सर्वध्यापी एवं सार्वभौम संस्था है जो समस्त समाजों एवं प्रत्येक काल में विद्यमान रही है। विवाह से ही परिवार वंश एवं कुल की परम्परा बनी है। यह मान्यता है कि स्त्रियों की मृष्टि प्रजननार्थ एवं पुरुषों की मृष्टि सन्तानार्थ हुयी है। पति के द्वारा पत्नी का पाणिग्रहण किये जाने पर विवाह संस्कार सम्यक् रूपेण सम्पन्न माना जाता

खलव, संस्कृत

(लब्ध ज्यसी; इत्यः

> स्कृत, ोनघद

संस्तित स्तय, स्कृत

यश्च,

लब, नपुर जान

नई

ापत्र सर्वा.

€1,

रेश व

....

à.

^{1.} मनुस्मृति 2/29

जैमिनि सूत्र - 3/1/3

^{3.} तन्त्रवातिंक-पृ.सं. 1077

^{4.} शंकराचार्यभाष्य-1/1/4

Chapt in Ed Potts

44 मोश

डॉ० अरुणिमा

ध्यांच काम मोक्षाणाम् पुरुषार्थचतुष्टयम् धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष चार पुरुषार्थ है किसमें मोक्ष अन्तिम और अनिवार्य पुरुषार्थ कहा गया है। इसे परम पुरुषार्थ भी कहा पया है। मोक्ष के लिए एक मात्र आत्म तत्व का जान ही अपेक्षित है इसी के अमुक्तन्त्व प्राप्त होता है। अन्य कोई मार्ग नहीं। क्योंकि जान के विना प्रक्रित संभव नहीं कहे जानान्तमुक्तिः।

पुण्णार्थ की ओर मानव की प्रकृति सुख प्राप्ति के लिए होती है क्योंकि जीवमात्र के सुख अन्वन अभीष्ट हैं। सुख द्विविध हैं प्रथम-विषय सुख। द्वितीय-आत्म सुख। प्रथम विषय सुख-कर्मोन्द्रयों का विषयों के साथ सम्पर्क होने से सुख अर्थात् दु:ख-मिश्चन सुख-प्राप्त होता है। यही विषय सुख-अर्थात् विषयानन्द है।

हिताय आरू सुख इन विषयों और क्रियाओं में थककर में शरीर नहीं हूँ प्रत्युक्त इन देह डॉन्ड्रबाटि से ऑर्टिश्न आत्मा हूँ धर्मोणर्जन निष्काम भाव से, अथॉपर्जन त्यार के लिए और काम का संवन शरीर रक्षण के लिए, त्रिवरों का उपार्जन साक्षात् या परम्परा मोक्ष की ही प्राप्ति के लिए ही होता है सर्वश्रेष्ठ उत्कृष्ण अक्षय पुरुषार्थ मोक्ष हो है इसलिए मोक्ष की ऑन्त्रम चरम लक्ष्य माना गया है। उसी को प्राप्त कर मनुष्य कृतार्थ होना है-

" एतावानेव मनुजैयोंग-नेपुण्य बुद्धिभि स्वार्थसर्वात्मनाज्ञेयो यन् पगन्धेकरर्शनम्"

इस चतुवर्ग में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में अन्तिम तीती पुरुषार्थी का मृल धर्म

) अंग्रमदभागवत महाप्राण *६* ३६-६३

है इसीलिए अर्थ, काम और मोश्न की सिद्धि के लिए धर्च उपादेय है एवं शरीर रक्षा का मुख्य साधन होने से, धर्म और अर्थापार्जन में उपयोगी होने के कारण काम भी उपादेय है। धर्म और मोश्न के लिए प्रयासक न तो केवल अर्थ और काम को ही चिन्ता करना सम्पूर्ण पुरुषार्थों से हाथ धोना है क्योंकि इससे मनुष्य ज्ञान और विज्ञान दोनों से च्युत होकर स्थावर योनि को प्राप्त हो जाता है इसीलिए महर्षि-

" अर्थोन्द्रयार्थामिध्यानं सर्वोर्थपहवोनुणाम् ¹ भ्रंशितो ज्ञान विज्ञानाद् येवा विषति मुख्यताम् "

अस्तु, जीवन के चारों लक्ष्यों को निर्विघ्न कर मोक्ष को सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ बताया है धर्म से सम्यक् आचरण, अर्थ से आर्थिक हित, काम से वासना, भावना तथा कलात्मक जीवन की संतुष्टि और मोक्ष से आत्मा की मुक्ति का ग्रहण करना चाहिए।

पुरुषार्थ चतुष्टय में श्रेष्ठ होने के कारण इसे परम पुरुषार्थ भी कहा जाता है मोक्ष-शब्द मोक्ष धातु पर भाव अर्थ में घव प्रत्यय के संयोग से निष्मन होता है मोक्ष और मुिक्त शब्द क्रमश: मोक्ष और मुच् धातु से व्युत्पन होते हैं जिसका अर्थ सम्पन होना या छुटकारा पाना है। मोक्षशब्द का अर्थ छुटकारा पाना (मुझ मोचने) है। इसे प्राप्त करके मनुष्य सभी प्रकार के दु:खों से छुटकारा पाना है दु:ख तीन प्रकार के है आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक इन दु:खों के कारण हो व्यक्ति दु:खो रहता है अत: दु:खों से मुक्ति या छुटकारा पाना हो मोक्ष कहलाना है। मुक्ति शब्द का अर्थ करते हुए श्री प्रेमवल्लभ त्रिपाठी कहते हैं कि मुच्ल्मोचने इस धातु से कितन् प्रत्यय के संयोग से मुक्ति शब्द निष्मन हुआ। मुझ्ते सर्वेदु:खबन्धनै यत्र स: मोक्ष: अर्थात् जिस पद को पाकर जीव आध्यात्मिक आदि सम्पूर्ण दु:ख बन्धनों से मुक्त हो जाता है उसे मोक्ष कहते है। पुरुषार्थ चतुष्ट्य में च्रथम तीन पुरुषार्थ का सम्बन्ध लीकिक दायित्व से है अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष का विधान हमारे दर्शनों, धमंशास्त्रों एवं वेदों में इन लीकिक सुखों से मुक्त होकर पारलीकिक वास्तविक सुख को प्राप्त करने के लिए है।

मनुष्य जीवन में कई कामनाएँ उत्पन्न होती हैं किन्तु अपनी परिस्थितिवश सभी उपलब्ध नहीं हो पाती हैं भोगों से कभी कामना शान्त नहीं होती है यह विचार कर ही अपने सामर्थ्य के अनुसार जो भी उपलब्ध हो जाए उसी में सन्तोष करना चाहिए सन्तुष्ट होकर सन्तोष ही मुक्ति-मोक्ष का कारण हैं-

श्रीमदभागवत महापुराण-4-22-23

2018-19

CHAPTER

19

Usama Tayyab,
 Dr. Pulkit Agarwal &
 Dr. Richa Jain

Scholar of Commerce, Mohammad Ali Jauhar University, Rampur, U.P.

Assistant Professor Department of Commerce, Mohammad Ali Jauhar University, Rampur, U.P.

Head, Department of Commerce, Dr.
P.D.B.H. Govt. P.G. College, Kotwara, UK.

Make In India: Economic Growth in India

Abstract

Make in India is an international marketing strategy ... movement which campaigning slogan coined by the Prime Minister of India, Narendra Modi to magnetize businesses from around the world to invest and manufacture in India. The campaign has been concentrated to consummate the purport of Job Engenderment, Enforcement to Secondary and Tertiary sector. Boosting national converting the India to a self-reliant country and to give the Indian economy ecumenical apperception. Make in India which is the recipe of PM Narendra Modi's aims to make India the manufacturing hub of the world. The conception of utilizing frugal labour to engender for the world is not incipient. It's been implemented rather prosperously in East Asia and gave phenomenal results for three decades popularly called the East Asian magnification miracle. Countries such as South Korea, Malaysia, Thailand, and Indonesia visually perceived a rapid fall in the penuriousness and unemployment numbers between tardy 1960's and mid 1990's.

The Indian regime through this initiative aims to put to utilize its rapidly incrementing workforce to productive use, realizing that accommodation sector though contributing about 55-60% of the GDP cannot be the sole driver of the economy. In the present paper an endeavour has been made to throw some light on the concept of 'Make in India'. Further, an endeavour has additionally been made to review the advantages of this concept and the areas which are going to gain benefit with this Modi's concept of Make in India.

Keywords: - Make in India, International Marketing, and Business

8 Chapt in Ed. Book (17-18)

MEMBER OF THE BOARD OF STUDIES

Prof. B.D.Joshi Retd.Prof.

Department of Zoology Gurukul Kangri University Haridwar.

Dr.N.N.Pandey Principal Scientist,

Directorate of Coldwater Fisheries (DCFR) Indian Council of Agriculture Research (ICAR) Bhimtal (Nainital).

Dr.Shyam S. Kunjwal
Coordinator
Department of Zoology
Uttarakhand Open University

Haldwani(Nainital)

Dr. H.C.S.Bisht

Professor

Department of Zoology DSB Campus, Kumaun University, Nainital. T= 13

Dr. H.C.Tiwari Retd.Professor & Principal

Department of Zoology, MB Govt.PG College Haldwani Nainital.

PROGRAMME COORDINATOR

Dr. Shyam S. Kunjwal

Department of Zoology & Biotechnology School of Sciences Uttarakhand Open University Haldwani(Nainital).

UNIT WRITER

UNIT NO

Unit: 1, 2, 3, 4,5,6,7 &8

1. Dr.Anju Thapliyal

Assistant Professor
Department of Zoology
BGR Campus Pauri,
HNB Garhwal, (A Central University
Srinagar) Garhwal.

2. Dr.Shyam S. Kunjwal

Department of Zoology School of Sciences, Uttarakhand Open University, Haldwani, Nainital Unit: 9 & 10

Chapter in Edded goot

"Environmental Awareness of Pre-service Teachers (B.Ed. Students) in Relation to Certain Demographic Variables"

Dr. R. S. Chauhan*

"I will be waging a battle for the future of the earth and mankind till my last breath, but now the youth of the country will have to come forward to take up the mission to green the Himalayas."

Veteran Environmentalist Sunder Lal Bahuguna INTRODUCTION:

Meaning of the word 'Environment' a surrounding external conditions influencing development or growth of people, animals or plants, living or working conditions etc. and Environmental education is the study of nature, natural resources, the interrelationship with man, human activities, disturbances to the environment and the attempts to improve the environment. It is the application of knowledge from different disciplines to study and manage the environment. It is also study and manages the environment and study of the conditions, circumstances and influences that affect life and how life in turn responds. Life requires the correct balance of environmental conditions to survive.

The environmental for man is earth. It alone contains man, animals and plants. Now the earth has become sick by the activities of man. The united nations conference on environment and development held in Rio De Janerio on 1992, Known as 'Earth Summit' followed by the world summit on sustainable development at Johannesburg in 2002

Can con

 ^{*} Associate Professor in B.Ed., Govt.P.G. College, Kotdwara, Pauri Garhwal (Uttarakhand), India

4 Chaptin Ed Bit (2017-13)

MEMBER OF THE BOARD OF STUDIES

Prof. B.D.Joshi

Retd.Prof.

Department of Zoology Gurukul Kangri University

Haridwar.

Dr.N.N.Pandey

Principal Scientist,
Directorate of Coldwater Fisheries (DCFR)
Indian Council of Agriculture Research (ICAR)
Bhimtal (Nainital).

Dr.Shyam S. Kunjwal

Department of Zoology Uttarakhand Open University Haldwani(Nainital)

Prof. H.C.S.Bisht

Department of Zoology
DSB Campus, Kumaun University,
Nainital.

Prof. H.C.Tiwari

Retd. Prof. & Principal Department of Zoology, MB Govt.PG College Haldwani Nainital.

PROGRAMME COORDINATOR

Dr.Shyam S. Kunjwal

Department of Zoology & Biotechnology School of Sciences Uttarakhand Open University Haldwani (Nainital).

Unit Writer

Unit no.

1. Dr.Anju Thapliyal

Assistant Professor
Department of Zoology
BGR Campus Pauri,
HNB Garhwal, (A Central University) Garhwal.

2. Dr.Shyam S. Kunjwal

Coordinator

Department of Zoology School of Sciences, Uttarakhand Open University, Haldwani, Nainital Unit: 1, 2, 3&4

Unit: 5, 6, 7 & 8

17 1900 Chapt in Ed. Both

Transforming Nation to a Developed New India: Issues and Challenges

98

Opportunities and Challenges in adopting IFRS is India

Dr. Richa Jain Assistant Professor. Dept of Commerce, Govt. P.G. College, Kotdwara (U.K)

Dr. A.K. Mital Head Dept. of Commerce, Sahu Jain (P.G.) College, Najibabad (U.P)

Abstract

International Financial Reporting Standards (IFRS) adopted by International Accounting Standards Boards (IASB) is a standardized format of financial reporting that is gaining momentum worldwide and is a single consistent accounting framework and is likely to become predominant GAAP in times to come. In this world of globalization in which Indian economy has also flourished, adopting IFRS would not only make Indian companies at par with other global companies but shall also increase India's marketability globally in terms of foreign investments. Therefore this paper is an attempt to find out up to what extent IFRS has been adopted by the organizations. What challenges and opportunities companies are facing regarding IFRS and what are the measures that can be taken to make the process smooth and flawless. This paper focuses on the awareness and adoption of IFRS in India.

1. Introduction

IFRS stands for "International Financial Reporting standards" and includes International Accounting (IASs) until they are replaced by any IFRS and interpretations originated by the IFRIC or its predecessor, the former Standing Interpretations committee (SIC). These are standards for reporting financial results and are applicable to general purpose financial statements and other financial reporting of all profit oriented entities. Profit- oriented entities includes those engaged in commercial, industrial financial and similar activities, whether organized in corporate or in other forms also includes mutual insurance companies other mutual co-operative entities etc. Upon its inception the IASB adopted the body of International Accounting Standards (IASs) issued by its predecessor and as such IFRS includes IAS until they are replaced by any IFRSs. One of the basic features of IFRS is that it is a principle based standard rather than rule based. As India converges with International Financial Reporting Standards (IFRS), there are certain matters that company directors should be aware of first and for most, India converging with IFRS and not adopting IFRS. The Indian IFRS will be called Ind-AS, which would diverge from IFRS on some matters. the level of acceptability of Ind- AS financial statements outside of India will be somewhat discounted as those will not be in compliance with IFRS as issued by the International Accounting Standards Board (IASB). This aspect could be somewhat mitigated by a reconciliation statement between IFRS and Ind-AS in the Ind-AS financial Statements.

2. Structure of IFRS

IFRS is as principles based set of standards that establish board rules and also dictate specific treatments. International financial reporting standards comprises of.

- International financial reporting standards (IFRS) standards issued after 2001.
- International accounting standards (IAS)- standards issued before 2001.
- Interpretations originated from the international financial reporting Interpretations committee (IFRIC)- issued after 2001.
- Standing interpretations committee (SIC)- issued before 2001.

(2018-19)

क्रियात्मक अनुसंधान सिद्धान्त एवं प्रयोग

हाँ. आर. एस. चौहान परीक्षा नियंत्रक श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, बादशाहीथौल टिहरी गढवाल (उत्तराखण्ड) एम.ए. अंग्रेजी, एम.ए. इतिहास, एम.एड.,एल.एल.बी. यू.जी.सी. नेट-शिक्षा शास्त्र, डी.फिल.-शिक्षा शास्त्र डॉ. स्वाति नेगी

एसोसिएट प्रोफसर-बी.एड. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार, गढवाल (उत्तराखण्ड) एम.एस.सी., एम.एड.

यू जी.सी.नेट-शिक्षा शास्त्र, डी.फिल.-शिक्षा शास्त्र

without C



SIA Vantom

Scanned with CamScanner

Book (2012-19)

179-13

क्रियात्मक अनुसंधान

सिद्धान्त एवं प्रयोग

डॉ. आर. एस. चौहान

परीक्षा नियंत्रक

श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, बादशाहीथौल टिहरी गढवाल (उत्तराखण्ड)

एम.ए. अंग्रेजी, एम.ए. इतिहास, एम.एड.,एल.एल.बी.

यू.जी.सी. नेट-शिक्षा शास्त्र, डी.फिल.-शिक्षा शास्त्र

डॉ. स्वाति नेगी

एसोसिएट प्रोफसर-बी.एड.

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार, गढवाल (उत्तराखण्ड) एम.एस.सी., एम.एड.

यू जी.सी.नेट-शिक्षा शास्त्र, डी.फिल.-शिक्षा शास्त्र

auto. Any



नई दिल्ली-11005%

S/A Soulon Scan copy of Book Chapter, Chapter volume, proceeding paper

2019-20

24

Integration between Gloablisation and Organisational Performance: A Case Study of MNCs

Dr. Priyanka Agarwali

ABSTRACT

Today, the organisations exist in a variable environment that is directly affected by the global influences. Global influences leads to many changes in the society, on which in turn, depend the organisational performance. Globalisation has been shown to be important factors in defining organisational environment that consist organisation or wall performance. This study mainly focuses on investigating the impact of globalisation on organisational performance. The primary objective of this paper is to analyze the connection between globalisation and organisational performance. A field survey was conducted from the employees working in the private organisation. The questionnaire contained different questions on Globalisation as well as their impacts on the organisational performance. This paper is descriptive in nature, and data has been collected through various primary and secondary sources. The major finding of the study is that global influences highly impact the organisational overall performance.

Keywords: Globalisation, Organisation Performance, MNC

Introduction

The process of globalisation in the modern day has been caused by the advancement in technology, communication and infrastructure. Global influences have great impact the organisational operation. Global influences contain lots of apportunities for organisations to exploit, but organisation has to face several challenges too. Whether globalisation is an advantage or a drawback for an organisation, depending on the situation of organisation

^{1.} Assistant Professor, Department Of Commerce, Government P.G. College, Kotdward

Thoceeding 1920

जनजातियों की आजीविका सुधान हेतु स्वरोजमार के रूप में मीन पालन

7=5)

हाँ० ममता रावत असि० प्रोफेसर भूगोल विभाग हाँ० पीताम्बर दता बहुध्वाल स्थानकोत्तर माहाविद्यालय कोटद्वार

डॉं० राखी नेगी एच एन बी जी यू गढवाल

अतर सिंह कैन्तुरा शिवालिक नेचुरल प्रोडक्ट कोटहार पौड़ी गढ़वाल,

उत्तराखण्ड में अनेक जनजातियां निवास करती है जैसे थारू, बोक्सा, गुर्जर, जौनसारी, भोटिया, राजी आदि। गुर्जर जनजाति सदियों पहले कश्मीर से उत्तराखण्ड व हिमाचल में आ कर बस गए, इन्हें वनगुर्जर के नाम से जाना जाता है, उत्तराखण्ड के चार डिवीजनों—शिवालिक, लैन्सडोन, पुर्व देहरादून व पश्चिमी देहरादून (हिमालय पर्वत फद क्षेत्र शिवालिक रेंज में स्थित है) को संयुक्त रूप में मिला कर 1983 में राजाजी राष्ट्रीय पार्क की स्थापना की गई, यह पार्क देहरादून से 23 किलोमीटर की दूरी पर 830 वर्ग कि0मी0 के क्षेत्र में पौडी गढ़वाल, हरिद्वार व देहरादून जिले में फैला है तथा एशियाई हाथियों (अन्य जीव जन्तुओं के अलावा) में प्राकृतिक आवास के रूप में विशेष रूप से प्रसिद्ध है।

राजाजी राष्ट्रीय पार्क के अन्दर व सीमावर्ती क्षेत्र में ही इन गुर्जर जनजाती का विकास है। यह लोग लम्बे कद काठी व तीखे नैननक्श वाले, सहासी, मेहनती व सादा जीवन जीने वाले है। जंगलों में रहने के कारण इन्हें औषधीय पौधों की अच्छी जानकारी होती है जिसका उपयोग यह अपने समुदाय में स्वास्थय उपचार हेतु करते हैं, यह अपनी आजीविका के लिए पूरी तरह पशुपालन व दूध उत्पादन पर निर्भर हैं देहरादून, ऋषिकेश, डोईवाला, कोटद्वार के कई क्षेत्रों में दूध की आपूर्ती इन्ही के द्वारा की जाती है। अशिक्षित होने व जंगलों में निवास करने के कारण यह समाज के लोगों के सम्पर्क में नहीं है किन्तु वर्तमान में सरकार की कोशिशों के कारण कुछ गुर्जरों के बच्चे शिक्षा हेतु स्कूल जाने लगे हैं।

काफी समय से सरकार द्वारा इन्हे (जंगल व जीव जन्तुओं की सुरक्षा हेतु) राजाजी नेशनल पार्क के विस्थापित करके इसके बाहरी हिस्से में बसाने का प्रयास कर रही है। इसी कम में यहा रह रहे मूल 511 गुर्जरों के 1390 परिवारों को हरिद्वार के गैंडीखाता व पथरी में बसाया गया तथा अन्य गुर्जर परिवारों को सामनसुर में बसाने की योजना है बढ़ती जनसंख्या व सिमटते जंगलों के कारण पशुपालन व्यवसाय से अपनी आजीविका चलाना कठिन हो रहा है ऐसे में मौन पालन ऐसे में भी आजीविका बढ़ाने का बेहतरीन विकल्प के रूप में देखा जा सकता है।

ऐसे में मौन पालन का प्रशिक्षण दे कर इन लोगों की आजीविका को बढ़ाया जा सकता है। क्योंकि अभी तक यह जंगल में लगे प्राकृतिक छत्तों से शहद निकालकर उपयोग करते थे लेकिन प्रशिक्षण के बाद यह बिना मधुगक्खी (मौनो) को नुकसान पहुचाए उनसे शहद, पौलन, वैक्स, परपोलिस, रायल जैली का भी उत्पादन कर अपनी आर्थिकी बढ़ा सकते हैं और औषधीय पौधों की जानकारी के कारण यह औषधीय गुणों से भरपूर शहद का उत्पादन कर के अपनी

mocading?

A TRADITIONAL ART FORM OF KUMAUN REGION OF UTTARAKHAND'

Dr. Vinod Singh

Asst. Professor, Drg. & Ptg.
Govt. P.G. College, Kotdwara,

Uttrakhand

Uttarakhand, cradles in the lap of the lofty
Himalayas the state boasts of snow- crapled
peaks, stealthy glaciers, meandering rivers, mist
laden valleys and exotic species of flora and
fauna. The people of Uttarakhand have created
and nurtured various forms of arts and crafts
since ages. Crafts usually utility items like doors,
windows, rugs, carpets, baskets, copper, utensils
or the folk art Aipan made by Uttarakhandis have
a unique touch of nature in their designs.

Aipan, a traditional art form with which the people of Kumaun region of Uttarakhand, Particularly women decorate their houses to welcome an auspicious occasion like diwali or any other event like marriage ceremony² now moves beyond the threshold of the Kumaun The word 'Aipan' is actually a derivative of meaning of "Aipan", a sanskrit word. The actual meaning of Aipan is "Likhai" that means writing, thought it is a pattern that is made with the help of fingers. The women of Kumaun celebrate all festivals and rituals ceremonies by first decorating the floors and entrances of their homes with folk painting called as Aipans.³

Medium and technique

Aipan reveals great variety in its content and style and it has flourished more and less in the form of a domestic art being handed over from one generation to other by mothers to daughters. The patterns are invariably drawn by fingers using- a paste of powdered rice locally called biswar over a surface painted with red rock oxide called geru. These surface drawing and patterns are drawn for decorating a variety of places in the household during specific occasion including the steps leading to the main door, the door entrance, the doors, the courtyard, specific places on the walls, altar and even domestic appliances like a supa or a winnowing scoop.4

Many a times, however, these patterns also take the form of figurative drawings called patta or likh thap either using a plot (narrative) depicted over a paper or cloth and making use of a variety of floral colors. Yet another distinctive style of aipan, known as bar boond creates mystic geometrical patterns with the help of specific numbers and arrangement of dots for particular designs. The medium selected for

खांग चित्रों की किलनी बढ़ी संख्या रही होगी इसका आकरन करना करित खांग चित्रों की कितनी बढ़ी संख्या रहा पह साथ साथ भारे मोटे पास्माह है। गुगनेन्द्रनाथ के इन खांग चित्रों में वे दूश्य के साथ साथ भारे मोटे पास्माह है। मगनेन्द्रनाथ के इन त्यम पान में व भीती चोट भी करता है। उनका दृष्टिके तत्कातीन समाज की विसंगतियों पर भीती चोट भी करता है। उनका दृष्टिके तत्कालीन समाज को विसमातिक। पर को विशाना बनाना है। स्वभावतः संभावतः महत्यवर्गीय भारतीयों से लेकर तर्व वर्ग का वातारण बनता है। कभी-वर्गी राज-कि विशेष रूप से कलकता का समाज उत्पाद का उदारवादी वृद्धि पर निशाका होता । परिचेश पर भी आक्रमण है तब चित्रकार का उदारवादी वृद्धि पर निशाका होता । परिवेश पर भी आक्रमण ह तब प्रवासना । उनके द्वारा बमाये गये रेखांकनों का महत्वपूर्ण रबान है। समाज में खापा अन्तर उनके द्वारा बनाय गय स्थाका वन स्थान होंगे चित्रों हारा वे तीखा प्रहार करते थे। उन्हें 1915 ई0 से 1922 ई0 के मारा कार्ट्न चित्र विशेष रूप से बनाये।

से 1922 हैं। के मान कर्य वर्गी वर्गी एवं प्रकारों पर तत्कालीन सूरोपीय के साहित्य आंदोलनों का प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पडा था। तत्कालीन प्रकारन साहित्य आवालना का प्रवास प्राप्त अभावार्य गानेन्द्रनाथ आधुनिक कला है साहित इनके चित्रों का प्रकाशन है। रही भी प्रतिष्ठित हैं। बंगाल खूल की लीक से हिंद पारस्वर के आनावाता का यह प्रथम प्रयोगवादी कलाकार सन् 1938 ई0 में इस स्वार चलन वाला भारत था यह पात्र जीवन को और जीवनोत्तर धार्ग को साकार वन्न में समये थे। इन्होंने सचेत मन से शैलीगत परम्पराओं तथा रिवाओं से नीता था व्यक्तिगत शैलियों को अपनाया था और भारत में कला आंदोलन को नई दी थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

भागो, प्राण नाथ, "भारत की समकालीन कला एक परिप्रेस्य" नेमनत क 1. ट्रस्ट इण्डिया, 2006, पु0 25

विश्व भारती त्रैमासिक, खण्ड-15, भाग-1, मई-जुलाई 1949, पुठ 07

मागो. प्राण नाथ, "भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्ष" नेशनत रह ट्रस्ट इण्डिया, 2006, पृ0 30

भारतीय चित्रकला का पुर्नजागरण एवं बंगाल स्कूल

डॉ० पंकज कमा डॉ० विनोद सिंह. असिए प्रोफ्ट, चित्रकला असि0 प्रोफेंट, विज्ञान राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार केठकेठ जैन पीठजीठ कॉलेज खानी

सन 1760 ई0 में मुगल साम्प्रज्य के पतन के साथ ही उक्तरी भारत मे वित्रकला में सर्वत्र अवनति के चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे। दिल्ली तथा लखना कुछ चित्रकार अब भी चित्रकला का व्यवसाय चलाए हुए थे। परन्त उनकी कृतिय प्राचीन कृतियों की हीन अनुकृतियाँ थीं। जैसे-जैसे भारतवर्ष में इस्ट इण्डिया कमनी का प्रभाव बढ़ता गया और हिन्दु तथा मुसलमान शासकों को पदच्यत करके अनेक राज्यों का शासन ब्रिटिश सत्ता के अधीन होता गया, वैसे-वैसे राजाश्रय में पतन वाले चित्रकार भी अपने आज्ञयदाताओं के दरवारों से पलायन करते गए

भारत में कुछ पश्चिमी वित्रकार मुख्यक ईस्ट इतिबंधा कम्पनी अथवा ब्रिटिश श्वासन को अभिकारियों के साध आए। कुछ अन्य विश्वकार भारत की सन्दि की and स्वकर भारत में अपना भाग्य आजगाने आये। भारतीय संस्थकों ने अपनी हामार प्राप्त करना शीलियों का तिरस्कार करते हुए इन परिचया विक्रकारों को अवस्थातित प्रोत्साहन दिया। परिणागस्वरूप यूरोपीय कला के नेसर्गिकसावादी रूप का भारतीय कला पर प्रभाव पडा व उसका मूल सीन्दर्व नष्ट होकर दसको अन्द्र रूप पाल हुआ। औरमजेब के शासन काल में भ्रष्टता के अतिरिक्त कला के स्तर में बी भिरातट आ गर्ड. जिसके प्रमुख कारण ये शासकीय विरोध व उपरा। राजाश्रय के अभाव से कलाकार भिन्न-भिन्न स्थानों पर जा बसे व किसी तरह अपना चंदर निर्वाह करने लगे। एक दूसरे से विशेष सम्पर्क न रहने के कारण मिन्न-मिन स्थानी के नाम पर उन शैलियों को दिल्ली कलम, लखनी कलम, दक्षिणी कलम आदि नाम

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक आते-आते राजस्थानी, पहाडी तथा नुगत शिल्यों में पर्याप्त हास हो गया था। राजस्थान की प्रमुख रीलिया नेवाड, रूरी, मालवा जोधपुर, किरानगढ आदि के अत्यन्त दुवंल हो जाने के कारण घटिया सार भारतमा कृतियों का निर्माण होने लगा। 1880 तक आते आते इस रौली पर श्री पर्याप्त यूरोपीय प्रभाव पड़ चुका था। 1834 में मैकाले ने भारतीय लोगों को अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के अनुसार प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से अपने शिक्षा सन्बन्धी विचारा हो घोषित किया। जिसका शिक्षा व सामाजिक मान्यताओं पर काफी प्रमाव पढ़ा। और भारतीय लोग कला, संस्कृति, रीति-रियाजों आदि, जीवन के सभी अंगोपांगी की निन्दा करना प्रतिष्ठा का लक्षण मानने लगे। कला के क्षेत्र में विकटारियन नसर्गिकतावादी कलाकृतियों को श्रेष्ठ माना गया व प्राचीन भारतीय कला की निन्दा होने लगी। 'रिस्कन' व स्टोकवेलर जैसे विदेशी कला समीक्षकों ने भारतीय कला का उपहास किया व यहाँ के शिष्ट समाज ने अधानुकरण करके उसे दोहराया।

भारतीय कलाकार उस समय स्वदेशी कला शैली में ही कार्य करना चाहते थे। परन्तु विदेशी सरक्षणदाताओं की रूचि के कारणवश उन्हें विदेशी शैली में कार्य करना पडता। परिणामस्वरूप उनकी विश्वकला में स्वदेशी और विदेशी कला विशेषतार परिलक्षित हुई. साथ ही साथ इस मिश्रण द्वारा कला में नवीनता आई। इस नई रौती का शुभारम्भ विदेशी सरसणदाताओं की कथि और मारतीय कलाकारों की बेसहार रिथति के कारण हुआ। इस नवीन चित्रशैली के चित्रों में मुगल कला की बारीकी व अंलकरण का अर्थि है। वर्ण योजना व छाया प्रकाश विदेशी शैली के प्रभाव का परिवायक है। वे मारतीय कलाकारों से विदेशी चित्रों की नकल करवात और जो कलाकार जितनी अस्की नकल करता उसके प्रोत्साहन के तिए सरक्षणदाता उसे पुरस्कार के रूप में विभिन्न उपाधियों से विभूषित करते। परिणामस्वरूप कलाकारों में आपस में प्रतिस्पर्धा होने लगी और प्रत्येक कलाकार अपने समुकालीन कलाकार से जताम नकल करते की चेष्टा करने लगा। फलतः भारतीय कला का पतन होने लगा।

उन्नीसवी शताब्दी के अंत में भारत वर्ष में चित्रकला का अध्यतन हो गया और चित्रकता की कलात्मक विशेषताओं का लोप हो गया। चित्रकार पुरानी राकीर पीटते रह गए और सुजनात्मक सत्ता का पूर्णतया लोप हो गया। इस प्रकार की चित्रकला की बुझती ली बाजांक कृतियों की धुमिल टिमटिमाइट बनकर उत्तरोतार

(2019-20)

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक प्रकृत्युपासना

डॉ० रोशनी

शोध सारांश— प्रस्तुत शोध पत्र में प्रकृति संरक्षण हेतु वैदिक मार्ग को आधारभूमि बनाया है क्योंकि यही एक पथ है जो हमें प्रकृति के वास्तविक अस्तित्व और उसकी समूची शिक्तयों का ज्ञान कराता है। वैदिक प्रेरणा से ही मनुष्य शुचिता और पवित्रता को अपनाते हुए इस कोरोना महामारी covid 19 से स्वयं को सुरक्षित रख सकता है। सम्प्रति उपजे आर्थिक समस्या का निदान भी वेद प्रतिपादित विषयों को अपनाकर कर सकता है, अतएव इस शोध पत्र में वेदों का शैक्षिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक, कला और आर्थिक पटल का मुख्य रूप से वर्णन किया गया है।

विषयपटल— अखिल जगत् की सम्पूर्ण शक्तियों को वास्तव में प्रकृति ही नियन्त्रित करती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सम्पूर्ण विश्व कोरोना महामारी का दंश झेल रहा है सर्वत्र त्राहि त्राहि की विभीषिका दृष्टिगोचर हो रही है, जिसका जिम्मेदार मनुष्य स्वयं है। प्रकृति की अस्मिता के साथ खिलवाड़ करने वाले मनुष्य ने स्वयं को इतना उन्नत और सम्प्रमु मान लिया है कि वह यथेच्छा संकेतमात्र से प्रकृति को

Proceeding (2019-20)

*Prof. K.S. Ramola. ** Dr. Preeti Rani

*Professor & Head, Department of Commerce, H.N.B. Garhwal University Campus, Badshahithaul. E-mail:singh.ramola@gmail.com ** Associate Professor and Head, Department of Commerce,

Govt. P.G. College, Kotdwar E-mail:Dr.preetirani@gmail.com

Impact of ICT (Information and Communications Technology) in Innovative Banking Industries of India

Abstract:

ICT (Information and Communications Technology) has taken the center stage in almost every aspect of human endeavor. ICT provide guidelines of communication & technology in today's competitive era for the entire Indian banking industries. ICT help banks to improve the efficiency and effectiveness of services offered to customers, and enhances business outsource processes, managerial decision making, and workgroup collaborations, which strengthens their competitive positions in rapidly changing and emerging economies. This paper considers the impacts of ICTs on the banking industry of the 21st century. In this innovative study regarding the ICT for banking industries of India have four parameters, namely: productivity, market structure, Innovation and value chain which were used for benchmarking. Case studies of the IT platform employed by Indian banks were included to for a more informed inference. Right information and communication is very important for uplifting the economic and social growth of any organization especially in Indian banking industries which is based on enstomer loyalty and reliability. Online banking, ecommerce, and internet banking is playing a very significant role regarding the customer satisfaction for Indian banking industries through the ICT. Business process outsourcing is also involved with the ICT for upgrading and improving the economic structure of innovative banking industries of

भारतीय साहित्य में नारी विषयक दृष्टि

at the series

th the series approve
series and of the contract an

Witness william & will be the

आला का हमारी विषय है। भारतीय साहित्य में नाठी निषयक दृष्टि । यदि । विषय से चित्रण करें को आरी प्रधान साहित्य की प्रमुख्ता है किंतू समस्त आरख्य करते , अस्योक्त है क्योंकि भारतीय स्वतित्व असीम विभाल तथा विस्तृत है। इसी कारण ह स्वाहित्य को अलगीत महाकाँवें कालियास को धन्धों में वर्णित नारी के विविध रूपा का वर्ण , कालियास और उनके यन्थ भारतीय साहित्य के सभी विद्वान पूर्ण रूप से परिधन है। उनके उन रघुवश और कुमारसम्ब नाम के दो महाकाव्य मेघदूत नाम का खण्डकाव्य नथा मार्जन विक्रमोवंशीयम तथा अभिज्ञान शाकुन्तलम नाम के तीन नाटक आवाल बृद्धों का जात है संस्कृत हुन् का अध्ययम उन्हीं के ग्रन्थों से आरम्म होता है और यह कह दे तो भी अतिशयोक्ति न हाती कि स्था साहित्य के अध्ययन की परिसमाप्ति भी उन्हीं के ग्रन्थों को ठीक-ठीक समझने में हो सकती है साहित्य और कालिदास इन दोनों का अटूट संबंध है संस्कृत साहित्य का सौरठव और सीज्य बहुन कर इन्हीं के ग्रन्थों पर निर्भर है जिस प्रकार रामायण और महाभारत ये दों आर्श काव्य सार संस्कृत ह कवियों के उपजीव्य है उसी प्रकार कालिदास के काव्य नाटक उनके पश्चाद्वती सभी कवितः है है अनुकरणीय बनें है यदि संस्कृत साहित्य से कालिदास को हटा दिया जाए तो उसमें महत्वपूर्ण ग्रन्थों के रहते हुये भी उस गीर्वाण वाणी की लोकप्रियता में कमी आ जाएगी वेद उपन मगवतगीतादि धर्मशास्त्र तथा मोक्षशास्त्र के ग्रन्थ महामारत के अनेक पर्वो एवं पुरानों में और स्वतंत्र का से भी विद्यमान अर्थशास्त्र इत्यादि ग्रन्थ ये सब कालिदास के ग्रन्थों के उपजीव्य है।इतना ही नहीं उनके ग्रन्थों में संगीतादि अन्य शास्त्रों के विषय भी पाए जाते हैं। कालिदास द्वारा रचित प्राप्तुता शाकुन्तलम सर्वाग सुन्दर उपदेशों से भरी हुई मानव स्वभाव की विचित्रता को प्रदर्शित करने कर देशों और कालों के अनुरूप कमनीय अभिनय कलापूर्ण कृति के रूप में प्रकट हुई और उसर 👵 जगत में सदा के लिए सर्वल स्थान प्राप्त कर लिया विद्वानों में यह श्लोक प्रसिद्ध ही है

"काव्येशु नाटक रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला। तत्रापि च चतुर्थोड़ कस्त्रतन श्लोकचतुब्यम।।"

यह नाटक किसी भी रूप में रहे इसकी हृदयहारिता ज्यों की त्यों बनी रहेगी। अधिक क्या कह जाएं शकुन्तला की एक पंक्ति भी दोशग्रस्त नहीं है इतना ही नहीं प्रत्येक पंक्ति में एक न एक विश्वन है। अभिज्ञान शाकुन्तलम की नाधिका शकुन्तला का जन्म स्वर्गीय अत्सस मेनका के गर्म से क्षेत्र के विश्वनित्र ऋषि से हुआ जिनके भयकर तप से स्वर्ग के स्वामी इन्द्र इतने डर गए कि उन्हें के लिए मेनका का नीचे मृत्युलोक में भेजा कन्या के उपलब्ध ही माता उसे वन में छोडकर स्वर्ग लौट जाती है तब उस छोड़ी गई बालिका की देखनाल बर के विष्करते हैं और उसका तब तक पोषण करते हैं जब तक कण्वऋषि उसे आकर उठा नहीं है और उसका नाम शकुन्तला (पक्षियों द्वारा पोशित) रख देते हैं और उस अपनी पालिता कन्या बर्ण करते हैं उसका नाम शकुन्तला (पक्षियों द्वारा पोशित) रख देते हैं और उस अपनी पालिता कन्या बर्ण करते हैं



Dr. Seema Kumari

Editors

Dr. Ajit Singh

Assistant Professor, Department of Economics MMH College, Ghaziabad, India

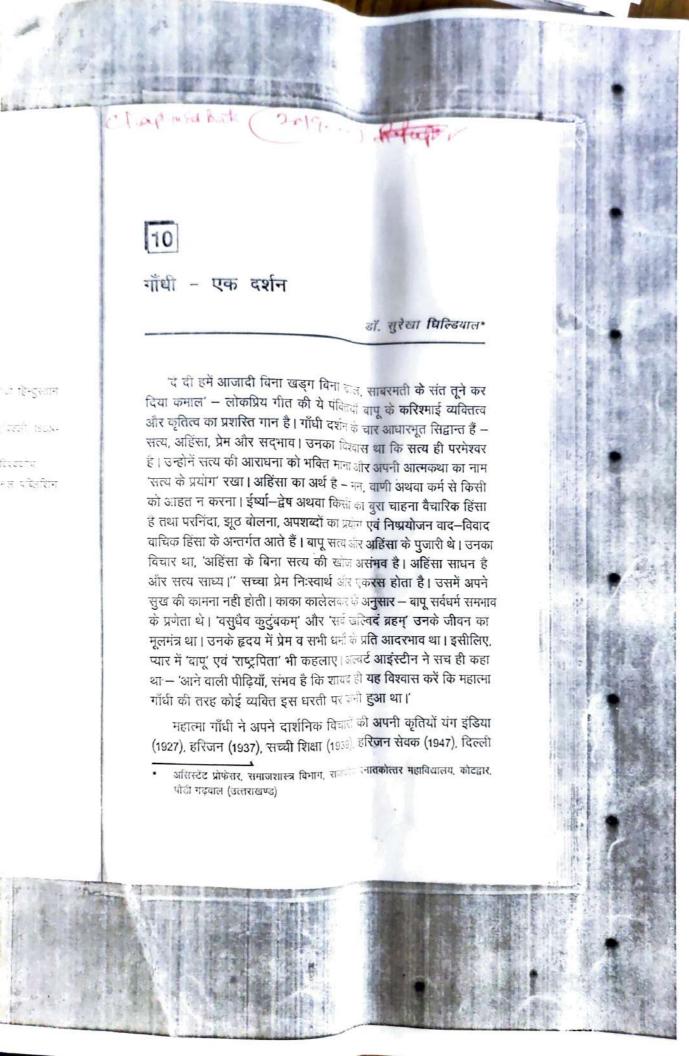
Dr. Preeti Sharma

HOD, Department of Home Science, Govt. P.G. College, New Tehri Tehri Gharwal, Uttarakhand, India

CREUN

Vandana Publications

Lucknow * Moradabad * Dehradun * New Delhi



Annex-JOAJXX

Digital India-Transforming India into Aknowledge Economy

Dr. Richa Jain Assistant Professor, Department of Commerce Dr. PDBH Government Post Graduate College. Kotdwara, Uttarakhand

Abstract

The peregrination towards a digitally connected commenced in early 1990's and 2000's with the exordium of a wide range of e-governance programmes. However, its impact and influence was inhibited. Digital India stands for transforming India into a digitally empowered cognizance economy. Besides it is additionally an initiative of regime of India to integrate sundry regime departments and people of India. It additionally aims at ascertaining that regime accommodations are made available to every denizen electronically by reducing paper work. With a clear vision, present regime is pushing ahead the concept of digital India initiative to transform the country into a digitally empowered society. With the launch of this initiative, regime aims to reach out to denizens in the remotest of locations and additionally make them a component of India's magnification story. As it is believed that technology is a key driver in causing disruptive change, digital implements will certainly empower denizens and prove to be a game-changer. Digitalisation in India globally provided the most needed thrust to the nine fundamental of magnification areas namely Broadband areas, Macrocosmic access to mobile connectivity and Public internet access programme among others. Digital India would comparably bring in public goodwill through mandated calculated of government's accommodation electronically; Unique ID and e-Pramaan predicated on authentic and standard predicated interoperable and integrated regime applications and data substratum. With the source of funding for most of the e-governance resource at present is through budgetary reserves of mentioned ministries/departments in central or state government. Of tardy preludes of sundry schemes by major telecom players such as cutting down cost of data packs have certainly resulted in paramount elevate in internet users in rural segments. Additionally in-situ, launching of frugal and affordable range keenly intellective phones has contributed to the cause. In a way untapped potential in rural markets can withal be targeted through digital designates. The paper fixates on what digital mediums of marketing can be utilize these digital mediums to expand their consumer base to the less emerged segment of consumers.

Introduction

entire ecosystem of public accommodations through the utilization of information technology, Regime of India has additionally undertaken the digital India program with a major vision to transform India into a digitally empowered society as well as erudition economy. Besides digital India additionally covers several developmental aspects such as promoting investments, amending ease of doing business, engendering IT jobs, providing financial inclusion, inspiriting entrepreneurship, promoting literacy, catalyzing magnification across all sectors and withal emboldening women's participation in professional, economic and convivial arena. Rural marketing betokens to develop promote and additionally engender cognizance about goods and distribute the same to rural customers meet the desiderata, wants and authoritatively mandered of rural customers and additionally to elongate the outreach of the company to consummate the object of organization.

and communication technology. Digital India is an invative thought of Mr. Narendra Modi regime which is withal an initiative of GOI to integrate regime departments and people of India. It rudimentally

Certainly India is on the cusp of an information technology revolution. In order to transform the This is generally done to identify and additionally

Digital India as such is a zealous project which the outcome of changes brought by information

Sección (2019-20)
(E-4)

An Introduction to APICULTURE

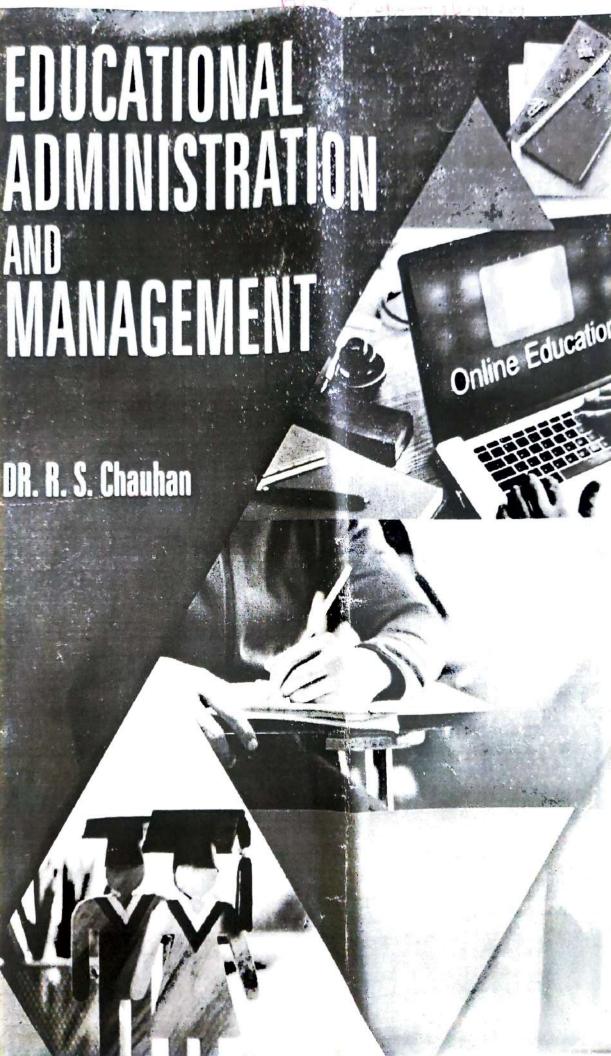
- For B.Sc. Students -

Dr. Sunita Negi

Department of Zoology Govt. (P.G.) College Kotdwar (U.K.)

> SPECIMEN COMY NOTE OR SALVE

KEDAR NATH RAM NATH



19-20 (Book)

T=2

Pragati's

ADVANCED ALGEBRA

(For B.Sc. III Semester, Paper-I of Sri Dev Suman University, Uttrakhand)



RAJNEESH SAINI

NET/JRF/SLET Qualified Head, Deptt. of Mathematics Swami Vivekanand College, ROORKEE

Dr. R.K. PANDEY

M.Sc., Ph.D.

Head, Deptt. of Mathematics
D.B.S. (P.G.) College,
DEHRADUN

Dr. TRIPTI DIXIT

M.Sc., N.E.T.
Deptt. of Mathematics
Govt. P.G. College
KOTDWAR

Dr. B.S. RAWAT

M.Sc., Ph.D. Deptt. of Mathematics D.B.S. (P.G.) College, DEHRADUN

ANKIT SAINI

NET, JRF, SET, GATE Deptt. of Mathematics S.V. College of Education ROORKEE





19. 0 (Book)

Pragati's

GROUP THEORY

(Strictly according to new Unified Syllabus for B. Sc. Semester II, Students of Sri Dev Suman University)



RAJNEESH SAINI

NET/JRF/SLET Qualified
Head, Deptt. of Mathematics
Swami Vivekanand College
Roorkee (Uttrakhand)

Dr. TRIPTI DIXIT

M.Sc., Ph.D.

Department of Mathematics Govt. Post Graduate College, Kotdwar (Uttrakhand)

Dr. YUVRAJ

Associated Professors
Head, Deptt. of Mathematics
Government Degree College,
Barkot, (Uttrakhand)

ANKIT SAINI

NET-JRF, SET, GATE

Department of Mathematics

Swami Vivekanand College of Education

Roorkee(Uttrakhand)



WITH BEST COMPLEMENTS SANDEEP SHARMA ASM

SPECIMEN COPY



PRAGATI PRAKASHAN

Scan copy of Book Chapter, Chapter volume, proceeding paper

2020-21



) froceed.

T=II

Prevalence of Menacanthus Cornutus (Schommer, 1913) Infesting Poultry Birds (Gallus Gallus Domesticus) of Uttarkashi District

Dr. Adesh Kumar^{*}, Dr.Ashok Kumar^{*}, Dr.Surman Arya^{*} and Dr.Rakesh Kumar^{**}

*Parasitology Laboratory, Department of Zoology, Government Post Graduate College, Kotdwara, Uttarakhand

"Department of Organic Agriculture and Natural Farming, CSK Himachal Pradesh Kirishi Vishvavidyala, Palampur, Himachal Pradesh

Abstract

Fourteen localities of district Uttarkashi have been extensively surveyed for the record of prevalence and intensity of infestation of chicken body louse, M. cornutus during the year 2007-2008. As many as 541 domestic fowl in the villages (free range poultry) as well as in poultry farm were surveyed. Out of 541 poultry bird, 45 birds (8.32%) were harboured M. cornutus. The highest prevalence rate (55.56%) has been recorded from the Purola block of the overall infestation (8.32%). Effect of host related factor has also been documented. Male host bore higher

Physico-Chemical Properties and Productivity of Lentil (Lens Culinaris Medic.) And Wheat (Triticum Aestivum L.) Under Existing Ahrihorticulture System in Mid Hills of Uttarakhand

Dr.Sandeep Kumar', Dr. Manoj Kumar Riyal' and Dr.D.S. Chauhan"

*College of Forestry, Ranichauri (VCSG UUHF, Bharsar), Uttarakhand
"Department of Physics, Government P. G. College, Kotdwara, District Pauri Garhwal,
Uttarakhand

Abstract

The current study estimated the soil properties and productivity of agriculture crops under the peach, plum and apricot based Agrihorticulture system in Tehri Garhwal district of Uttarakhand. The in Tehri Garhwal district of Uttarakhand. The results of study reviled that the soil bulk density results of study reviled that the soil bulk density and soil electrical conductivity were increased with and soil electrical conductivity were soil phincreasing soil depth whereas the value of soil phincreased with increasing soil depth and soil were decreased with increasing soil depth and soil organic carbon, soil organic matter and soil organic

١

Education Towards Developing Responsible Environmental Behaviour as Skill

Dr. Surabhi Misra*, Dr. Yogita**

* Assistant Professor, Department of Physics **Assistant Professor Department of Mathematics: Government Post Graduate College, Kotdwara, District Pauri Garhwal, Utterakhand

Abstract

Environment is the surrounding which provide conditions for development and growth as well as of danger and damage. Skill is ability to perform any task with determination and teacher is the best skill developer. Teacher enhance any skill in students. Environmental study is the scientific study of our environment. Environmental education is not an easy task, it is not simple and not just teaching but it is responsibility to explore environmental issues, engage in problem solving and take action to improve our environment and to aware to keep good environment. The aim of this study is to develop the environmental behaviour as a skill so that anyone can understand environmental issues and ready to take responsible decisions in favour of save environment. With the help of this skill we

develop an attitude of concern for environment which improve environmental quality.

Keywords: Responsibility, Environment, Behaviour, Skill, Concern.

Technologies and industrial revolution in the recent era led to deforestation, manufacturing of hazardous material. Environmental degradation have been consequences of exploitation of resources. It need urgent action to mitigate the damage and restore the quality of the environment. Objectives and aims of environmental education programs include developing students with knowledge, skills, positive attitudes and motivation to take out the environment out of problem. There are various factors which involved to develop the responsible environmental behaviour and some educational method and task are going to be very much effective for developing this responsible behaviour as skill.

As we already know that skill is the ability to perform any task. If anyone have a skill it means that task must be done to be near about perfection and it works always and each and every time. This is the requirement which is essential and is known as concern, in this study it is concerned about the environment. The other important thing is the knowledge of the relevant environmental concepts. Now to progress further the another thing that equally important to carry the responsible environmental behaviour is knowledge of environmental problems and Issues.

Hungerford and his associates have analysed, designed and tested a set of instructional materials based on his research(Hungerford, 1985). The material tress a hierarchical- approach involving four levels of activities (Hungerford pp. 28-29 in Disinger,1987). It

Education Towards Developing Responsible Environmental Behaviour as Skill

Dr. Surabhi Misra*, Dr. Yogita**

* Assistant Professor, Department of Physics **Assistant Professor, Department of Mathematics

Government Post Graduate College, Kotdwara, District Pauri Garhwal, Uttarakhanda

Abstract

Environment is the surrounding which provide conditions for development and growth as well as of danger and damage. Skill is ability to perform any task with determination and teacher is the best skill developer. Teacher enhance any skill in students. Environmental study is the scientific study of our environment. Environmental education is not an easy task, it is not simple and not just teaching but it is responsibility to explore environmental issues, engage in problem solving and take action to improve our environment and to aware to keep good environment. The aim of this study is to develop the environmental behaviour as a skill so that anyone can understand environmental issues and ready to take responsible decisions in favour of save environment. With the help of this skill we

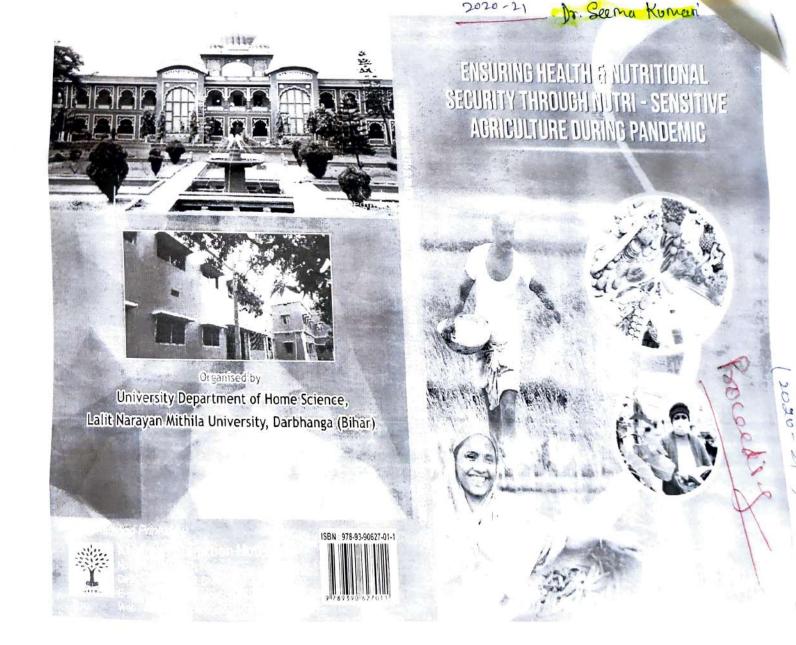
develop an attitude of concern for environment which improve environmental quality.

Keywords: Responsibility, Environment, Behaviour, Skill, Concern.

Technologies and industrial revolution in the recent era led to deforestation, manufacturing of hazardous material. Environmental degradation have been consequences of exploitation of resources. It need urgent action to mitigate the damage and restore the quality of the environment. Objectives and aims of environmental education programs include developing students with knowledge, skills, positive attitudes and motivation to take out the environment out of problem. There are various factors which involved to develop the responsible environmental behaviour and some educational method and task are going to be very much effective for developing this responsible behaviour as skill.

As we already know that skill is the ability to perform any task. If anyone have a skill it means that task must be done to be near about perfection and it works always and each and every time. This is the requirement which is essential and is known as concern, in this study it is concerned about the environment. The other important thing is the knowledge of the relevant environmental concepts. Now to progress further the another thing that equally important to carry the responsible environmental behaviour is knowledge of environmental problems and

Hungerford and his associates have analysed, designed and tested a set of instructional materials based on his research (Hungerford, 1985). The material stress a hierarchical-approach involving four levels of activities (Hungerford pp. 28-29 in Disinger, 1987). It



Chapt in st Rock (2010-21)



Covid-19: Society and Environment: A Lesson for Future

Dr. Smita Badola*, Dr. Tanu Mittal**

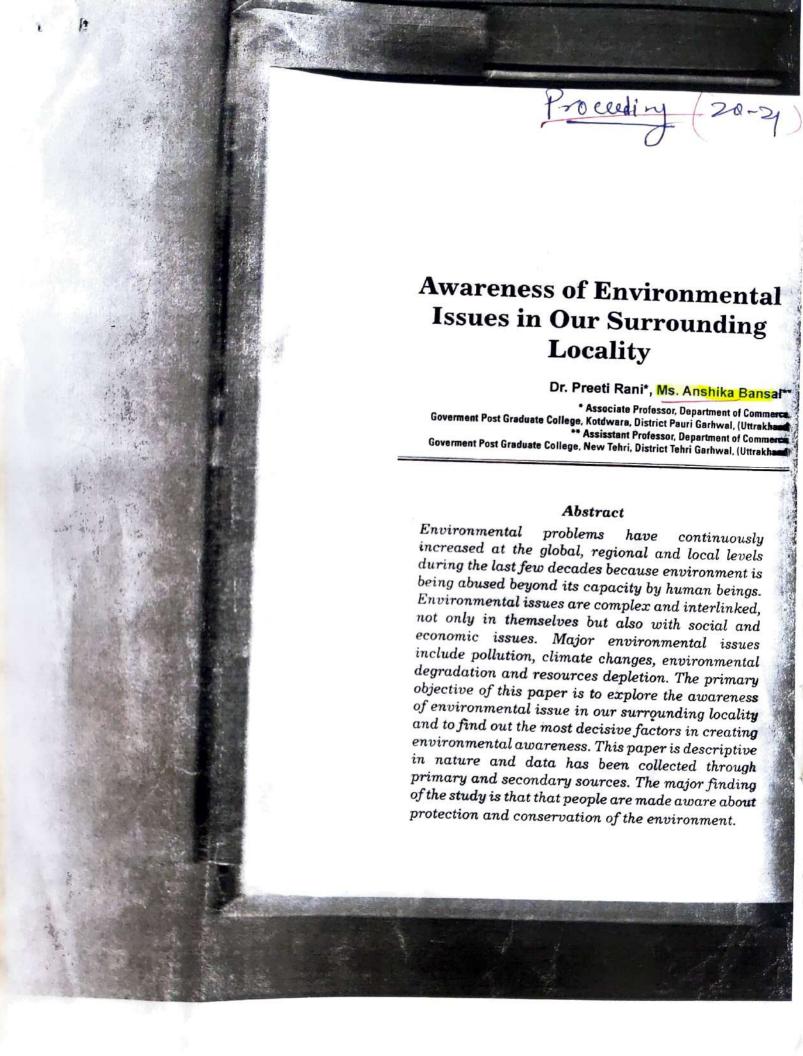
Cassiliate Professor and Head, Department of Zoology, College Kotdwara, District Pauri Garhwal, Uttarakhand Professor and Head, Department of Sociology, Cassilian Kotdwara, District Pauri Garhwal, Uttarakhand

Instruct

equidence has brought difficult situations for entrans across the world. The impact, however, evere for others in the Third World Countries, and whose conditions may after deteriorate it not put into considerations. While was a decided different dimensions of life and society.

The same this paper examines the impact of the outbreak with Presentence on the environment and society and mitigation measures of this pandemic section in this dology of this paper reviews secondary that which were collected through various magazines. They have a papers and published journals.

tudy it accept that for the recovery from this condition, then materialism measures and policy interventions must be



(rocced: fiter rox-11)

उच्च शिक्षा एवं इक्कीसवीं सदी

डॉ॰ सपमा भट्ट थलेडी

*अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, बी॰एड॰ विवास

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार, जिला पौड़ी गढ़वाल, उनगवण्ड

प्रस्तावना

माध्यमिक शिक्षा की समाप्ति के उपरान्त उच्च शिक्षा प्रारम्भ होती है। उच्च शिक्षा महाविद्यालयां विश्वविद्यालयों एवं विशिष्ट शिक्षा संस्थानों आदि में प्रदान की जाती है। यद्यपि आधुनिङ प्रकार की उच्चशिक्षा की आधारशिला ब्रिटिश काल में रखी गयी थी, किन्तु प्राचीन काल न गुरुकुलों आश्रमों तथा बौद्ध संघारमों में छात्र कुछ विषयों का गहन अध्ययन कर उच्च शिक्ष प्राप्त करते थे। आधुनिक भारतीय उच्च शिक्षा की आधार शिला सन् 1857 में रखी गयी थी।

सन् 1854 में वुड के घोवणा पत्र में बंबई, कलकत्ता व मद्रास में तीन विश्वविद्यालय खोले गये थे। यद्यापि सन् 1857 में देश में उच्च शिक्षा के लगभग 23 कॉलेज विद्यमान थे। स्वतन्त्रता के उपरान्त भारत में विगत 63 वर्षों से अधिक की अवधि में विश्वविद्यालयाँ की संख्या लगभग 18 गुना से अधिक हो गयी। वर्तमान समय में रनातक, स्नातकोत्तर, अनुसंधान तथा डिप्लोमा स्तरों में अध्ययनरत छात्रों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही थी। प्राचीन तथा मध्यकाल के कुछ उच्च शिक्षा केन्द्र अपनी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध थे, जिनमें अध्ययन हेतु दूर-दराज से छात्र आते थे। नालन्दा, तक्षशिला आदि विश्वविद्यालयों में चीन, कोरिया, कम्बोडिया, जावा, सुमात्रा आदि देशों से अध्ययन हेत् छात्रों के आने के स्पष्ट उल्लेख मिलते हैं।

Frouding (20-21

Awareness of Environmental Issues in Our Surrounding Locality

Dr. Preeti Rani*, Ms. Anshika Bansaf

* Associate Professor, Department of Commerce

Goverment Post Graduate College, Kotdwara, District Pauri Garhwal, (Uttrakhama) ** Assisstant Professor, Department of Commerce

Government Post Graduate College, New Tehri, District Tehri Garhwal, (Uttrakha

Abstract

continuously have problems Environmental increased at the global, regional and local levels during the last few decades because environment is being abused beyond its capacity by human beings. Environmental issues are complex and interlinked, not only in themselves but also with social and economic issues. Major environmental issues include pollution, climate changes, environmental degradation and resources depletion. The primary objective of this paper is to explore the awareness of environmental issue in our surrounding locality and to find out the most decisive factors in creating environmental awareness. This paper is descriptive in nature and data has been collected through primary and secondary sources. The major finding of the study is that that people are made aware about protection and conservation of the environment.

202 Environment Issues and Mitigation Strategies

पेहों से जि**पक कर मजदूरों** की कुल्हाड़ियों से पेड़ों **को बचाती थी।** यह आन्दोलन पूर्ण सफन रहा। **वर्ष 18**77 में यह नाश दिया गया –

क्या है जंगल के उपचार? मिही पानी और बयार मिही पानी और बयार जिन्दा रहने के आधार

वनों वो बचाने के लिए सन् 1980 में वन संरक्षण अधिनियम पारित किया गया। हालांकि वन की सुरक्षा के लिए यह अधिनियम जहाँ लाभप्रद सिद्ध हुआ है, वहीं इस अधिनियम का लागू होने के बाद आमजन ने धीरे-धीरे वनों से दूरियाँ बनानी शुरू कर दी। नतीजा पश्चिनियम लागू होने से पूर्व जिन वनों को आमजन अपने पाल्यों की तरह पालता—पोस्ता था, अधिनियम लागू होने के बाद उन्हीं वनों को वह दुश्मन की तरह देखने लगा। अधिनियम में बनों के कटान और वन भूमि का उपयोग दोनों ही प्रतिबन्धित हैं, जिस कारण ग्रामीणों को वनों से मिलने वाला उनका हक—हकूक समाप्त होता चला गया। वर्तमान में जंगलों की आग लगने वाली करीब अस्सी फीसद घटनाएँ मानव जनित होती हैं और इन घटनाओं के पीछे कड़े वन कानून ही जिम्मेदार हैं। पहाड़ी लगातार राज्य, की भौगोलिक स्थिति के अनुरूप वन कानूनों को शिथिल बनाने की मांग कर रहा है, लेकिन वन कानूनों का शिकजा उसी तेजी से उस पर कस रहा है। वन कानूनों के फेर में पहाड़ के सैकड़ों गाँव आज भी सडक से बंबित हैं, ऐसे में ग्रामीण वनों को मित्र कम और शत्रु अधिक मानने लगे हैं। आमजन व बनों के मध्य पनप रही दुश्मनी की रही–सही कसर गुलदार, जंगली सुअर व बंदरों ने पूरी कर दी।

वृक्षों की महत्ता को देखते हुए वृक्षारोपण कार्यक्रम व्यापक रूप से चलाया जा रहे हैं, लेकिन सरकारी रतर पर होने वाले यह कार्यक्रम महज खानापूर्ति साबित होते हैं। जिन रामीणों को रोपित पौधों का संरक्षण करना है, उनकी इस वृक्षारोपण में कोई दिलचस्पी नहीं रहती, ऐसे में वन बढेंगे, इसकी कल्पना करना भी बेमानी है। उत्तराखंड के परिपेक्ष्य में यह जरूरी है कि आमजन को पूर्व की भाति बनों से जोड़ा जाए और यह तभी संभव है जब दनों से आमजन को आर्थिकी मिले। जब तक आमजन बनों को लेकर जागरुक नहीं होगा, पर्यावरण सुरक्षित रहेगा, यह सोचना बेकार है।

संदर्भ

- 1 पर्यावरण सरक्षण एस०पी० कलवार 2007
- 2. पर्यावरण और पारिस्थितिकी, डॉ० बी०पी०राव, 2014-15
- 3. पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण भूगोल, पी०एस०नेगी, 2014-15

(2020-21)

- 11511411 2

22

पर्यावरणीय वृक्ष सम्पदा

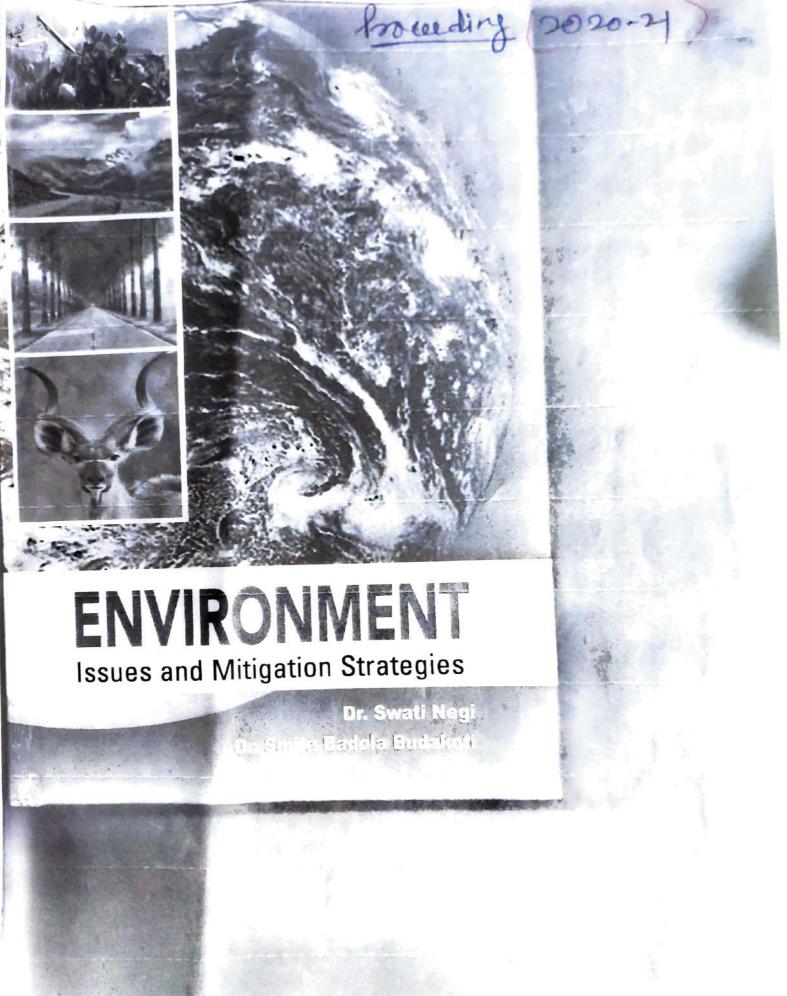
डॉ॰ अरुणिमा *

*अमिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार, जिला पौड़ी गड्वाल, उत्तराखण्ड

वेद हमारे मार्ग प्रदर्शक ही नहीं, अपितु जीवन भाग्य विधायक हैं। वैदिक काल का विकास प्रकृति की अंक में हुआ है। वैदिककालीन पर्यावरणीय चिन्तन का प्रथम साक्षात् परम पुनीत वेदों में हुआ, वेद ही हमारी चराचर रचना की कुंजिका हैं। मनुष्य एवं प्रकृति के अन्योन्याश्रित सम्बन्ध को समझने वाले ऋषियों के विचार, उनके दृष्टिकोण अनुकरणीय हैं. उस परमपिता परमेश्वर की सत्ता को स्टीकार-कर वृक्षों को देवत्व से अलंकृत कर उसका वन्दन—अर्थन—स्तुति की है।

'सर्वज्ञान मयो हि सः' अर्थात् वेदों में समस्त विद्याओं के सूत्र विद्यमान हैं जिनसे अधिकाधिक मात्रा में पर्यावरण सम्बन्धी घटक तत्त्व विद्यमान हैं। पर्यावरण को अंग्रेजी में Environment कहा गया है, इसका अर्थ है Surround अर्थात् घेराव, पड़ोस, चारों ओर का प्रदेश या स्थान है। 'पर्यावरण' जैसे विकसित शब्द की व्युत्पत्ति परि+आ+वृ धातु से ल्युट् प्रत्यय से निर्मित हुई है। परि उपसर्ग का अर्थ अति व्यापक चारों ओर बहुत, अत्यन्त और सामने एवं घिरा हुआ है। आ उपसर्ग का अर्थ निकट, पार्श्व की ओर, सब ओर से आवृत है। वृ धातु का अर्थ वरण करना, चुनना, पसन्द करना, ढकना, छिपना, व्याप्त होना आदि है। अर्थात् पर्यावरण चारों ओर का वह आवरण है, जिसमें समस्त प्राणियों का या समाज का निवास होता है। पर्यावरण प्राणी सभाज का वह आवरण है, जो अपनी विशुद्धता—अविशुद्धता से प्राणियों को प्रभावित करता है। मनुष्य के सम्पूर्ण क्रियाकलाप भौतिक वस्तुएँ तथा समस्त



Book 202

T=8

महात्मा गाँधी का चिंतन और विज्ञान

संपादकगण

प्रदीप कुमार डॉ. तृप्ति दीक्षित डॉ. अरुण कुमार चतुर्वेदी



साहित्य संचय

ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन

हम करते हैं समय से संवाद

हिन्दी भाषा एवं साहित्य

बी.ए. प्रथम वर्ष हिन्दी प्रथम प्रश्नपत्र

ब्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय बादशाहीशील, टिहरी गढ़वाल के निर्धारित पाव्यक्रमानुसार स्वीकृत

डॉ. शोभा रावत

रिटी किला, नेंड, यू मेर)

नायकोच्य प्रोफेसर, हिन्दी विश्वात, राजकीय स्नातकोच्या पर्वावसालय कोटद्वार, पीडी गडवाल, डक्सावरणः

> भागीरखी राणा (यूजीसी नंट, यूसेट)

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) राजकीय प्रशानिद्यालय नैनोडांडा (चौडी गढवाल)



अंकित प्रकाशन

हन्द्रानी (नैनीताल)

प्रकाशक :
अंकित प्रकाशन
चन्द्रावती कालोनी
पीलीकोठी, हत्यांच : 05946-263139
मोनाइल : 09412085962
Email ankitprakashan@gmail.com

© लेखक

त्रहाम संसद्धान : आजा

हिन्दी थाषा एवं साहित्य

ISBN: 978-81-7988-209

ले. के. ग्राफिक्स (इंडिया) जयबीर सिंह 97 1/782194 9312557182

> मुद्रक: बालाजी ऑफसेट दिल्ली-110032 09810643220

当当

Day Arbiel and Arka

z (aksesementa/earzozo ez)

Dr. Preeti Ramillittal Dr. Anshila Bankal





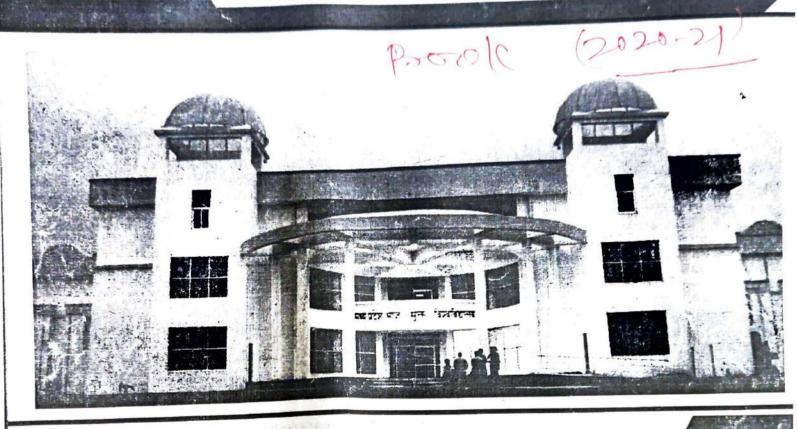


SULTANCHAND & SONS

ही.कॉम. तृतीय वर्ष व्यावहारिक अर्थशास्त्र (समुह-स), द्वितीय प्रश्नपत्र (वैकल्पिक)

वित्तीय बाजार एवं विनियोग प्रबंध

(FINANCIAL MARKET AND INVESTMENT MANAGEMENT)





Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal (Established under an Act of State Assembly in 1991)

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल

Kolar Road, Near Swarn Jayanti Park, Yashoda Vihar Colony, Chuna Bhatti Bhopal, Madhya Pradesh-462016



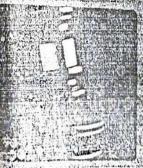
in thoolex

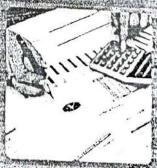
LAWAID PRACTICE

(Assessment Year 2020 2/1)

Dr. PreetiRani Hital • Br. Anshika Bansal







SULTANCHAND & SONS

AND THE PARTY OF T

Book 20 21

Published by:

Solar Books

4239A/1, Veer Sadan, Ansari Road (Behind Delhi Hospital) Darya Ganj, New Delhi-110002 Phone: 011-43505201/02/03 e-mail: sales.solarbook@gmail.com

Essentials of Educational Technology and Curriculum

Reserved
First Published 2020

ISBN 978-93-85289-61-3

No part of this book may be reprduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, Including photocoying, recording or by any information storage and retrieval system, with-out permission in writing from the Publishers.

PRINTED IN INDIA
Published by

THE STREET STREE

CDr. Ramesh Charley

KNOW YOUR LEARNING STYLES

First Published 2020

ISBN 978-93-89224-92-4

[No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of the publisher].

Published in India

KUNAL BOOKS

(Publisher & Distributors)

4648/21, 1st Floor, Ansari Road, Darya Ganj New Delhi-110002

Ph.: 011-23275069, Mob.: 9811043697, 9868071411

E-mail: kunalbooks@gmail.com Website: www.kunalbooks.com

Laser Typeset by: Gurpal Computers, Delhi

Printed at: Delhi

2 chapt in Ed Book (2010-24)

FUNGI, LICHEN, VIRUSES AND BACTERIA

MSCBOT-501

Expert Committee

Prof. J.C. Ghildiyal

Retired Principal

Government PG College, Karnprayag

Prof. G.S. Rajwar

Principal

Government PG College, Augustmuni

Prof. Lalit Tewari

Department of Botany

DSB Campus, Kumaun University, Nainital

Dr. Hemant Kandpal

School of Health Science

Uttarakhand Open University, Haldwani

Dr. Pooja Juyal

Department of Botany, School of Sciences

Uttarakhand Open University, Haldwani

Board of Studies

Prof. C.M. Sharma

Department of Botany

HNB Garhwal (Central) University

Srinagar

Prof. R.C. Dubey

Head, Deptt of Botany & Microbiology

Gurukul Kangri University,

Haridwar

Prof. Y.S. Rawat

Department of Botany

DSB Campus, Kumaun University

Nainital

Prof. P.D. Pant

Director, School of Sciences

Uttarakhand Open University,

Haldwani

Dr. Pooja Juyal

Department of Botany

School of Sciences

Uttarakhand Open University, Haldwani

Programme Coordinator

Dr. S.N. Ojha

Assistant Professor
Department of Botany,
School of Sciences
Uttarakhand Open University,

Haldwani, Nainital

Unit Written By:

Unit No.

1. Dr. Urmila Rana

1 & 2

UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY

Page 2

2 chaptings (2010-21)

Economic Botany, Genetics and Plant Breeding	BSCBO-302
2-Dr. Pooja Juyal	04
Department of Botany	
Uttarakhand Open University	
Haldwani	
3. Dr. Atal Bihari Bajpai	9 & 11
Department of Botany.	
DBS PG College	
Dehradun-248001	
4-Dr. Urmila Rana	10 & 12
Department of Botany,	
Government College,	

Course Editor

Prof. Y.S. Rawat
Department of Botany
DSB Campus, Kumaun University
Nainital

Chinayalisaur, Uttarakashi

Title : Economic Botany, Genetics and Plant Breeding

ISBN No. : 978-93-90845-77-4

Copyright : Uttarakhand Open University

Edition : 2021

Published By: Uttarakhand Open University, Haldwani, Nainital-263139

2 (hapt in fill hack (hom 21)

PLANT PHYSIOLOGY AND BIOCHEMISTRY

DECEMBER 1811

BSCBO-303

PLANT PHYSIOLOGY AND BIOCHEMISTRY



SCHOOL OF SCIENCES DEPARTMENT OF BOTANY UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY

Phone No. 05946-261122, 261123

Toll free No. 18001804025

Fax No. 05946-264232, E. mail info@uou.ac.in

htpp://uou.ac.in

BSCBO-303

PLANT PHYSIOLOGY AND BIOCHEMISTRY



SCHOOL OF SCIENCES DEPARTMENT OF BOTANY UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY

Phone No. 05946-261122, 261123
Toll free No. 18001804025
Fax No. 05946-264232, E. mail info@uou.ac.in
htpp://uou.ac.in



उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय Uttarakhand Open University

Editor

9 Chart in Ed. Book 25-21

Par 10 1 - 13 - 2020

To Whom It May Concern

This is to certify that Dr. Anju Thapliyal Assistant Professor.

Department of Zoology. Govt.PG College Kotdwar, Pauri Garhwal, has edited Nine Unit of B.Sc. III Practical Zoology Course Book (Laboratory Course BSCZO 304) Zoology programme and His her commendable work is acknowledge for Printing.

Dr. Shyam S.Kunjwal Programme Coordinators Prof.P.D.Pant Director School of Sciences

2020-21 Chaptin

Education Policy 2020

leditionis Dr. Alit Stingth, Die Ranju Groven Dr. Ravi Stillan

15BN No-978-93-90728-49-7 Dr. Seema Kumani, Chayder-16

Scanned by TapScanner

2020-21 SBN: 978 93 83632 2020-21 378-33-826

उत्तराखण्ड महिलाओं के प्रति सामाजिक असमानता की स्थि 'एक विश्लेषणात्मक विवेचना'

• प्रो० एस०एस० रावत* • डॉ॰ यरिना 🖦

"यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमते तत्र देवता:" अर्थात् जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवताओं का है, यह सत्य है कि स्त्रियों के सम्मान और प्रगति के बिना आदर्श और प्रगतिशील समाज की म्यानन नहीं है, किन्तु इस प्रकार के सभी संस्कार जो धर्मग्रन्थों, लोक गाथाओं और हमारी सांस्कृतिक प्रमान मिलते हैं, वे प्राय: हमारे सामाजिक व्यवहार का अंग नहीं बन पाते हैं। अतीत के लम्बे अनुभव में न्यार का भिव्य स्वरूप' मात्र पौराणिक कथानकों और धार्मिक प्रवचनों तक ही सीमित रहा है किन्तु कि जीवन में महिलायें सभी क्षेत्रों में उत्पीड़न और अन्याय का सामना करती रही हैं।

स्त्री और पुरुष समाज को विकास की सहज और सतत् गित प्रदान करने वाले दो अपिरहार्य उन्हें हैं। और पुरुष मात्र एक-दूसरे के पूरक ही नहीं, अपितु जीवन के अस्तित्व को बनाये रखने के महत्वपूर्ण भी हैं। किसी भी समाज की उन्नित के लिए पुरुषों के समान ही मिहलाओं को सहयोग आवश्यक है। इं साक्षी है कि प्रत्येक काल में मिहलाओं ने न केवल पारिवारिक स्तर पर अपितु विभिन्न क्षेत्रों में समाज के विकास में अतुलनीय योगदान किया है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, 'आप मुझे केवल सो अच्छे दीजिये। में भारतीय समाज का नक्शा बदल दूंगा'। सुप्रसिद्ध समाजनेत्री स्वर्गीय दुर्गाबाई देशमुख के अनुस्तर वालक की शिक्षा केवल एक व्यक्ति की शिक्षा है, जबिक एक बालिका की शिक्षा पूरे परिवार की शिक्ष दो निर्देश वाक्य समाज के नवनिर्माण एवं उसे नई दिशा देने में नारी की महत्ती भूमिका को उजागर करने हैं।

विश्व की आबादी आधार हिस्सा होने के बावजूद समाज में बालिकाओं व महिलाओं को उनक कि नहीं मिल पाया है। हमारे देश में स्वाधीनता के साढ़े छ: दशक से अधिक समय व्यतीत होने के कि महिलाओं के विकास की प्रक्रिया को अपेक्षित गित नहीं मिल पाई है। राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व कि पूर्णिमा आडवानी के अनुसार शताब्दियों पूर्व रूसो का यह कथन, 'मनुष्य स्वतंत्र पैदा हुआ है किन्दु जंजीरों से जकड़ा हुआ है', भारतीय समाज में बालिका-शिशु के सन्दर्भ में आज भी चिरतार्थ हो उठाता है. उसे स्त्री के रूप में जन्म लेने के साथ ही अनेक प्रतिबंधों और मर्यादाओं के अन्तर्गत जीवन यापन करने के कि विवश होना पड़ता है। महिलाओं के आगे बढ़ने के मार्ग में अनेक बाधायें हैं, जिनके कारण आम महिला धारा से कटी हुई है। देश में समग्र विकास की बात करने से पूर्व देश की आधी आबादी अर्थात महिलाओं

^{*}विभागाध्यक्ष, प्रौढ़ सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग, बिरला कैम्पस, हे०न०ब०ग०वि०वि० श्रीनगर गढ़वाल.

^{**}गृह विज्ञान विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोपेश्वर (चमोली).

Chaptin Ed book

(2020-34)

Impact of Coronavirus on Indian Economy

Dr. Richa Jain

Assistant Professor of Commerce
Dr. P.D.B.H.Govt. P.G. College, Kotdwar,
Uttarakhand
Akshatjain2610@Gmail.Com

Dr. Pulkit Agarwal

Head of Department,
Department of Commerce,
Mohammad Ali Jauhar University,
Rampur, U.P.

Abstract

Ecumenically coronavirus has developed a dangerous climate for humans. It has spread around the world and World Health Organization has called it as a pandemic. This is stopped due to infectious disease in many economic activities and has no solution to combat with corona so far. This has had economic implications for the globe and India. This could trigger recession in many parts of the world. Many of the products are imported from China in every sector in India, especially in the medicines and manufacturing industries.

Introduction

The World Health Organization (WHO) has confirmed that the latest outbreak of coronavirus is a international public health emergency, officials declared on Thursday, January 30, 2020. WHO proposed to name the disease 'acute respiratory disease 2019nCoV.' The 2019 novel corona virus (2019-nCoV) originating in Wuhan, China, has spread to 24 more countries alarming public health ascendant entities across the world. More than 4,900 people have died and over 132,000 have been infected ecumenically, according to the WHO on 13 March, 2020. According to Situation report-48 on Coronavirus disease 2019 (COVID-19) on 8th March 2020 Over 100 countries have now reported laboratory-substantiated cases of COVID-19. The report verbally expressed that ecumenically 105586 attested (3656 incipient) cases have been reported, whereas in China 80 859 substantiated (46 incipient) 3100 deaths (27 incipient) and Outside of China 24 727 attested (3610 incipient) 484 deaths (71 incipient) (WHO Situation Report-48, March 2020). Delhi health ministry mention six positive cases and Uttar Pradesh Govt. 10 so far. Karnataka has five coronavirus patients, Maharashtra 11 and Ladakh three. In addition, one case was registered in Rajasthan, Telangana, Tamil Nadu, Jammu and Kashmir, Andhra Pradesh and Punjab. Kerala also reported 17 cases, with three patients released last month after evaluating flu-like symptoms from the infectious infection (Economic Times, 2020).

Impacts

The commercial impact of the coronavirus epidemic on India is estimated to be about \$ 348 million, and the country's figures among the top 15 countries most affected by the slowdown in manufacturing in China disrupt world trade, according to the UN report. Whereas according to Asian Development Bank (ADB) the Covid-19.

An outbreak could have cost the Indian economy between \$ 387 million and \$29.9 billion in personal consumption losses (https://www.livemint.com/). For India, the trade impact is estimated at \$129 million for the chemical sector, \$64 million for textiles and apparel, \$34 million for the automotive sector, \$12 million for electrical machinery, \$12 million for leather products, and \$64 million for leather goods. \$13 million, \$27 million for metals and metal products, \$15 million for wood products and furniture. China has optically discerned a dramatic abbreviation in its manufacturing Purchasing Manager's Index (PMI) to 37.5, its lowest reading since 2004. This drop implicatively insinuates a 2 per cent truncation in output on an annual substructure. This has come as a direct consequence of the spread of corona virus (COVID-19) (The Hindu). When we optically discern the China's Share in total import to India, India's total electronic imports account for 45% of China. Around one-third of machinery and virtually two-fifths of organic chemicals that India purchases from the world emanate from China? For automotive components and fertilizers China's share in India's import is more than 25%. Around 65 to

Pages 206 215

Sustainable Development and Education Edited by, Dr. Nibedita Priyadarshani 158N: 978-93-88854-52-8

Edition, 2020

Published by: Discovery Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi (India)



Expansion of Tourism with Information and Communication Technology Usage

Dr. R.S. Chauhan¹ & Dr. Swati Negi²

Introduction

The revolution in ICTs has found protound implications for economic and social development. ICT has pervaded every aspect of human life whether its health, education, economics, governance or entertainment. The dissemination propagation and accessibility of these technologies are viewed to be integral to a country's development strategy. The most important benefit associated with the access to the new technology is the increase in the supply of information, which can be shared and disseminated to larger audience. Secondly it reduces the cost of productionas the knowledge produced can be transmitted, accessed and shared at the minimum cost. Thirdly it overcomes the constraints of distance by cutting across the geographic boundaries. Buyers and sellers are able to share information, specifications, production process etc across the national borders. It envisages and enables all to know the comparative advantage in the market economy leading to the larger markets and increased access to global supply chains.

Networking and information sharing definitely leads to demands for greater openness and transparency. Whether one wants to know the status of the Central Banks' Foreign Exchange Agency or the cost prize of potatoes in the local market, ICTs empowers the individual with the information access which is transparent. Efforts are under way to integrate ICTs to all sectors and developmental activity. Tourism is one such potential area which is closely interconnected with economy.

Information and communication technologies (ICTs) are the key factors in the area of tourism. Development of Information and communication technologies, ICTs enhanced production, analysis, storage, search and distribution. It includes a combination of hardware, software, telecommunications, Netware, Groupware and Humanware etc. It also provides enormous capabilities for

Dr. Swati Negi, Assistant Professor, Department of B.Ed., Pauri Carhwall Uttarakhand

Yan Cans

Scanned with CamScanner

Associate Professor & Controller of Examination, Sri Dev Suman Uttarakhand University Badshahi Thaul, (Tehri Garhwal)

Chart-ingd Book (2 1) Re-Parker 198

Sustainable Development and Education Edited by: Dr. Nibedita Priyadarshani ISBN: 978-93-88854-52-8 Edition: 2020

Eaition: 2020
Published by: Discovery Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi (India)



Expansion of Tourism with Information and Communication Technology Usage

Dr. R.S. Chauhan¹ & Dr. Swati Negi²

Introduction

The revolution in ICTs has found profound implications for economic and social development. ICT has pervaded every aspect of human life whether its health, education, economics, governance or entertainment. The dissemination propagation and accessibility of these technologies are viewed to be integral to a country's development strategy. The most important benefit associated with the access to the new technology is the increase in the supply of information, which can be shared and disseminated to larger audience. Secondly it reduces the cost of productionas the knowledge produced can be transmitted, accessed and shared at the minimum cost. Thirdly it overcomes the constraints of distance by cutting across the geographic boundaries. Buyers and sellers are able to share information, specifications, production process etc across the national borders. It envisages and enables all to know the comparative advantage in the market economy leading to the larger markets and increased access to global supply chains.

Networking andinformation sharing definitely leads to demands for greater openness and transparency. Whether one wants to know the status of the Central Banks' Foreign Exchange Agency or the cost prize of potators in the local market, ICTs empowers the individual with the information access which is transparent. Efforts are under way to integrate ICTs to all sectors and developmental activity. Tourism is one such potential area which is closely interconnected with economy.

Information and communication technologies (ICTs) are the key factors in the area of tourism. Development of Information and communication technologies, ICTs enhanced production, analysis, storage, search and distribution if includes a combination of hardware, software, telecommunications, Netware, Groupware and Humanware etc. It also provides enormous capabilities for

Yand are

Pages 206 215

Associate Professor & Controller of Examination, Sri Dev Suman Uttarakhand University Badshahi Thaul, (Tehri Carhwal)

Dr. Swati Negi, Assistant Professor, Department of B.Ed., Paum Carliwah Citatakhard

Pages 188 196

Sustainable Development and Education Control & Dr. Nibedita Priyadarshani

10000 2020

Noticher & Discovery Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi (India)



Sustainable Management of Water Resources in Garhwal Region An Overview

Dr. Swati Negi¹ & Dr. R.S. Chauhan²

ABSTRACT

Vatural resources management and its sustainability has been a thrust area among the research community since the 1950s. Natural resources such as forest, agraforestry, soil and water management are the main elements of the eco regional concept to strengthen natural resources management and partnerships of stakeholders across the system. It not only requires the strategic and applied research in this area but also generating awareness through education to create a conducive mind set regarding environment especially with management of water resources. Environment education can be utilised for growing consensus that an effective way to control natural resource degradation and the long-term sustainability of agriculture and rural communities can be achieved through rtegrated planning and management. The hill districts of Uttarakhand in the the hilly regions of the central Himalaya are spread over 51,000 sq km with a acculation of approximately five million, for whom the water resources have not teer systematically explored and developed.

water is forest (Jungle), and land (Jameen) are the three major life sustaining coreres of the ecosystem and about 70% population of the hilly region are pependent on these components for running their livelihoods. Large number of Central and State Government departments and organizations are working for according to the state and water supply in the state terrain in the area is rugged and steep and geologically, the mountains are many fault zones and are subject to seismicity, denudation, landslide azzaras and soil erosion. The soils are generally shallow and not well developed. or, an texture and depth. Since the topography of the region is the most cont factor for any developmental work, it is imperative that for abatement

The Sessor, Department of B.Ld Government P.C. College, Koldwar (Paul)

Statesor, Department of B.Ld SDS Uttarakhand University, Controller of

Pages 188-196

Sustainable Development and Education Edited by: Dr. Nibedita Priyadarshani

ISBN: 978-93-88854-52-8

Edition: 2020

Published by: Discovery Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi (India)



Sustainable Management of Water Resources in Garhwal Region An Overview

Dr. Swati Negi¹ & Dr. R.S. Chauhan²

ABSTRACT

Natural resources management and its sustainability has been a thrust area among the research community since the 1950s. Natural resources such as forest, agraforestry, soil and water management are the main elements of the eco regional concept to strengthen natural resources management and partnerships of stakeholders across the system. It not only requires the strategic and applied research in this area but also generating awareness through education to create a conducive mind set regarding environment especially with management of water resources. Environment education can be utilised for growing consensus that an effective way to control natural resource degradation and the long-term sustainability of agriculture and rural communities can be achieved through integrated planning and management. The hill districts of Uttarakhand in the the hilly regions of the central Himalaya are spread over 51,000 sq km with a copulation of approximately five million, for whom the water resources have not teer systematically explored and developed.

ಾರ್- ೨ , forest (Jungle), and land (Jameen) are the three major life sustaining conscients of the ecosystem and about 70% population of the hilly region are zesendent on these components for running their livelihoods. Large number = Central and State Government departments and organizations are working for are race use and development of quality of water and water supply in the state. the area is rugged and steep and geologically, the mountains are and are subject to seismicity, denudation, landslide -2:212: and soil erosion. The soils are generally shallow and not well developed, 2. 13 In texture and depth. Since the topography of the region is the most -czot factor for any developmental work, it is imperative that for abatement

sees Trepartment of B.Ed Government P.C. College, Koldwara (Pass)

⁻ See: Department of B.Ed SDS Uttarakhand University, Controller of

त्रिश्रण एशिया में राजनीतिक स्थिता एवं चिकास में भारत की भूमिका 81

उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र का मूर्तिशिल्प



डॉ० विनोद सिंह

उत्तराखण्ड की मूर्तिकला भारत की सगुण भिक्त भावना से जुड़ी सांस्कृतिक धरोहर है। मूर्तिकार स्वयं ध्यान मग्न होकर ऋषियों संतों एवं साधकों द्वारा परिकल्पित ध्यानमंत्रों का ही मूर्ति में दर्शन करता है। उत्तराखद्भ बण्ड में गढ़वाल तथा कुमाऊं के क्षेत्र, कला की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध हैं। गढ़वाल क्षेत्र के अन्तर्गत देवी-देवताओं की बहुत सी मूर्तियाँ प्राप्त होती हैं। उत्तराखण्ड के पर्वतों में प्रस्तर शिल्प-कला का उद्भव विक्रमी की प्रथम शताब्दी में ही हो चुका था। यहाँ प्राचीनतम और श्रेष्ठतम मूर्तिशिल्प प्रस्तर पर उकेरा गया है। प्रस्तर प्रतिमाएँ ही यहाँ बहु-संख्या में उपलब्ध हुई हैं। धातु मूर्तियाँ भी मिली हैं, परन्तु संख्या एवं प्राचीनता की दृष्टि से उनका स्थान द्वितीय है। वे

चतुर्थ शती से बारहवीं शती तक गढ़वाल के अलग-अलग स्थानों पर प्राप्त देव-मूर्तियाँ, ब्राह्मण धर्म, परम्परा के अन्तर्गत विभिन्न रूपों में प्राप्त हुई है, जैसे शेव, शिवलिंग और रूप प्रतिमाएँ तथा अन्य शेव प्रतिमाएँ, वैष्णव विष्णु की ध्रुव वेरा और विभव प्रतिमाएँ, दुर्गा, शिक की मूर्तियाँ, सौर सूर्य, नवग्रह, अष्ट दिक्पाल, ब्रह्म प्रकीर्ण व्यातर देवी-देवता और गंगा-यमुना देवियाँ। ये मूर्तियाँ कोमल तथा कमनीय कलेवरों से युक्त हैं और उनके मुख पर शान्त और गम्भीर आध्यात्मिक भाव परिलक्षित होता है। इनकी मुख मुद्राएँ सहज और आनन्द भाव से परिपूर्ण हैं, जिनमें लालित्य हैं। मूर्तियाँ लम्बे तथा पतले हाथ-पैरों से युक्त दिखाई गई हैं। जो हमें आन्ध्र की वेणी कला की स्मृति दिलाती है। इनमें पुरूष-मूर्तियाँ संतुलित आकार तथा चैड़े स्कन्ध युक्त और शक्ति-शौर्य से पूर्ण दिखाई गई हैं, जबिक नारी-मूर्तियाँ संद्यः स्नाता, सुन्दर शरीर, पतली किट, कठोर स्तन, कोमल कमनीयता, विशालाक्षी, अक्सर अपने दम्पति के साथ खड़ी या बैठी दिखाई गई है। 3

गढ़वाल की सम्पूर्ण मूर्तियाँ प्रतिमा द्रव्य की दृष्टि से चार प्रकार की पाई जाती हैं:—

- 1. पाषाण मूर्तियाँ
- 2. धातु मूर्तियाँ
- मृण मूर्तियाँ
- दारू मूर्तियाँ

कला की उत्कृष्टता एवं संख्या की दृष्टि से पाषाण मूर्तियों की संख्या अधिक हैं। यहाँ धातु मूर्तियाँ भी मिली हैं। सिक्कों और मुद्राओं पर अंकित मूर्तियाँ भी सुन्दरतम नमूने की हैं। मृण मूर्तियाँ केवल हिमालय के समतल पाद

विभाग प्रभारी, चित्रकला,रा०स्ना०महाविद्यालय, कोटद्वार

12.

दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता एवं विकास में भारत की भूमिका

डॉ. अजीत सिंह* डॉ. धर्मेद्र कुमार**

एशिया सैकड़ों वर्ष तक अस्थिरता की जद में रहा, जिसका प्रमुख कारण था, तानाशाही एवं उपनिवेशवादी शासन व्यवस्था। बाद में 20वीं शताब्दी के मध्य में स्वतंत्रा हुऐ देशों में लोकतात्रिक व्यवस्था स्थापित करना एक चुनौती बना रहा। परन्तु भारत जैसे बड़े देशों ने अपनी विदेश नीति के माध्यम से इन नवस्वतंत्र देशों को विश्व पटल पर प्रस्तुत किया। किन्तु समय परिवर्तन के साथ प्रतिस्पद्धां राष्ट्रों द्वारा किये जा रहे विरोध व धोपा हुआ संघर्ष भारत को अपनी विदेश नीति में बदलाव के लिए मजबूर किया। हालांकि भारत ने दक्षिण एशिया में शांति व स्थिरता के लिए समय-समय पर प्रभावी कार्यवाहियाँ की है। जिसमें 1971 में बंग्लादेश का उदय, 80के दशक में मालदीव में राजनीति अपहरण को विफल करना, श्रीलंका में जातिगत संघर्ष को समाप्त करने के लिए पहल, भूटान को सुरक्षा मुहिया कराना आदि प्रमुख कदम रहे है। लेकिन इन सब के बावजूद भारत को चुनौती दी जाती रही है। जिससे प्रमुख पाकिस्तान द्वारा इस्लाम व कश्मीर के मुद्दे पर भारत की आंतरिक सुरक्षा को चुनौती दी जाती रही है। वही चीन अपनी विस्तारवादी नीति एवं साम्यवाद के नाम पर भारत में नक्सलवाद को अप्रत्यक्ष मदद करता रक्ष है। इन सब के बावजूद दक्षिण एशिया सहित पूरे एशिया महाद्वीप में शांति, राजनीतिक स्थिरता

दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता एवं विकास में भारत की भूमिका 81

एवं सौहार्द पूर्व माहोल बनाने में अपनी भूमिका अदा कर रहा है। एवं पूर्वी एशिया की टाइगर अर्थव्यवस्था (मलेशिया, सिंगापुर, इण्डोनेशिया आदि) व्यवस्था के डूबने के बाद एशिया में चीन व भारत जैसे दो बड़े राष्ट्रों ने आर्थिक सुधारों के साथ एशिया में स्वयं को वैश्विक अर्थव्यवस्था के लप में प्रस्तुत किया। विशेषतः भारत ने सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में स्वयं को सतत् रूप से उन्नत बनाया है। जिसमें प्रमुख वैश्विक स्तरीय बुनियादी ढाँचा, चिकित्सा, अंतरिक्ष, रक्षा-स्राक्षा व्यवस्था उन्नति आदि के साथ आर्थिक ढाँचे से सैद्यातिक व व्यवहारिक दृष्टि से सुधार किये है। भारत एवं दक्षिण एशिया

परम्परागत रूप से, भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ पंचशील सिद्धांत, लुक ईस्ट पॉलिसी, गुजराल सिद्धांत के आधार कार्य करता रहा है। किन्तु 1990 के दशक में एक शब्द वैश्यिक स्तर पर प्रचलित हुआ जिसे आंतकवाद कहा गया। जिसका व्यवहारिक रूप भारत ने कश्मीर गारी में आंतकी गतिविधियां, संसद हमला, विमान अपहरण, 9/11 अमेरिका हमला, एवं 26/11 मृत्य हमला के रूप में सामना किया। लेकिन इन सब के बावजूद भारत अपनी विदेश नीति से सीमण पुशिया में शांति व स्थिरता के कार्य करता रहा। जिसमें निम्नलिखित प्रमुख नीतिगत प्रमुले हैं-

- नेपाल में राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था में लोकतात्रिक व्यवस्था में स्थापित करने में राजनीतिक कूटनीति एवं संवैधानिक विकास के लिए संस्थानात्मक सहायता प्रदान करना।
- ण चीन द्वारा आक्रामक रवैये के साथ बंग्लादेश, श्रीलंका एवं मालदीव में आर्थिक नियंश माध्यम से यह अस्थिरता पैदा करनी की रणनीतियाँ के विरोध क्षेत्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सार पर विरोध पर उसे विफल बनाया।
- हाल ही में (2018 में) श्रीलंका में कुछ व्यक्तिगत कारणों से पैदा हुई राजनीति अस्विरता, जिसमें सवैधानिक ढंग से चुने प्रधानमंत्री को बर्खास्त कर दिया गया। जिसके उपरान्त भारत ने हस्तक्षेप कर पुनः संवैधानिक ढंग से निर्वाचित सरकार का प्रधानमंत्री सत्तात् कराया।
- मालदीव में पिछले कुछ वर्षों से राजनीतिक विवाद हाल ही में (2018) हुए आम पुनाव से खत्म हो गये। क्योंकि चीन की विस्तारवादी नीति की समर्थक मालदीय सरकार के स्थान पर भारत की कूटनीति के हस्तक्षेप के बाद भारत सार्थक व सहस्तित्यवादी सरकारी सत्तागढ़ हुई है।
- अफगारितान में वर्षों से चली आ रही अस्थिरता व अराजकता को राजनीतिक स्थिरता, शांति, भय से मुक्त माहौल देने के लिए भारत अफगानिस्तान में खुनियादी ढांचे विकास के साथ-साथ क्रिकेट कूटनीति, खाद्य पदार्थों की उपलब्धता एवं विभिन्न क्षेत्रों प्रशिक्षण दे रहा है। जिसमें संसद भवन का निर्माण, सेतु निर्माण, बिजली उत्पादक केन्द्र एवं क्रिके
- के भारतीय खेल के मैदानों की उपलब्धता आदि प्रमुख है।

 Ø इसेल्स, पेरिस और बर्लिन के साथ भारत ने हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री गुरु

 पर प्रयोगन के केवार कार्यकार विशेषी प्रयासों को अजबत करने के लिए लिए

^{*}एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय कोटद्वार उत्तराखंड।

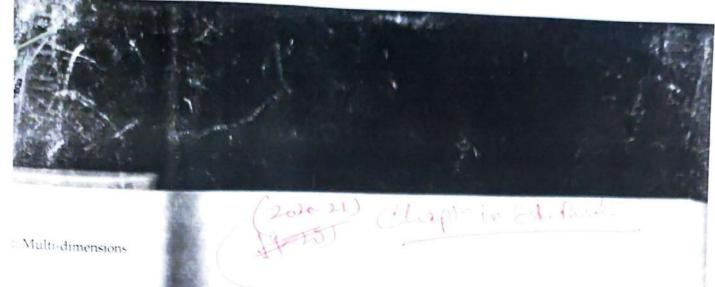
^{*} Anticolor circus securifica firma france many manifestration while many where many

Ref. No. UOU 16055

To Whom It May Concern

This is to certify that **Dr. Sunita Negi** Assistant Professor, Department of Zoology, Govt.PG College Kotdwar, Pauri Garhwal, has prepared **Four Unit** (Unit No.3, 4, 5 and 6) of B.Sc. III Physiology and Biochenistry Course Book (Physiology and Biochenistry BSCZO 301) Zoology Programme and His/her commendable work is acknowledge for Editing/Printing.

Dr. Shyam S.Kunjwal Programme Coordinators Prof.P.D.Pant Director School of Sciences



proves changes in India. 1 June 2020.

govt's Aatmnirbhar gyworld. Retrieved

ming COVID-19 | c.in. Archived from June 2020.

4 lakh PPE kits per rieved 12 June 2020.

The Role of Micro Finance in the Women Empowerment A Case Study of District Udhamsinghnagar (Uttarakhand)

Dr. Sarita Chauhan & Dr. Manoj Kumar

Abstract

Microfinance is generally considered to provide financial services for people with low incomes who do not typically have access to formal banking and other related services, including consumers and the self-employed. The current study here demonstrates the role of microfinance in job creation and how they are empowered. The employment status of beneficiaries and non-beneficiaries is fully discussed based on the field study. The study shows that the microfinance programme has raised the beneficiaries' income and that, relative to non-beneficiaries, the beneficiaries are engaged in income-generating activities. Mature group recipients are stronger than from younger group recipients in terms of their jobs and income. The employment downturn also shows that group maturity contributes significantly to employment growth.

Keywords: Self Help Group, Women Empowerment, Microfinance, Uttrakhand

Scan copy of Book Chapter, Chapter volume, proceeding paper

2021-22



ISBN No : 9789354269981

13. ROLE OF MOISTURE CONTENT IN RENDERING THE TREE COMPONENT SUSCEPTIBLE TO THE BORER (HOPLOCERAMBYX SPINICORNIS) ATTACK

Sunita Negi

Deptt. of Zoology, Govt. P.G. College. Kotdwara-246149, Uttarakhand

ABSTRACT

Moisture stress plays an important role in rendering tree susceptible to borer attack by rendering bark moisture content and allowing larvae to penetrate to the cambium. Thus in the present study moisture content was analyzed of different tree component like the Bark. sapwood and the heartwood in different categories of attacked trees ranging from mild to severe in intensity as high levels of bark moisture content prohibit beetle colonization. Moisture deficiency makes the tree more susceptible to the insect attack, enables them to support high herbivore densities and contributes to insect outbreaks.

• Keywords: Moisture - Sal tree components-infested-Hoplocerambyx spinicornis.

Introduction

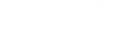
Hoplocerambyx spinicornis is a major pest of Sal, Sho.ea robusta which causes extensive damage to the Sal trees. In recent years large scale mortality of Sal has been observed in different states of India. Therefore it becomes worthwhile to carryout the investigation on the factors responsible for such outbreaks. In fact the borer attack the mature and over mature trees with low vitality at the first instance and when the population gets built up, the trees of lower girth are also attacked. Insect outbreaks occur when drought or aging reduces the ability of the tree to resist beetle attack through its oleoresin system (Rudinsky 1962; Berryman 1972, 1973). Ilsiao (1985) reported that the orientation of phytophagous insect to their host involves perception of a variety of stimuli.

Moisture stress plays an important role in tree susceptibility to borer attack due to less bark moisture content, which allows the larva to penetrate sapwood through cambium. Chararas (1969, Hanks et al (1991) concluded that resistance of eucalyptus is associated with the moisture content of the bark and drought stress may favour colonization of the beetles of *Phoracantha semipunctata* by reducing bark moisture. Moisture content was analyzed in different categories of bark, sapwood and heartwood.

Material and Methods

Samples of Bark, sapwood and heartwood of different earth classes (50 cm - 200 cm) were brought to the laboratory during the month of April-June. (1999-2003). Samples were also taken from Sal tree having different category of attack ranging from (I-VIII.) i.e. (i) Category when the crown is dead, leafless; epicormies leafless; which dust in large heap. (ii) Crown dead brown; epicormies dead, brown; wood dust in large heap. (iii) Crown dead, brown; epicormies or bark dead in upper part, alive in lower part of the trunk; were i dust in heap or more than 6cm deep





ISBN No : 9789354269981

13. ROLE OF MOISTURE CONTENT IN RENDERING THE TREE COMPONENT SUSCEPTIBLE TO THE BORER (HOPLOCERAMBYX SPINICORNIS) ATTACK

Sunita Negi

Deptt. of Zoology, Govt. P.G. College, Kotdwara-246149, Uttarakhand

ABSTRACT

Moisture stress plays an important role in rendering tree susceptible to borer attack by rendering bark moisture content and allowing larvae to penetrate to the cambium. Thus in the present study moisture content was analyzed of different tree component like the Bark. sapwood and the heartwood in different categories of attacked trees ranging from mild to severe in intensity as high levels of bark moisture content prohibit beetle colonization. Moisture deficiency makes the tree more susceptible to the insect attack, enables them to support high herbivore densities and contributes to insect outbreaks.

• Keywords: Moisture -Sal tree components-infested-Hoplocerambyx spinicornis.

100

Introduction

Hoplocerumbyx spinicornis is a major pest of Sal, Sho.ea robusta which causes extensive damage to the Sal trees. In recent years large scale mortality of Sal has been observed in different states of India. Therefore it becomes worthwhile to carryout the investigation on the factors responsible for such outbreaks. In fact the borer attack the mature and over mature trees with low vitality at the first instance and when the population gets built up, the trees of lower girth are also attacked. Insect outbreaks occur when drought or aging reduces the ability of the tree to resist beetle attack through its oleoresin system (Rudinsky 1962; Perryman 1972, 1973). Ilsiao (1985) reported that the orientation of phytophagous insect to their host involves perception of a variety of stimuli.

Moisture stress plays an important role in tree susceptibility to borer attack due to less bark moisture content, which allows the larva to penetrate sapwood through cambium. Chararas (1969, Hanks et al (1991) concluded that resistance of eucalyptus is associated with the moisture content of the bark and drought stress may favour colonization of the beetles of *Phoracantha semipunctata* by reducing bark moisture. Moisture content was analyzed in different categories of bark, sapwood and heartwood.

Material and Methods

Samples of Bark, sapwood and heartwood of different girth classes (50 cm = 200 cm) were brought to the laboratory during the month of April-Junc, (1999-2003). Samples were also taken from Sal tree having different category of attack ringing from (I-VIII,) i.e (i) Category when the crown is dead, leafless; epicormics leafless; wood dust in large heap. (ii) Crown dead brown; epicormics dead, brown; wood dust in large heap. (iii) Crown dead, brown; epicormics of bark dead in upper part, alive in lower part of the trunk, were I dust in heap or more than 6cm deep



Awareness of Environmental Issues in Our Surrounding Locality

Dr. Preeti Rani*, Ms. Anshika Bansal**

* Associate Professor, Department of Commerce.
Government Post Graduate College, Kotdwara, District Pauri Garhwal, (Uttrakhand
** Assisstant Professor, Department of Commerce.
Government Post Graduate College, New Tehri, District Tehri Garhwal, (Uttrakhand

Abstract

Environmentalproblems havecontinuously increased at the global, regional and local levels during the last few decades because environment is being abused beyond its capacity by human beings. Environmental issues are complex and interlinked, not only in themselves but also with social and economic issues. Major environmental issues include pollution, climate changes, environmental degradation and resources depletion. The primary objective of this paper is to explore the awareness of environmental issue in our surrounding locality and to find out the most decisive factors in creating environmental awareness. This paper is descriptive in nature and data has been collected through primary and secondary sources. The major finding of the study is that that people are made aware about protection and conservation of the environment.

of well med Book (2011-12)

23

बदलता पर्यावरण और हिमालग

डॉ० चंद्रप्रभा कण्डवाल *, डॉ० ममता गमत

*असिस्टेंट प्रोफेसर जना र फाल

राजकीय म्यातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार, जिला पौडी गढुवान, जानक

आज मानव ने 21वी शताब्दी में प्रवेश कर लिया है, उसने अपने परिचा का म तकनीकी विकास के आधार पर अनेकों ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किये हैं जिनकी हमा प्रकेश ने कल्यान भी नहीं की थीं।

आज मानद ने न कंदल पृथ्वी बित्क चन्द्रमा व अन्य ग्रहो पर भी पहुँच गण है जान अनुसंघान कार्य जारी हैं। इतने विकास के बावजूद आज यदि मानव के जीवन मानक चीज की कमी बढ़ती जा रही है, तो वह है— "एक स्वस्थ पर्यावरण।"

सामान्यत पर्यावरण किसी स्थान के भौतिक, जैविक, सांस्कृतिक तत्त्वों का पाण है। है समस्त पृथ्वी व जीव-जन्तुओं व वनस्पतियों को प्रभावित करता हैं।

हमारं शोध पत्र का विषय है- 'बदलता पर्यावरण और हिमालय'

यह तो हम सभी जानते हैं कि हिमालय अपनी सुन्दरता व विशालता क नियम प्रतिस्क प्रसिद्ध है। जितनी यह बात सत्य है उतनी ही यह बात भी कि हिमालय प्राची का वर्ष स्वेदनशील प्रतिस्थितिक तन्त्र हैं।

हिमालय एक पर्वत पत्र हैं जो भारतीय उपमहाद्वीप को मध्य एशिया जो निकार में अलग कर रहा है। यह पश्चिम से पूरव की ओर एक चाप की आकृति में लगान अन्य किलोमीटर में फैला है, इस चाप का उभार दक्षिण की ओर अर्थात उत्तर गाना में भार्म की ओर हैं। यह पर्वत सात देशों की सीमाओं में (पाकिस्तान, अफगानिस्तान माना उपनं मुटान, चीन और वर्मी) फैला है।

विश्व की अधिकाश पर्वत चोटियाँ हिमालय में है जैसे- एवरेरन K2 सागरमाथा बेणपूर्ण, करान्जम, घोलागिरी, लागताम, रालवितम, जुमल तथा कुमू आदि है। यहाँ पर 16 हजार से अधिक हिमानद है, जो 12 हजार किलामीटर में फैले हैं। जिसमें 72 किलापीटर बाबा स्थितिन म्लिशियर विश्व का सबसे कहा स्वीशियर है।

हिमालय की कुछ प्रमुख नदियों में सिंधू गंगा, ब्रह्मपुत्र माना तेज हैं। इसके साथ ही विभावयं प्राचीन समय से ही आध्यात्मिक चंतना का धुद केन्द्र रहा है। यह वायवेट पावर हाजश ऑफ स्प्रियुअल एनर्जी है यहाँ पर अनंक प्रसिद्ध धार्मिक पौराणिक स्थल भी है। इसके आंध ही यह अनेक दुर्लम औषवियों का भंडार है।

हिमालय क्षेत्र के कुछ भागों (ग्लेशियर, घने जगल, तीव्र ढाल आदि) को छोडकर सापूर्ण हिमालय में लगभग 35 करोड़ जनसख्या निवास करती है। इसमें से अधिकाश काशारित्या मध्य हिमालय, नदी बैसिनों व शिवालिक क्षेत्रों में निवास कर रही है। जो यहाँ के अधार नैसिनोंक सौन्दर्य व पर्यावरण से प्रमावित होकर यहाँ बस गये हैं। शुंकि यह क्षेत्र सबसे सैवेदनशील परिस्थितिक तन्त्र का क्षेत्र है जो कि आज बुरी तरह से प्रमावित हो रहा है। इक्का मुख्य कारण इस क्षेत्र की बढ़ती जनसंख्या तो है ही साथ ही यहाँ बढ़ता नगरीकरण, औद्योगिक विकास के नाम पर सड़क मार्ग व रेलमार्गों का विस्तार, नदियों पर याँचों का निर्माण जिसके फलरवरूप इस क्षेत्र में हो भूरखलन व भूरक्षण का विस्तारिकरण जगलों की अभिवृत्वित कटाई पशुपालन हेतु पूर्णतः जंगलों पर निर्मर होना जिसके कारण पशुआ द्वारा कृंगलों की नई पीधे व अनेक जड़ी—बूटी वाले छोटे पीधे व बेले तथा नवीन अकुरित वीजों भी गृकसान पहुँचता है तथा जंगलों की अन्याधुन्य कटाई व हिमालय के क्षेत्र में बढ़ते निर्माण कार्यों के कारण नैसार्गिक जल श्रीत सूख रहे हैं।

बढ़ते पर्यटन के कारण हिमालय क्षेत्र में जहाँ विकास व निर्माण कार्यों में तंजी आ रही गरी प्रदूषण व कभी नुष्ट व होने वाला कचरा जो कि सैलानियों द्वारा छोडा जाता है।

हिमालय क्षेत्र के पर्यावरण पर बुरा प्रभाव डाल रहा है। बढ़ती गदगी व कटते बनों के भारण होने वाले भूमिकटाव व बढ़ते तापमान से जहाँ एक और ग्लेशियर पीछे हट रहे हैं. बही यहाँ का मौसम चक्र भी प्रभावित हुआ हैं।

जंगलों में लगने वाली अग्नि से नष्ट होते जगलों के कारण हिमालयी वन्य जीव-जन्तु पशु-पक्षी तथा औषधीय पींघे संकट में हैं तथा कई विलुप्ती के कगार पर है मानव और विश्वीय पोंघे संकट में हैं तथा कई विलुप्ती के कगरण यहाँ अनेक प्राकृतिक आपदाओं को भी नियंत्रण मिल रहा हैं। जो कि यहाँ भी एक गभीर समस्या हो प्राकृतिक अपदाओं में जैसे-बाढ़, मुस्खलन, भूकम्प तथा अम्तीय आपदाओं के अन्तर्गत अनेक प्रकार हैं। सुरुद्धलन, भूकम्प तथा अम्तीय आपदाओं के अन्तर्गत अनेक प्रकार हैं।

हिमालयी क्षेत्र में पायी जाने वाली उच्चावयीय विभिन्तता के कारण, अन्य कृषि कार्य परम्परागत विधियों के उपयोग के कारण तथा ऊँची—नीची भूमि में तिचाई की व्यवस्था क्षर पाने के कारण, यहाँ पर अनाज का उत्पादन सीमित में होता है जिसके कारण यहाँ Charling it called (20 H- 22)

23

बदलता पर्यावरण और हिमालग

डॉ० चंद्रप्रभा कण्डवाल *, डॉ० ममता गणा

*असिस्टेंट प्रोफेसर भूगा । विकास

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार, जिला पौड़ी गढ़वान, जन्म

आज मानव ने 21वी शताब्दी में प्रवेश कर लिया है, उसने अपने परिश्रम प्राप्त ह तकनीकी विकास के आधार पर अनेकों ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किये हैं जिनकी हमारे पृष्टि ने कल्पना भी नहीं की थी।

आज मानद ने न केवल पृथ्वी बित्क चन्द्रमा व अन्य ग्रहों पर भी पहुँच गा। । गा। अनुसंघान कार्य जारी है। इतने विकास के बावजूद आज यदि मानव के जीवन ग किसी बीज की कमी बढ़ती जा रही है, तो वह है— "एक स्वस्थ पर्यावरण।"

सामान्यतः पर्यावरण किसी स्थान के भौतिक, जैविक, सांस्कृतिक तत्त्वों का गाग है। औ समस्त पृथ्वी व जीव-जन्तुओं व वनस्पतियों को प्रभावित करता हैं।

हमारे शोध पत्र का विषय है- "बदलता पर्यावरण और हिमालय".

यह तो हम सभी जानते हैं कि हिमालय अपनी सुन्दरता व विशालता क किए विश्व प्रसिद्ध है। जितनी यह बात सत्य है उतनी ही यह बात भी कि हिमालय पृथ्वी का गणी संवेदनशील पारिस्थितिक तन्त्र है।

हिमालय एक पर्वत पत्र है जो भारतीय उपमहाद्वीप को मध्य एशिया और निवान है अलग कर रहा है। यह पश्चिम से पूरव की ओर एक चाप की आकृति में नगमण अन्य किलोमीटर में फैला है, इस चाप का उभार दक्षिण की ओर अर्थात् उत्तर गाया के पैता की आर है। यह पर्वत सात देशों की सीमाओं में (पाकिस्तान, अफगानिस्तान गाया गेपान मुटान, चीन और वर्मी) फैला है।

विश्व की अधिकाश पर्वत बोटियाँ हिमालय में हैं, जैसे- एवरेरट, K2 सागरमाथा, णपूर्ण, कबनजगा, धौलागिरी, लागताग, शलवितम, जुगल तथा कुमू आदि है। यहाँ पर हजार से अधिक हिमनद हैं, जो 12 हजार किलामीटर में फैले हैं। जिसमें 72 किलोमीटर गुणा सियायिन म्लेशियर विश्व का सबसे बड़ा म्लेशियर हैं।

हिमालय की कुछ प्रमुख नदियों में सिंधु गया, ब्रह्मपुत्र माना तेज है। इसके साथ ही मिमालय प्राचीन समय से ही आध्यात्मिक चंतना का घुव केन्द्र रहा है। यह वायब्रेट पावर गाउंश ऑफ स्प्रियुअल एनर्जी है यहाँ पर अनेक प्रसिद्ध धार्मिक पौराणिक स्थल भी है। इसके साथ ही यह अनेक दर्लम औषधियों का मडार है।

हिमालय क्षेत्र के कुछ भागों (ग्लेशियर, घन जगल, तीव्र ढाल आदि) को छोडकर सण्पूर्ण हिमालय में लगभग 35 करोड जनसङ्या निवास करती है। इसमें से अधिकाश जगरांख्या मध्य हिमालय, नदी बेसिनों व शिवालिक क्षेत्रों में निवास कर रही है। जो यहाँ के अपार नैसर्गिक सौन्दर्य व पर्यावरण से प्रभावित होकर यहाँ बस गये है। चूँकि यह क्षेत्र सबसे सौयनशील परिस्थितिक तन्त्र का क्षेत्र है जो कि आज बुरी तरह से प्रभावित हो रहा है। शिका मुख्य कारण इस क्षेत्र की बढ़ती जनसङ्या तो है ही साथ ही यहाँ बढ़ता नगरीकरण, औथोगिक विकास के नाम पर सड़क मार्ग व रेलमार्गों का विस्तार, नदियों पर बाँघों का निर्माण जिसके फलस्वरूप इस क्षेत्र में हो भूरखलन व भूरक्षण का विस्तारीकरण जगलों की अगियंत्रित कटाई पशुपालन हेतु पूर्णतः जगलों पर निर्मर होना जिसके कारण पशुओं द्वारा जंगलों की नई पौधे व अनेक जडी—बूटी वाले छोट पौधे व बेलें तथा नवीन अकुरित बीजों हो मुक्सान पहुँचता है तथा जंगलों की अन्धाधुन्ध कटाई व हिमालय के क्षेत्र में बढ़ते निर्माण कार्यों के कारण नैसार्गिक जल श्रोत सूख रहे हैं।

बढ़ते पर्येटन के कारण हिमालय क्षेत्र में जहाँ विकास व निर्माण कार्यों में तेजी आ रही है गहीं प्रदूषण व कभी नष्ट व होने वाला कचरा जो कि सैलानियों द्वारा छोड़ा जाता है।

हिमालय क्षेत्र के पर्यावरण पर बुरा प्रभाव डाल रहा है। बढ़ती गंदगी व कटते वनो के भारण होने वाले भूमिकटाव व बढ़ते तापमान से जहाँ एक और ग्लेशियर पीछे हट रहे हैं, भी यहाँ का मौसम चक्र भी प्रभावित हुआ है।

जंगलों में लगने वाली अग्नि से नष्ट होते जंगलों के कारण हिमालयी वन्य जीव—जन्तु । पशु—पक्षी तथा औषधीय पौधे संकट में हैं तथा कई विलुप्ती के कमार पर है मानव और प्राविश्ण के मध्य सही समनघट्य स्थापित न हो पाने के कारण यहाँ अनेक प्राकृतिक अपदाओं को भी नियंत्रण मिल रहा है। जो कि यहाँ भी एक गंभीर समस्या हो प्राकृतिक ।पदाओं में जैसे—बाढ, भूरखलन, भूकम्प तथा अम्लीय आपदाओं के अन्तर्गत अनेक प्रकार ही दुर्धटनाएँ आदि हो जिनके लिये निम्न कारक उत्तरदायी है।

हिमालयी क्षेत्र में पायी जाने वाली उच्चावयीय विभिन्तता के कारण, अन्य कृषि कार्य परम्परागत विधियों के उपयोग के कारण तथा ऊँची—नीची भूमि में सिंवाई की व्यवस्था कर पाने के कारण, यहाँ पर अनाज का उत्पादन सीमित में होता है जिसके कारण यहाँ 2 chart in Ed Book (2021-22)



CYTOGENETICS AND PLANT BREEDING

MSCBOT-507

	Unit Written By:	Unit No.
I.	Dr. Pawan Kumar Agarwal Associate Professor	1,8 & 9
	Department of Biotechnology, G. B. Pant Institute of Engineering & Technology Pauri	
2.	Dr. Pooja Juyal Department of Botany, School of Sciences	2
	Uttarakhand Open University, Haldwani	
3.	Dr. Urmila Rana Assistant Professor Department of Botany, Govt. Degree College, Chinyalisaur, Uttarkashi	3 & 10
4.	Dr. Arun Bhatt Assistant Professor Department of Biotechnology, G. B. Pant Institute of Engineering & Technology, Pauri	4, 5 & 6
5.	Dr. Asha Assistant Professor School of Life Sciences, HNB Garhwal Central University, Srinagar	7

Chief Course Editor

Prof. A. B. Bhatt

Retired Professor, Department of Botany, HNB Garhwal Central University Srinagar

Editorial Board

Dr. Pushpesh Joshi

Assistant Professor (AC)
Department of Botany
School of Sciences,
Uttarakhand Open University, Haldwani

Dr. S.N. Ojha Assistant Professor Department of Botany School of Sciences Uttarakhand Open University, Haldwani



कियात्मक अनुसंधान सिद्धांत एवं प्रयोग



डॉ. आर. एस. चौहान, डॉ. स्वाति नेगी

क्रम भारती प्रोठ अस्विकादत शर्मा, डॉक्टर हरीरिक गौर विश्वविद्यालय साग्रह (मध्यप्रदेश) ।

 कोरोना वायरस डॉ० भारत खुशालानी, राजमगल प्रकाशन, प्रथम सरकरण ज्लाई 2020 ।

5- लॉकडाउन एक अनकही दास्ता-दिव्येन्दु राय , सर्व भाषा ट्रट नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2020।

21-22 Chapt- in िश्चर्य-कोविड-19 महामारी में प्रयुक्त : 'शब्दावली'

डॉ0 सुशील चन्द्र बहुगुणा सहायक प्रोफेसर बी०एड०विभाग राजकीय रनातकोत्तर महाविद्यालय कोटद्वार (गढवाल) उत्तराखंड ई-मेल : bahugunasushi1541@gmail.com मोबाइल : 9412970252

आपदा एक ऐसा शब्द जिसको सुनते ही मनुष्य अंदर से कांप जाता है। आपदाएं भी कुछ प्राकृतिक तथा कुछ मानव जनित एवं कुछ अन्य आपदाएं होती हैं। जिनमें प्राकृतिक आपदाएं जैसे-भूकंप, सुनामी, बाढ़, भूरखलन, चक्रवात, अकाल, ज्वालामुखी विस्फोट, हिमरखल, नवजपात, आदि आते हैं। मानव जनित आपदाएं इसके अंतर्गत सांप्रदायिक दंगे, आतंकवादी घटनाएं, आगजनी, नियोजित तोडफोड, रेल सड़क एवं वायु दुर्घटनाएं आदि आते हैं। अन्य आपदाओं में महामारी, औद्योगिक दुर्घटनाएं, यातायात दुर्घटनाएं आदि शामिल है। कुछ मनुष्य द्वारा जनित होती हैं। वर्ष 2019 में कोविड-19 भी एक ऐसी आपदा सिद्ध हुई, जो कि चाइना के बुहान शहर से निकलकर पूरे विश्व भर में फैली। वर्ष-2019 में एक खतरनाक बीमारी का नाम पुरे विश्व भर में बहुत तेजी से फैला और सूना गया, जिसका नाम COVID-19 रखा गया। इसका पुरा नाम coronavirus disease है। क्योंकि यह बीमारी 2019 में फैली थी। इसीलिए इसका पूरा नाम कोरोना वायरस डिजीज-2019 हुआ। यह बीमारी 2019 में आई इसलिए इन सबको मिलाकर मिलाकर इसका नाम COVID-19 नाम रख दिया गया। 2020 तक आते-आते यह बीमारी लगभग विश्व के सभी देशों में फैल गयी पूरी दुनिया में हाहाकार मच गया। अलग-अलग देशों ने अपने-अपने अनुसार अपने देश में लॉकडाउन किया। हमारे देश में भी

- 1
- Chakraborty, L., & Thomas, E. (2020). COVID-19 and Macroeconomic Uncertainty: Fiscal and Monetary Policy Response, NIPFP Working Paper No. 20/302.
- Chand R., Srivastava S.K. and Singh J. (2017). Changing Structure of Rural Economy of India Implications for Employment and Growth. Discussion Paper, National Institution for Transforming India, NITI Aayog, Delhi
- Dandekar, A., & Ghai, R. (2020). Reverse Migration in the Age of COVID-19. Economic and Political Weekly, Vol. 55, No. 19, page 28-31.
- Rao M. G. (2020). Borrowing room for states, sans cooperative federalism. Financial Express, June 2.
- Ratha, D. K., De, S., Kim, E. J., Plaza, S., Seshan, G. K., & Yameogo, N. 11 (2020). COVID19 crisis through a migration lens (No. 147828, pp. 1–30). The World Bank, April.
- Thomas, C., D. Varma, N. Jayaram, R. Mehrotra, R. R. Subramanum and S. Sugathan (2020), Unlocking the Urban. Reimagining Magnant Leves of Cities Post-COVID 19. Aajeevika Bureau, April

Chapt mid book (10112)

COVID-19: AN INDIAN PERSPECTIVE

Dr. Sandeep Agarwal

Assistant Professor, Commerce

S.V. Govt. PG College, Lohaghat, Uttarakhand

ABSTRACT

The emerging infection of COVID-19 was initiated from Wuhan. China, have been spread to more than 210 countries around the globe including India. The clinical symptoms of COVID 19 are very similar to other respiratory vicinity The number of laboratory-confirmed cases and associated deaths are increasing regularly in various parts of the World The LOVID 19 is an emerging viral infection responsible for pandemics, fortunately, the mortality of COVID 19 is low as compared with other coronavirus like SARS and MERS COVID-19 influenced the large segments of the world population, which led to a public health emergency. of international concern, putting all health organizations on high alert. The present study includes introduction of covid 19, virus and its emergence, global epideminlogy. clinical symptom, diagnosis, treatment and prevention of covid 19 with special reference to India

Keywords: Virus, SARS-CoV, Global Epidemiology, JCMR

Introduction

Our health and wealth are highly influenced by warnests emerging viral diseases. The viral outbreaks like Crimean Congentermorehage. Fever. Ebol J., Lassa fever, Marburg write. SARS, CoV, MERS-CoV, Nipale Zika virus. Rift Valley fever of us sort C1V-III-19 are some evidences of our disaster. Some of these outbreaks are highly influenced global life. WER's declared them as a public health emergency of international cone.

Chaptin Ed Bak (20

(2021-22)

A Study on GST (Goods and Services Tax) and its Impact on Automobile Industry in India

Dr. Richa Jain

Assistant Professor of Commerce
Dr. P.D.B.H.Govt P.G.College, Kotdwar,
Uttarakhand, Akshatjain2610@Gmail.Com.

A tract

GST or Products and Administrations Assess is considered to be a diversion changer in Economy. India has postured a signal of trust with driven development targets, backed bunch of key endeavours such as the Make in India and Computerized India campaigns. Goods and Administrations Assess (GST) is another such undertaking that's anticipated to supply the much required stimulant for financial development in India by changing the existing base of indirect tax assessment towards the free flow of products and administrations. This term pair uses primary sources of information such as study and investigation of the information conceted. The secondary sources such as books, diaries and articles are also referred for this in paire about. A add up to of 305 responses were collected within the study. The reactions were mined. The overview had found that raising petroleum costs may be a boundary to centre late on individuals, government might likely provide alleviation considering the raising costs. GST particularly in car industry had proven to be exceptionally profit.

Keywords: GST, Taxation, Automobile, Industry and Petroleum.

Introduction

GST too known as Products and Administrations Assess. More than 150 countries have in the le-mented GST so distant. Merchandise and Benefit Charge or GST because it is known may be an amusement changer in Indian Economy. (Narayanan G. and Vashisht) In the midst of financial emergency over the globe, India has postured a signal of trust with driven development targets, bolstered by a bunch of strategic undertakings such as the Make in India and Computerized India campaigns(Raj). The Goods and Services Assess (GST) is another such undertaking that's anticipated to supply the much needed stimulant for financial development in India by changing the existing base of roundabout taxation towards the free stream of merchandise and administrations. GST is additionally anticipated to kill the cascading effect of charges. India is anticipated to play an imperative part within the world economy within the years to come. The desire of GST being presented is tall not as it were inside the nation, but also inside neighbouring nations and created economies of the world.

In spite of these and other execution challenges, the GST is anticipated by numerous to deliver considerable benefits over time. Most strikingly, Back Serve Jaitley has estimated that

गढ़वाल चित्रकला आर चित्रकार मोलाराम

असिस्टेंट प्रोफेसर, विभिन्न के राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय केट्या कि

हिमालय के ऊँचे शिखरों के मध्य उत्तराखण्ड राज्य में स्थित छोटी-सी गढ़वाल रियासत की धार्मिक कि आत्यधिक महिमा रही है। इस हिमाच्छादित पर्वतों वाले क्षेत्र से यमनोत्री तथा भागीरथी के पावन स्त्रोत प्रवालिक आर इसी क्षेत्र में बद्रीनाथ तथा केदारनाथ के तीर्थधाम स्थित हैं। असंख्य पर्यटक प्रत्येक वर्ष इन तीर्थधाम अत्यालिक और इसी क्षेत्र में बद्रीनाथ तथा केदारनाथ के तीर्थधाम कि आत्म विशुद्धि करने के लिए श्रद्धा और भिक्त से स्तरक से लगाने और निर्मल सरित-प्रवाहों से स्नान कर आत्म विशुद्धि करने के लिए श्रद्धा और भिक्त से कि स्वालिक से लगाने और निर्मल सरित-प्रवाहों पर पैदल चढ़ते दिखाई पढ़ते हैं।

गढ़वाल में विधिवत चित्रकला का इतिहास गढ़वाल के राजा पृथ्वीपित शाह सन् 1640-1664 से जात हैंगी उसके शासन काल में मुगल दरबार से सुलेमान शिकोह के साथ सन् 1658 में मुगल चित्रशाला के कलक शयामदास और उसका पुत्र हरदास आये थे। स्पष्टत: हरदास के जीवन काल में पहाड़ी शैली की एक शाखा के का गढ़वाल शैली का सूत्रपात हुआ लगता है। अर्थात् लगभग 17वीं शती के अन्तिम दशक में। इस काल-निर्धास में विध्य को आधार माना जा रहा है कि शैली विशेष का आरम्भ किसी प्रदेश में विभिन्न कला प्रभावों के फलस्वर ह दीर्घ विकास का परिणाम होता है। राजपूत चित्रकला की भांति, पहाड़ी चित्र-शैलियों का आधार तलतः लोक कल रही हैं। यद्यपि कलानुरागी पहाड़ी राजाओं ने उन्हें अधिक प्रश्रय दिया। इसके विपरीत मुगल कला शैली बल दरबारी कला थी। अतएव एक परिनिष्ठित चित्रशैली के रूप में गढ़वाल शैली का आरम्भ अधिकांशतः सने चित्रकला एवं कांगडा-गुलेर जैसी पहाड़ी शैलियों तथा अंशतः मुगल शैली के समन्वय के रूप में 1700 ई वे आस-पास हुआ।2

महाराज फतेहशाह (1664-1716 ई0) के समय के बने दो चित्रों का महत्व इसमें नहीं है कि वे गढ़वाल विक्री के प्रथम चित्र है, अपितु इसमें है कि वे गढ़वाल चित्रशैली में चित्रकला की प्रथमत: ज्ञात उपलब्धियाँ हैं।

इस सम्बन्ध में श्री वाचस्पति गैरोला का कथन सर्वथा संगत है कि -

'' उनको न तो किसी पूर्व-परम्परा का विकसित रूप कहा जा सकता है और न ही उनको गढ़वाल शैली बे भावी समृद्धि का आधार माना जा सकता है।"3

गोर्वधन धारी कृष्ण 1829 ई0 में कांगडा के राजा अनिरुद्ध चन्द को अपनी दो बहनों के साथ सतल पार्क गढ़वाल आना पड़ा। राज्य सत्ता को त्यागकर, कुल मर्यादा की रक्षार्थ दोनों राजकुमारियाँ हरिद्वार में गढ़वाल गोर्क व्याही गई। 4 सम्भव है, दहेज में बहुत से चित्र भी दिए गए हों और कांगडा के कुछ कलाकार भी यहाँ पहुँव से संसारचन्द के पराभव के उपरान्त आश्रय की खोज में कलाकारों का यहाँ बिखराव स्वाभाविक था।

(2014-22) Ch. in Broke

युक्त सरवा - 98 में 104

17.

किसानों की आत्महत्याओं से सुलगता भारत समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

डॉ. अजीत सिंह* कुमारी रशिम**

भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि और किसान हैं। किसानों की उन्नित से ही देश की उन्नित संभव है। किसान पूरे देश का अन्नदाता है। वैश्वीकरण के दौर में उसकी भी स्थिति में सुधार होगा ऐसा लगा था। लेकिन आज के बाजारवादी दौर में वह हाशिए पर चला गया है। उसकी फसल सामाजिक समस्या बन गई है। उसे अपनी फसल का उचित मूल्य नहीं मिल रहा है। कर्ज की समस्या से वह घिरा हुआ है। खाद, बिजली और पानी की समस्याएं उसे परेशान कर रही हैं। उसका कई आयामों पर शोषण हो रहा है। आजादी के पहले शोषकों कों किसान समझ सकता था। लेकिन आज उसका चालाकी से शोषण किया जा रहा है। इससे शोषकों को पहचानना भी मुश्किल हुआ है।

आजादी के इतने साल बीत जाने पर भी किसानों को न्याय नहीं मिल पा रहा है। वह समस्याओं के मकड़ी जाल में घिरा हुआ है। कभी प्राकृतिक आपदाएं तो कभी सरकारी नीतियों से वह परेशान हो रहा है। उसकी फसल को उचित मूल्य न मिलना भी आज एक गंभीर समस्या हो चुकी है। अच्छे बीजों की उपलब्धता और वितरण की असमानता की समस्या ने भी किसानों का जीना मुश्किल किया है। किसानों के लिए सारे हालात ऐसे हैं। कि जिन्दा कैसे रहा जाए इस स्थिति में वह फांसी के फंदे को अपनाकर आत्महत्या कर रहा है। अब तक तीन लाख से

अधिक किसानों ने वह भी विशेषकर व

भारत एक कृषि और उससे जुड़े लो सरकार की घोषणाप हैं। किसानों के संबं बनाई गई उसका ! विधियों की जानका होने के कारण किस अशिक्षा, गरीबी, भुड़ आधी फीसदी से ज्य की बात करें तो स्वर

जमीदार के जम बनाया जाता था कोः दिन बाद भी किसान के लिए कानून का 1 से होने वाले शोषण किसानों के मन में दि किसान पहलवान कह आगे कोई रहेगा। इन

किसानों की समन् सामने रखा है। उपन्य इसमें किसान जीवन न लघु हो लेकिन यह उ है यह केवल अवध व

भारत का किसान दे देता है। किसानों व अधिनियमों को कानूनं नई प्रणाली और प्रशार साह्कार के माध्यम से से भी।

किसान जीवन को की जिन्दगी पर बहुत

^{*} सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार, उत्तराखड़।

^{**}समाजशास्त्र विभाग, बी.एस.एम. (पी.जी.) कॉलेज, रूढ़की।

Chapter - 10 A Brief Comparative Study of New Education Policy 2020 with Existing Policy 19 Purabi Bhattacharyya	79
Chapter - 11 New Education Policy 2020 (NEP 2020) Impact on School Education Policy 2020 (NEP 2	86 ation
Chapter - 12 Analytical Study of Higher Education in the Context of New Education Policy Dr. Nitu Maan	94
Chapter - 13 Education Policy - 2020 Impact on School Education Alka Tomar	102
Chapter - 14 Right to Education and NEP-2020 Dr. Bharti	112
Chapter - 15 National Education Policy -2020: Holistic and Multidisciplinary Approaches Ranjanabala Gohil	116
Chapter - 16 Education Policies-A Comparative Analysis of National Education Polices of Indian & C Dr. Seema Kumari	128 hallenges
Chapter - 17 New Education Policy In Higher Education Dr. Pritam Kumari	152
Chapter - 18 Perspective and Prospects of New Education Policy 2020 for Schools and Higher Education in India Dr. Karambir Singh	174
Chapter - 19 The Future of India's Higher Education System with New Education Police Dr. Ritu Jaglan	188
Chapter - 20 Impact of New Indian National Education Policy-2020 on Higher Edu Dr. Virendra Singh	205 cation

ISBN: 978-81-954496-0-6

भारत में कम्पनी चित्रशैली का प्रादुर्भाव

hort. In car

डॉ० विनोद सिंह विभाग प्रभारी चित्रकला रा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार

कम्पनी चित्रशैली वस्तुत: अभी तक बहुत कम लोगों के ध्यान का केन्द्र रही है। प्रारम्भ में इस चित्रशैली को उचित प्रचार व प्रसार न मिल सका। अनेक प्रयासों के फलस्वरुप यह शैली प्रकाश में आ सकी। 18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य पतन की ओर चल पड़ा था, मुगलों के दरबार में जो चित्रकार कार्यरत थे वे निराश्रित हो चले थे। इस समय भारत में विदेशी तत्वों का प्रवेश होने के कारण भारतीय संस्कृति भी प्रभावित होने लगी थी। भारतीय चित्रकला अपनी गुणवत्ता खोने लगी थी तथा मुगल चित्रकारों में समर्पण की भावना के उत्तरोत्तर कम होने के कारण चित्रांकन का स्तर कम हो गया था। अंग्रेजों के कला संस्कृति पर होने वाले प्रहार से भारतीय चित्रकला की आत्मा निष्प्राण हो गई थी तथा चित्र शैलियों का विकास अवरुद्ध हो गया था।

मुगल, राजस्थानी व पहाड़ी चित्र शैलियों के विकास क्रम में 1875 ईं0 के आस-पास ऐसा प्रतीत होने लगा था कि चित्रकारों का रूझान चित्रोपम तत्वों के नन्दितक संयोजक से हटकर स्वाभाविकता व फोटोग्राफीनुमा अंकन की ओर हो गया था। जयपुर में महाराज रामिसंह के समय फोटोखाना की स्थापना के बाद से जयपुरी चित्रों में छाया-प्रकाश से युक्त अंकन के साथ यह शैली अधिक प्रचिलत हो गई और वे अन्य केन्द्रों पर जहाँ-जहाँ चित्रण हेतु गये, वहाँ-वहाँ अपने साथ यथार्थवादी शैली को ले गये। इसके अतिरिक्त ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अंग्रेज अधिकारियों द्वारा लाये गये जल रंगो व तैल चित्रों की यथार्थवादी शैली ने भी चित्रकारों को आकर्षित किया।

नादिरशाह व अहमदशाह अब्दाली के हमलों से मुगलिया सल्तनत कमजोर पड़ गई थी। इसके बाद इंग्लैण्ड, पुर्तगाल, डच देशों के व्यापारिक प्रतिष्ठान भारत से कच्चे माल की प्राप्त के लिये मुगलों तथा देशी रियासतों से रियायतें प्राप्त करने में लगे हुये थे। इनकी परम्परा होड़ में इंग्लैण्ड की ईस्ट इण्डिया कम्पनी सबसे आगे निकल गई। असीम धन व उसकी अपनी सुरक्षा-सैनिकों की टुकड़ियों ने कम्पनी के अधिकारियों के मस्तिष्क में राजनैतिक शक्ति केन्द्रित करने व शासक होने की लालसा पैदा कर दी।

कम्पनी का देश की राजनैतिक शक्ति पर कब्जा हो गया था, जो 1857 ई0 तक निरन्तर विकसित होता रहा तथा जिसकी प्रतिक्रिया 1857 की क्रान्ति में फलीभूत हुई। इंग्लैण्ड की सीधी शासन व्यवस्था भारत पर लाद दी गई और देश पूर्णतया विदेशी सत्ता का गुलाम हो गया। इंग्लैण्ड के दो भूदृश्य चित्रकार **श्वॉमस डेनियल** व टिली कैटिल- 1826 ई0 से ही अनेक वर्षों तक भारत भ्रमण करते रहे। उन्होंने भारतीय विषयों का ब्रिटिश शैली में चित्रण किया। इनके चित्रण ने तत्कालीन भारतीय परम्परावादी कलाकारों को भी प्रभावित किया। कम्पनी व अंग्रेजी सत्ता के सहयोग से पली-बढ़ी यह चित्र-शैली 'कम्पनी शैली' कहलाई। ²

इस शैली का प्रादुर्भाव सर्वप्रथम 18वीं शताब्दी के आरम्भ में मद्रास (चैन्नई) प्रेसीडेन्सी में देखने को मिला जहाँ से यह उत्तर व पश्चिम दिशा में बढ़ती गई। 20वीं शताब्दी के आरम्भ तक यह शैली अपनी उन्नति के सवर्ण शिखर पर

Based on Latest

Auditing and Corporate Governance



OVERNANCE IN THE PROPERTY OF T

DR. ANSHIKA BANSAL DR. R.C. BHATIA

SHITANICHAND & SONS

INCOME



LAW AND PLATE (Assessment Year 2021-22)

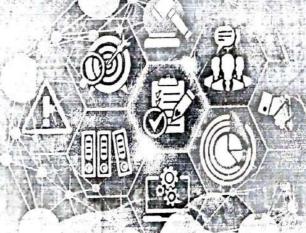
Dr. Preeti Rani Mittal Dr. Anshika Bansal



SULTAN CHAND & SONS

Based on Lates BCS Pattern

GOIGING CELLS



CEOVERNANCE PROMISE PR

DR. ANSHIKA BANSAL DR. R.C. BHATIA

SULTAN CHAND & SONS

INCOME



LAW AND PLACTICE

(Assessment Year 2021-22)

▶ Dr. Preeti Rani Mittal ▶ Dr. Anshika Bansal



SULTAN CHAND & SONS

क्रियात्मक अनुसंधान

सिद्धान्त एवं प्रयोग

डॉ. आर. एस. चौहान

परीक्षा नियंत्रक श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, बादशाहीथौल टिहरी गढवाल (उत्तराखण्ड) एम.ए. अंग्रेजी, एम.ए. इतिहास, एम.एड.,एल.एल.बी. यू.जी.सी. नेट-शिक्षा शास्त्र, डी.फिल.-शिक्षा शास्त्र

डॉ. स्वाति नेगी

एसोसिएट प्रोफसर-बी.एड. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वान गढवाल (उत्तराखण्ड) एम.एस.सी., एम.एड. यू जी.सी.नेट-शिक्षा शास्त्र, डी.फिल-शिक्षा शास्त्र

Party Live



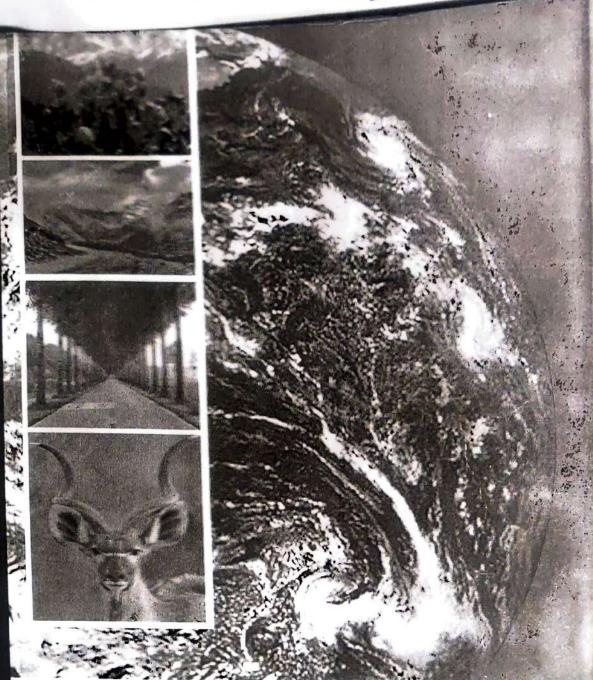
नई दिल्ली-1100₅-

Smita 2 Badola 2021-22 1:001C-chap

ENVIRONMEN

issues and mitigation strategies

DR. SWATI NEGI DR. SMITA BADOLA BUDAKOTI



ENVIRONMENT

Issues and Mitigation Strategies



Dr. Swati Negi Dr. Smita Badola Budakoti

Environment: Issues and Mitigation Strategies

Dr. Swati Negi, Dr. Smita Badola Budakoti

Published by Bookone Graphics

(Publishers & Distributors)
D-14, Nanhey Park, Uttam Naga:
New Dethi — 110059
Contact: 8802485233
Email: bookonegraphics@gmail.com
WebSite: bookonegraphics.com

© Editors

Edition: 2021

ISBN: 978-81-954398-0-5

Price: 1350/-

(All rights reserved. No part of this book can be reproduced in any manner or by any means without prior permission of the Publisher.)

PRINTED IN INDIA

Published by Bookone Graphics, Delhi Laser typeset at Book One Graphics Delhi and Printed at it S. Printer Delhi

About The Webinar

An international webinar was organized on 29th July, 2020 by Department of Zoology and Department of B.Ed., Dr. PDBH Government Post Graduate College, Kotdwara, District Pauri Garliwal, Uttarakhand state in collaboration with Traffic-India. The webinar primarily focussed the issues concerning on biodiversity and sustainability through effective environmental education. This proceedings volume contains the majority of the contributions presented dating the International webinar on "Biodiversity Conservation through Environmental Education for Sustainable Development" held at Kotdwar, on World Tiger day, 29th July, 2020. The webinar was sponsored jointly by Higher Education Department of Uttarakhand state and Traffic India. The purpose of the webinar was to provide a forum for researchers, academician and policy makers to address critical issues on large scale anthropogenic activities that are unsustainable and could impact ecosystem function, biodiversity and the well-being of human populations. Other aspects of the webmar were to promote environmental education by offering guidelines in ecotourism to raise awareness of the role we must play in preserving our world

The scale of the webinar was such way that the exchange of ideas, techniques, and approaches is fostered encouraging integration and enabling future collaboration among participants. The webinar brought together 10 distinguished speakers from different countries whose interests pertain to biodiversity conservation and environmental problems. An overwhelming response was received even during pandemic times to participate in the webinar not only from regional and state-level university professor and faculty members, but also from over researchers and entrepreneurs all over the nation. More than 1200 academicians, scholars and researches from over 18 states, of India and nearly 6 countries participated in the webinar. In total,

Contents

		v
4	agout The Webinat	×v
.4	Apout the Book	vor
.\	AND The Editors	ui.
	char the Editors	
4	chace	XXIII
V	Covid-19: Society and Environment: A Lesson for Future	
	In Smita Badola, Dr. Tanu Mittal	1
2	Effective Environment Education	2.2
	Dr Uma Sinha	
3.		
	Dr Swati Negi	3 /
	Ways to Conserve Biodiversity with Sustainable	
4.	Development of State	
	Dr Sandhya Vaid	50
5.	Effective Environmental Education Through Environmental Awareness	
	1	*
	Dr. Deepti Gaur	
6.	Since oddoreda. Environmental Education as a Key	
	Strand for Sustainable Development	
	Ms Urna Bhattacharjee	64
7.	Biodiversity Conservation through Indigenous Knowledge	i e
	System in Uttarakhand	
	Dr Rupalı Bahl	73

JOH-37 (BOOK)



Contemporary India and Education

According to New Syllabus Prescribed by Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University, Srinagar

Authors

Prof. Suresh Bhatnagar

H.O.D Education Dapartment (Retired) D.A.V. College, Dehradun, (Uttrakhand)

Dr. Amit Kumar Jaiswal

Professor: B.Ed. Faculty,
Government Post Graduate College
Kotdwar, Garhwal, Uttarakhand

Exclusively Distributed by

R. LALL BOOK DEPOT

(An ISO 9001-2008 Certified Company)
Near Govt. Inter College, Begum Bridge Road
Meerut-250001 (U.P.)

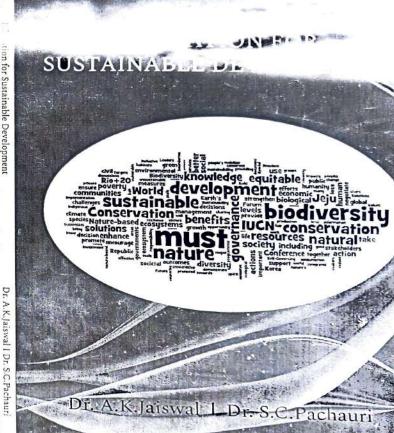
Dr Amit Kumar Jaiswal is Associate Professor at B Ed Faculty, at Dr. PDBH Government Post Graduate College, Kotdwar & College for Teacher Education, (Garhwal), Uttarakhand, India. He is excelled educational carrier having M.Ed. & Doctoral degree in Education from University of Allahabad. He has over 20 years' teaching. training and administrative experience in Higher Education. He has ed 15 research papers and presented 75 research papers in National and International conferences in India and abroad. He has also conducted various workshops for teachers, students and administrators. The topics covered a wide area viz., Leadership and Capacity Building. Value Education, Peace Education, Career Guidance and Counselling, Research Methods, E- Learning, Self Defense Techniques, Continuous and comprehensive Evaluation & classroom management skills. He has also authored several chapters in different books.

Prof. Suresh Chandra Pachauri is working with College of Education, Shri Guru Ram Rai University, Dehradun, Uttarakhand, India. He is a postgraduate in Economics, Sociology and Hindi. He is also a postgraduate in Education (M.Ed) from Regional Institute of Education, Ajmer, Rajasthan.He has doctorate degree in Education from Dr. B.R. Ambedkar University, Agra. He is a chief editor of two Journals- an International Journal of Education and Allied Sciences. and Education Vision - A Journal of Education . He has written 8 books and published more than 45 research papers and articles in National and International Journals . He has presented more than 35 papers in various national and international seminars, workshops and conferences in India. Presently he is secretary of Council for Teacher Education Foundation-Uttarakhand Chapter.He has Supervised more than 45 M.Ed. dissertations. Under his supervision and guidance 8 - Ph.D acholars have been awarded.





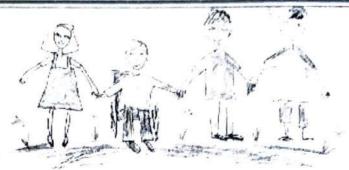
Dr. S.C.Pachauri



Rupees

2021.22 (Book)





Fundamentals of Inclusive Education

IInd Semester

(B.Ed) Two Years CBCS Program

As per new syllabus prescribed by Deen Dayal Upadhyaya, Gorakhpur University, Gorakhpur (U.P.)

Authors

Dr. Amit Kumar Rai

M.A. (Ancient History, Hindi), M.Ed., B.Lib.isc.
PhD. (Ancient History), NET (Education), Gold Medalist

Lecturer: Department of Education, Rajadevi Mahila, P.G. College
Sallahpur, Bhatni, Deoria (U.P.),
Deen Dayal Upadhyaya University, Gorakhpur

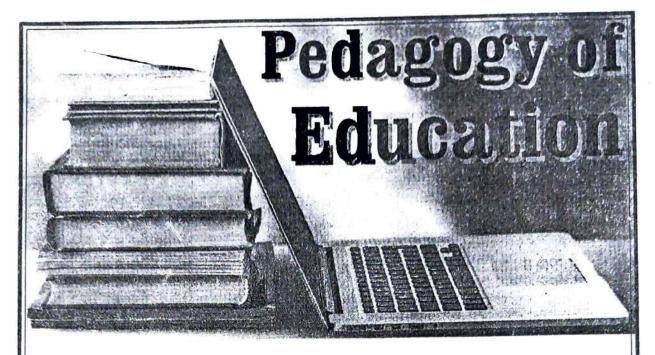
Dr. Amit Kumar Jaiswal

Professor: B.Ed. Faculty,
Government Post Graduate College
Kotdwar, Garhwal, Uttarakhand

lacksquare Exclusively Distributed by lacksquare

R. LALL BOOK DEPOT

(An ISO 9001-2008 Certified Company)
Near Govt. Inter College, Begum Bridge Road
Meerut-250001 (U.P.)



B.A. 3rd Year

According to the Latest Syllabus of H.P.U. Shimla B.A. (Regular) with Education

Course Code: EDN 301

Author

Dr. Amit Kumar Jaiswal

Associate Professor

B.Ed. Faculty, Government Post Graduate College Kotdwar, Garhwal, Uttarakhand



Exclusively Distributed by

R. LALL BOOK DEPOT

(An ISO 9001-2008 Certified Company)
Near Govt. Inter College, Begum Bridge Road
Meerut-250001 (U.P.)

204-22 BOOK

समावेशी शिक्षा के मूल सिद्धान्त (Fundamentals of Inclusive Education)



(B.Ed) Two Years CBCS Program

बी॰एड॰ के दो-वर्षीय पाठ्यक्रम के अनुरूप दीन दयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय के लिए पाठ्यपुस्तक

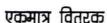
लेखकगण

डॉ० अमित कुमार राय

एम॰ए॰ (प्राचीन इतिहास, हिन्दी), एम॰एड॰, बी॰लिब॰आई॰एस॰सी॰ पी-एच॰डी॰ (प्राचीन इतिहास), नेट (शिक्षा), गोल्ड मेडलिस्ट प्रवक्ता : शिक्षण-प्रशिक्षण विभाग, राजा देवी महिला पी॰जी॰ कॉलेज सल्लहपुर, भटनी-देवरिया (उत्तर प्रदेश) दीन दयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ॰ अमित कुमार जायसवाल SPECIMEN

प्रोफेसर: बी॰एड॰ विभाग राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय, कोटद्वार (गढ़वाल), उत्तराखंड with Best Compliments From AUTHORS & PUBLISHER



आर. लाल बुक डिपो

(An ISO 9001-2008 Certified Company) निकट राजकीय इण्टर कॉलेज, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ-250001

Jest- 54 (1200K)

LEARNING AND TEACHING

Dr Amit Kumar Jaiswal



Publishing Division: Bhagwati Publishers Distributors
C-8/77-B, Keshav Puram, (Lawrence Road),
Near Keshav Puram Metro Station, NEW DELHI-110035
Tel.: 011-43528194, 9711924754.
Mobile & WhatsApp: 9911151534
E-mail: bhagwatipublishersdelhi@gmail.com
dkjain95@gmail.com
Website: www.bhagwatipublishers.com

204-22 (Brok)

INCLUSIVE EDUCATION

Dr. Amit Kumar Jaiswal



Nipun Prakashan

Publishing Division: Bhagwati Publishers Distributors
C-8/77-B, Keshav Puram, (Lawrence Road),
Near Keshav Puram Metro Station, NEW DELHI-110035
Tel.: 011-43598194, 9711924754.
Mobile & WhatsApp: 9911151534
E-mail: bhagwatipublishersdelhi@gmail.com
dkjaln95@gmail.com
Website: www.bhagwatipublishers.com

2024-92 (Bust

Contemporary Indian Education System

Dr. Amit Kumar Jaiswal



DELHI (INDIA)

IMPACT OF G.S.T. ON INDIAN ECONOMY

Dr. Pulkit Agarwal

Head of Department,
Faculty of Commerce
Mohammad Ali Jauhar University,
Rampur (U.P.)

Dr. Kiran Kumar Pant

FALL C.

Assistant Professor, Faculty of Commerce P.N.G. Government P.G. College, Nainital, Uttarakhand

Dr. Richa Jain

Assistant Professor Faculty of Commerce Dr. P.D.B.H.Govt. P.G. College, Kotdwar, Uttarakhand

VANI PUBLICATIONS

2011-22 (bisk)

महाकवि कालिदास के ग्रंथों में शिक्षा

डॉ० अमित कुमार जायसवाल सह आचार्य, शिक्षा संकाय, डॉ. पीताम्बर दत्त बडथ्वाल हिमालयन राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार, (गढ़वाल), उत्तराखंड



ईस्टर्न **बुक** लिंकर्स दिल्ली :: (भारत)